णमोकार-मन्त्र-कल्प

(णमोकार मन्त्र सम्बन्धी स्तोत्र, यन्त्र, मन्त्र आदि)

सम्पादक
भारतगौरव, धर्मनेता, विद्यालंकार
आचार्यरत्न १०८ श्री देशभूषणजी महाराज

अनुवादक
बलभद्र जैन शास्त्री
(भूतपूर्व संपादक दैनिक संदेश तथा साप्ताहिक जैन सन्देश)

प्रकाशक
जैन मित्र मण्डल
धर्मपुरा, दिल्ली

प्रकाशक -
जैन मित्र मण्डल
धर्मपुरा, दिल्ली ६
ट्रैक्ट नं० १५८

❀ प्रथम संस्करण ❀

फाल्गुणी अष्टाह्निका वीर नि० सं० २४९०

मुद्रक -
परमानन्द आर्ट प्रेस
७००५ गली टकी वाली
पहाड़ी धीरज देहली।

आद्य-वक्तव्य

'णमोकार मन्त्र कल्प' पाठकों के हाथों में देते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। प्रसन्नता इसलिए, क्योंकि इसके द्वारा णमोकार मन्त्र का कुछ प्रचार प्रसार करने का स्वर्ण अवसर उपलब्ध हुआ है। जैन शास्त्रों में णमोकार मन्त्र को अनादि निधन मन्त्र बताया है। यह मन्त्र किसी के द्वारा निर्मित नहीं हुआ, बल्कि यह अनादिकाल से इसी रूप में चला आ रहा है। अनादिकाल से जो तीर्थंकर और अर्हन्त होकर सिद्ध भगवान् बने हैं, वे इसी मन्त्र के प्रताप से और आगामी अनन्तकाल में जो तीर्थङ्कर और अर्हन्त बनकर सिद्ध होंगे वे भी इसी महामन्त्र की बदौलत। इसीलिये शास्त्रों में इसके अचिन्त्य प्रभाव और माहात्म्य की अनेक कथायें मिलती हैं। इसमें ऐसी शक्ति निहित है कि इसके प्रभाव से समस्त पाप और कर्म नष्ट हो जाते हैं। वास्तव में यह महामन्त्र समस्त जिन-वाणी का सार है, संसार के समस्त मन्त्रों की उत्पत्ति इसी महामन्त्र से हुई है। सारा मन्त्र शास्त्र इसी महामन्त्र से निष्पन्न हुआ है। मन्त्रों की सम्पूर्ण शक्ति इस महामन्त्र में गर्भित है।

इस महामन्त्र की महिमा गाते हुए शास्त्रों में कहा है कि यह मन्त्र भुक्ति और मुक्ति दोनों देता है अर्थात् इस मन्त्र के जाप से पुण्यबन्ध होता है और कर्मों की निर्जरा भी होती है। फलतः इससे संसार की समृद्धि भी पूर्ण होती है और अन्त में इससे संसार का भी विनाश हो जाता है। श्रद्धापूर्वक इस मन्त्र के जाप से संसार की सभी सम्पदायें मिलती हैं, दुःखों का नाश होता है, अष्टसिद्धि और नवनिधियां की प्राप्ति होती है, और मनुष्य की चिन्ता आधि और व्याधि दूर भाग जाता है।

इस मन्त्र के माहात्म्य के सम्बन्ध में यहां तक कहा गया है कि यह चौदह पूर्वों का सार है, सम्पूर्ण विद्याओं की आद्यविद्या है, सम्पूर्ण सिद्धियों का जन्म स्थान है। यदि मृत्यु के समय शुद्ध मन से प्राणी इस मन्त्र का ध्यान करे तो वह निश्चय ही अच्छी गति प्राप्त करता है।

इस महामन्त्र का माहात्म्य प्राचीनकाल से ही गाया जाता है—

एसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥

इसका अर्थ यह है—यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला सब मंगलों में प्रथम मंगल है।

णमोकार मंत्र के इस माहात्म्य को जैन समाज का बच्चा बच्चा जानता है और मूल णमोकार मंत्र पढ़ते हुए उसका माहात्म्य भी पढ़ता है। आचार्य वीरसेन ने धवला ग्रंथ में इस मंत्र की मंगलाचरण के रूप में बड़ी सुंदर व्याख्या की है।

णमोकार मंत्र का ध्यान

णमोकार मंत्र में कुल पांच पद और पैंतीस अक्षर हैं। किन्तु इसके संक्षेपीकरण से कई अन्य मंत्र भी बन जाते हैं जिनका प्रभाव पैंतीस अक्षरात्मक णमोकार मंत्र के समान ही होता है। वे मंत्र इस प्रकार हैं -

पैंतीस अक्षरों का मंत्र—णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

सोलह अक्षरों का मंत्र—अरिहंत सिद्ध आइरिय उवज्झाय साहू अथवा अर्हत्सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

छः अक्षरों का मंत्र—अरिहंत सिद्ध, ॐ नमः सिद्धेभ्यः, नमोऽर्हत्सिद्धेभ्यः।

पांच अक्षरों का मंत्र—अ सि आ उ सा, णमो सिद्धाणं।

चार अक्षर का मंत्र—अरिहंत, अ सि साहू।

दो अक्षर का मंत्र—ॐ ह्रीं, सिद्ध, असि।

एक अक्षर का मंत्र—ॐ, आ, म्, अ, सि।

आभार प्रदर्शन

यह पुस्तक संग्रह ग्रंथ है। इसकी एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति श्रीमान् ला० मनोहरलाल जी जौहरी पहाड़ी धीरज, दिल्ली ने पूज्य आचार्य १०८ श्री देशभूषण जी महाराज के अवलोकनार्थ दी थी। महाराज ने वह प्रति मुझे भी दिखाई। मुझे यह अत्यन्त पसन्द आई। मैंने आचार्य महाराज से इसका अनुवाद करके प्रकाशन की आज्ञा मांगी। आचार्य श्री ने इसे जनोपयोगी समझकर स्वीकृति दी। फलतः मैंने परिश्रम पूर्वक इसका अनुवाद सम्पादन आदि किया तथा कुछ आवश्यक स्तोत्र तथा आवश्यक सूचनायें इसमें और बढ़ा दीं जो वर्तमान रूप में पाठकों के समक्ष है। ला० मनोहरलाल जी ने अन्य आवश्यक ग्रंथ आदि देकर मेरे कार्य में काफी सहयोग प्रदान किया। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी हूं।

ग्रथ के अनुवाद और सशोधन काय म मेरे मित्र प० मदनलाल जी 'सुधाकर' शास्त्री ने मुझे पूरा सहयोग दिया यह सहयोग मेरे लिए बडा अमूल्य और उपयोगी रहा, अत मै माननीय सुधाकर जी का भी कृतज्ञ हूँ।

यह सब काय पूज्य आचाय महाराज के आदेश स और उनके निर्देशन मे हुआ है। आचाय श्री सरस्वती के अनन्य उपासक हैं। साहित्य-सृजन म निर तर लगे रह कर आप जन साहित्य की महान् सेवा कर रह हैं और अपनी प्रतिभा से उसे समृद्ध कर रहे हैं। प्रस्तुत ग्र थ भी आपके आशीर्वाद और व्यापक अभिज्ञता का परिणाम है। आपके चरणो म इसे अर्पित करके मै ध य हो गया।

इस ग थ के मुद्रण आदि का सारा व्यय श्रीमती कु दप्रभा जी धमपत्नी स्व० लाला बरातीलाल जी यहियागञ्ज लखनऊ और श्री बा० सतीशच द्र जी बी० ए० ठेकेदार एस्प्लेनेड रोड दिल्ली ने दिया है। आपकी गुरुभक्ति और धमप्रेम वास्तव मे सराहनीय है। मै आपके अमूल्य सहयोग के लिए दोनो का आभारी हू।

मेरी इच्छा थी कि इस ग्र थ को सर्वाङ्ग सम्पूर्ण बनाया जाय। इसमे णमोकार म त्र सम्बन्धी विभिन्न शास्त्रो क सम्पूर्ण उद्धरणो का सकलन, णमोकार मत्र के माहात्म्य को प्रगट करने वाली कथाय आदि देन का मेरा विचार था। साथ ही मैं चाहता था कि णमोकार म त्र का अपने जीवन म क्या चमत्कार आपने देखा, ऐसी कुछ अनुभूत घटनायें भी दी जायें। किंतु जिन परिस्थितियो म यह ग्र थ प्रकाशित हो रहा है उनमे यह सम्भव न हो सका। यदि कभी इसका दूसरा सस्करण निकल सका तो यह सब सामग्री देन का मै अवश्य प्रयत्न करूगा। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि इस अनादि निधन मत्र को ससार मे उसका उचित स्थान और सम्मान अवश्य प्राप्त होना चाहिए।

आशा है, यह ग्र थ पाठको को अत्य त उपयोगी प्रतीत होगा। मेरी प्राथना है कि प्रत्यक पाठक इस ग्र थ का नियमित रूप म पाठ और स्वाध्याय करे।

दिल्ली

बलभद्र जैन

विषय-सूची



मथुरा सग्रहालय मे स्थित स्तूप के द्वार पर विभूषित पच परमेष्ठि मन्त्र



णमोकार-मन्त्र-कल्प

(भाषानुवाद सहित)



अनादिनिधन णमोकार मन्त्र

णमो अरिहन्ताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आइरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं

जैनरक्षा-स्तोत्रम्

श्रीजिन भक्तितो नत्वा त्रैलोक्याह्लादकारकम् ।
जैनरक्षामह वक्ष्ये देहिना देहरक्षकम् ॥१॥

तीनो लोको को आह्लादित करने वाले एव देहधारियो के देह की रक्षा करने वाले भगवान् जिनेश्वर को भक्तिपूर्वक नमस्कार करके जैन-रक्षा-स्तोत्र को कहता हूँ ।

ॐ ह्रीं आदीश्वर पातु शिरसि सर्वदा मम ।
ॐ ह्रीं श्रीं अजितो देवो भाल रक्षतु सर्वदा ॥२॥

ॐ ह्रीं भगवान् आदिनाथ मेरे मस्तक की सदैव रक्षा करे । ॐ ह्रीं श्री देवेश्वर अजित मेरे भाल की सदव रक्षा करें ।

नेत्रयो रक्षको भूयात् ॐ आ क्रौं सम्भवो जिन ।
रक्षेद् घ्राणेन्द्रिये ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लू अभिनन्दन ॥३॥

ॐ आ क्रौं तीर्थंकर सम्भवनाथ मेरे नेत्रों की रक्षा करें । ॐ ह्रीं श्री क्लीं ब्लू तीर्थंकर अभिनन्दन मेरी घ्राणेन्द्रियो की (नासिका की) रक्षा करें ।

सुजिह्वे सुमुखे पातु सुमति प्रणवान्वित ।
कर्णयो पातु ॐ ह्रीं श्रीं रक्त पद्मप्रभ प्रभु ॥४॥

ओंकार ध्वनि से युक्त तीर्थंकर श्रीसुमतिनाथ भगवान् मेरी जिह्वा और मुख की रक्षा करे । ॐ ह्रीं श्री रक्तवर्ण भगवान् पद्मप्रभ प्रभु मेरे कानो की रक्षा करें ।

सुपार्श्वं सप्तमः पातु ग्रीवाया ह्रीं श्रियाश्रितः।
पातु चन्द्रप्रभु श्रीं ह्रीं क्रीं (क्रो) पूर्वस्कन्धयोर्मम ॥५॥

श्री से शोभायमान सप्तम तीर्थंकर भगवान् सुपार्श्वनाथ मेरी ग्रीवा की रक्षा करें। श्री ह्रीं क्री (क्रो) भगवान् चन्द्रप्रभु मेरे स्कन्धों की रक्षा करे।

सुविधिः शीतलो नाथो रक्षको करपंकजे।
ॐ क्षा क्षीं क्षूं युतो काम चिदानन्दमयो शुभो ॥६॥

ॐ क्षा क्षी क्षू चिदानन्दमय शुभ भगवान् सुविधि और शीतलनाथ मेरे करपकजों (हाथो) की रक्षा करें।

श्रेयांसो वासुपूज्यश्च हृदये सदय सदा।
भूयाद् रक्षाकरो वार वारं श्रीप्रणवान्वितः ॥७॥

श्री और प्रणव से युक्त श्रेयास और वासुपूज्य भगवान् दया करके मेरे हृदय की निरन्तर रक्षा करें।

विमलोऽनन्तनाथश्च मायाबीजसमन्वितौ।
उदरे सुन्दरे शश्वद् रक्षायाः कारको मतौ ॥८॥

मायाबीजाक्षर से युक्त विमलनाथ और अनन्तनाथ भगवान् मेरे सुन्दर उदर (पेट) की रक्षा करें।

श्रीधर्मशान्तिनाथो च नाभिपंकेरुहे सताम्।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं हसयुक्तो पुन पातां पुन पुनः ॥९॥

ॐ ह्री श्री क्ली ह से युक्त श्रीधर्मनाथ और शान्तिनाथ बार-बार नाभिकमल की रक्षा करें।

श्रीकुन्थु-अरनाथो तु सुगुरू सुकटीतटे।
भवेतामवको भूरि ॐ ह्रीं क्लीं सहितो जिनो ॥१०॥

ॐ ह्री क्ली से सहित भगवान् कुंथुनाथ और अरनाथ मेरे कटितट की रक्षा करें।

मे पाता चारु जघाया श्रीमल्लिमुनिसुव्रतो ।
ॐह्रा ह्रीं ह्रू ततो ह्र क्लू क्लीं श्रीं युक्तौ कृपाकरौ ॥११॥

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्र ब्लू क्ली श्री से युक्त कृपालु भगवान् मल्लिनाथ और मुनिसुव्रतनाथ मेरी सुन्दर जघाओं की रक्षा करें।

यत्नतो रक्षको जानू श्रीनमिनेमिनायको ।
राजराजीमतीमुक्तौ प्रणवाक्षरपूर्वकौ ॥१२॥

राज्य और राजीमती को छोड़कर जाने वाले ओंकार से युक्त भगवान् नमिनाथ और नेमिनाथ मेरे जानुदय (घुटनो) की रक्षा करें।

श्रीपार्श्वेशमहावीरो पाता मा ह्री सुमानदो ।
ॐह्रीं श्रीं च तथा भ्रू क्लीं ह्रा ह्र श्रा श्र युतौ जिनौ ॥१३॥

ॐ ह्री श्री भ्रू क्ली ह्रा ह्र श्रा श्र से युक्त सुमान देने वाले भगवान् श्रीपार्श्वनाथ और महावीर मेरी रक्षा करें।

रक्षाकरा यथास्थाने भवन्तु जिननायका ।
कर्मक्षयकरा ध्याता भीताना भयवारका ॥१४॥

कर्म के नाश करने वाले, भयग्रस्ता का भय निवारण करने वाले भगवान् जिनेन्द्र ध्यान किये गये यथास्थान रक्षा करने वाले हो।

जैनरक्षा लिखित्वेमा मस्तके यस्तु धारयेत् ।
रविवद् दीप्यते लोके श्रीमान् विश्वप्रियो भवेत् ॥१५॥

जो व्यक्ति इस जैन-रक्षा-स्तोत्र को लिखकर अपने मस्तक पर धारण करता है वह सूर्य के समान संसार मे प्रकाशित होता है और

लक्ष्मीवान् होता हैं तथा विश्व का प्रिय होता है।

तस्योग्ररोगवेताला शाकिनीभूतराक्षसा ।
एते दोषा न दृश्यन्ते रक्षकाश्च भवन्त्यमी ॥१६॥

उसको भयकर रोग, वैताल, शाकिनी, भूत और राक्षस आदि दोष नही दिखाई देते, अपितु उसके रक्षक होते है।

अग्निसर्पभयोत्पाता भूपालाश्चोरविग्रहा ।
एते दोषा प्रणश्यन्ति रक्षकाश्च भवन्त्यमी ॥१७॥

अग्नि, सर्प, सात प्रकार के भय, उत्पात, राजभय, चोरभय और विग्रह (युद्ध-कलह) ये सभी दोष इस स्तोत्र के पाठ करते रहने से नष्ट हो जाते हैं और ये सब रक्षक बन जाते है।

जैनरक्षामिमा भक्त्या प्रातरुत्थाय य पठेत् ।
इच्छितान् लभते कामान् सम्पदश्च पदे पदे ॥१८॥

जो व्यक्ति प्रात काल उठकर भक्तिपूर्वक इस जैन-रक्षा-स्तोत्र को पढता है, उसकी सम्पूर्ण मनोकामनाए सफल होती है और वह पद पद पर लक्ष्मी को प्राप्त करता है।

श्रावणे शुक्लगेऽष्टम्यां प्रारभ्य स्तोत्रमुत्तमम् ।
अभिषेक जिनेन्द्राणां कुर्याच्च दिवसाष्टकम् ॥१९॥

इस श्रेष्ठ स्तोत्र को श्रावण शुक्ला अष्टमी को आरम्भ करके आठ दिन तक भगवान् जिनेन्द्र का अभिषेक करे।

ब्रह्मचर्यं त्रिधातव्यमेकभुक्त तथैव च।
शुचिना शुभ्रवस्त्रेण वालकारेण शोभनं ॥
नरो वापि तथा नारी शुद्धभावयुतोऽपि सन्।
दिन दिन तथा कुर्यात् जाप्य सर्वार्थसिद्धये ॥२०-२१॥

(स्तोत्र पाठ करने वाला) ब्रह्मचर्य धारण करे, एक बार भोजन करे, पुरुष हो या स्त्री पवित्र सफेद वस्त्र पहन कर और अलङ्कार धारण कर सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि के लिए भावपूर्वक प्रतिदिन इसका जाप करे।

एकाया तु विधातव्यमुद्यापनमहोत्सवम्।
पूजाविधिसमायुक्त कर्तव्य सज्जनैर्जनैं ॥२२॥

सज्जन मनुष्यों को एकम को पूजा-विधि सहित उद्यापन महोत्सव करना चाहिए।

इति जैनरक्षा-स्तोत्रम्



अथ द्वितीय जैनरक्षास्तोत्रम् (वज्रपंजरकवचं)

प्रागादीशानपर्यन्त पुष्टि विद्वेषणं तथा।
आकृष्टिं मोहन वश्यं उच्चाट स्तम्भमारणे ॥१॥
सर्वातिशयसम्पूर्णान् ध्यात्वा सर्वजिनाधिपान्।
पञ्च वर्णान् पञ्च रूपविषयद्रुमकुंजरान् ॥२॥
चतुर्गोत्रान् चतुर्वंस्त्रान् चतुर्विंशतिसम्मितान्।
जैनीं सर्वांगेषु रक्षा कुर्वे दु खौघघातिनीम् ॥३॥

मैं (साधक) पुष्टि, विद्वेषण, आकर्षण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन, मारण के लिए सम्पूर्ण ३४ अतिशय से युक्त भगवान् ऋषभदेव से लेकर भगवान् महावीर-पर्यन्त सब जिनेश्वरो को, जो कि पचवर्ण (धवल, नील, रक्त, प्रियगुप्रभ और तप्तकाचनाभ) वाले हैं और पचेन्द्रिय रूपी विषय-वृक्षो के लिए कुन्जर (गज) के समान हैं तथा चार गात्र और चार मुख वाले हैं, (उनको) स्मरण करके दु खो के समूह का नाश करने वाली सर्वांग-रक्षा को कहता हूँ (करता हूँ)।

शिरो मे वृषभ पातु भालं श्रीअजितप्रभुः।
पाता मे श्रीजिनो नेत्रे सम्भवश्चाभिनन्दन ॥४॥
सुमतिः पद्मप्रभुश्च श्रवणे मम रक्षताम्।
सुपार्श्वो रक्षतु घ्राणं मुख चन्द्रप्रभः प्रभु ॥५॥

रसना सुविधि पातु कठ श्रीशीतलो जिन ।
स्कन्धौ श्रेयासश्रीवासुपूज्यश्च विमलो भुजौ ॥६॥
अनन्तश्रीधर्मनाथौ पाता मे करपल्लवौ ।
शान्तिर्मे हृदय रक्षेत् मध्यं नाभिं च कुन्थ्वरौ ॥७॥
मल्लि कटिं सक्थिनी च रक्षतान्मुनिसुव्रत ।
नाभिर्जानुद्वय पायान्नेमिर्जंघाद्वयीं पुन ॥८॥
श्रीपार्श्वो वर्द्धमानश्च रक्षता मे पदद्वयम् ।
चतुर्विंशतिरूपोऽव्यादर्हन् मे सकल वपु ॥९॥

भगवान् ऋषभदेव मेरे शिर की, अजितनाथ मस्तक की, सम्भवनाथ और अभिनन्दन जिनेन्द्रदेव दोना नेत्रो की, सुमतिनाथ और पद्मप्रभु मेरे दोनो कानो की, सुपार्श्वनाथ घ्राण की, भगवान् चन्द्रप्रभु मुख की, सुविधिनाथ मेरी जिह्वा की, शीतलनाथ कठ की, श्रेयास और वासुपूज्य दानो स्कन्धो की, विमलनाथ दोना भुजाओ की, अनन्तनाथ और धर्मनाथ मेरे दोना हाथो की, शान्तिनाथ मेरे हृदय की, कुन्थुनाथ और अरनाथ मध्य और नाभि की, मल्लिनाथ कटिप्रदेश की, मुनिसुव्रतनाथ जघाओ की (साथलो की), नमिनाथ दानो जानुओ की, नेमिनाथ दोनो जघाओ की तथा पार्श्वनाथ और महावीर भगवान् मेरे दोनो पैरो की रक्षा करे। चतुर्विंशति तीर्थकररूप भगवान् अर्हन्त मेरे सम्पूर्ण शरीर की रक्षा कर।

एता जिनबलोपेता रक्षा य सुकृती पठेत् ।
स चिरायु सुखी भूत्वा न व्याधिर्विजयी भवेत् ॥१०॥

भगवान् जिनेन्द्रदेव के आशीर्वाद से युक्त इस रक्षास्तोत्र को जो पुण्यात्मा पढेगा वह चिरायु और सुखी होकर विजयी होगा और उसे किसी प्रकार की आधि-व्याधि नही होगी।

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मकारिण ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षित जिननामभि॰ ॥११॥

पाताल, पृथ्वी और आकाश मे विचरण करने वाले मायावी जीव भगवान् जिनेन्द्रदेव से रक्षित की ओर देख भी नही सकते ।

जिनेति जिनभद्रेति जिनचन्द्रेति वा स्मरन्-
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्ति मुक्तिं च विन्दति ॥१२॥

जिन, जिनभद्र और जिनचन्द्र के रूप मे भगवान् का स्मरण करने वाला व्यक्ति पापो से लिप्त नही होता तथा उसे भोग और मुक्ति दोनो ही प्राप्त होते है ।

वज्रपजरनामेद यो जैन कवच पठेत् ।
अव्याहताग सर्वत्र लभते जयमगलम् ॥१३॥

इस वज्रपजर नामक कवच को जो जैन पढेगा, वह सभी अगो से सुरक्षित, सर्वत्र जय और मगल को प्राप्त होगा ।

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण जिननाम्नेव रक्षित ।
लिखित्वा धारयेद् यस्तु करस्था सर्वसिद्धय॰ ॥१४॥

जिननामरूपी जगद्विजयी इस मत्र के द्वारा रक्षित इस स्तोत्र को लिखकर जो धारण करेगा, उसके हाथो मे सभी सिद्धिया आ जाती है ।

ललाटे दक्षिणस्कन्धे वामस्कन्धे करेऽपि च ।
वामकक्षावामऊर्वोर्जानौ पादतलेऽपि च ॥१५॥
नाभौ गुह्ये दक्षिणाधितले दक्षिणजानुके ।
कटीकक्षाहस्ततलस्तनेषु दक्षिणेषु च ॥१६॥

ललाट पर, दक्षिण स्कन्ध पर, वामस्कन्ध, हाथ पर, बायी

वक्षा, कटिप्रदेश, जानुद्वय (घुटने), पादतल, तथा नाभि, गुह्यस्थान (गुप्ताग) एवं दक्षिणजानु, कटिप्रदेश, हस्ततल तथा दक्षिण स्तन पर (इस मन्त्र को लिखे)।

इत्थेमा दृष्टवान स्वप्ने जैनरक्षामिह प्रभु ।
लिखे-द्रागसा गुरु प्रात प्रबुद्धस्ता तथा लिखेत् ॥१७॥

जैनरक्षा स्तान को भगवान् जिनेन्द्र स्वप्न मे जिस प्रकार दिखावे, साधक प्रात काल उठकर उसे उसी प्रकार लिख ले।

वामस्तने चेलिमन्त्रवर्णान् सप्तदश स्मरन् ।
ॐ ह्रा ह्रीं प्रमुखास्तस्य स्युर्मनीषितसिद्धय ॥१८॥

और वामस्तन पर (इस मन्त्र को लिखे)। इन सत्रह मन्त्रवर्णो का स्मरण करे। इस मन्त्र मे ॐ, ह्रा, ह्री ये बीजाक्षर प्रमुख है। इस प्रकार करने वाले साधक को मनोवाछित सिद्धिया प्राप्त होती हैं।

इति जैनरक्षा-स्तोत्र समाप्तम्



रक्षा-मन्त्र

आपदा-नाशन-मन्त्र ।

ॐ नमो वृषभनाथाय मृत्युंजयाय सर्वजीवशरणाय परमपवित्र-पुरुषाय चतुर्वेदाननाय अष्टादशदोपरहिताय सर्वज्ञाय सर्वदर्शिने अष्ट-महाप्रातिहार्याय चतुस्त्रिंशदतिशयसहिताय श्रीसमवसरणे द्वादशपरिखा-वेष्टिताय ग्रहनागभूतयक्षराक्षसवश्यकराय सर्वशान्तिकराय मम शिव कुरु कुरु स्वाहा ।

इति आपदानाशनमन्त्र

सर्वरक्षामन्त्र ।

ॐ क्षा क्षी क्षू क्षे क्षैं क्षो क्षौ क्ष क्ष नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हु फट् स्वाहा ।

ऋषभदेवरक्षामन्त्र ।

ॐ ऋषभाय अमृतबिन्दवे ठ ठ ठ स्वाहा ।

रक्षा अभिमन्त्र इक्कीस दिन तक प्रतिदिन १०८ बार पढे। इससे समस्त कष्ट दूर हो जाते हैं। और शिर की पीडा (शिर शूल) दूर हो जाते हैं।

सर्वरक्षामन्त्र ।

ॐ ह्रू क्षू फट् किरटि घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रा छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिंद भिंद हा क्षा क्ष व फट् स्वाहा ।

विधि—पढ कर सरसों चारों ओर फेंके। ब्रह्मचर्यपूर्वक इसका जप करे और रात्रि में भोजन न करे।

आत्मरक्षामन्त्र ।

ॐ क्षिप ॐ स्वाहा ।

विधि—इसे प्रतिदिन १०८ बार जपे।

अथ णमोकारकल्पः प्रारभ्यते ।

प्रथम पंचपरमेष्ठीस्तोत्रम् ।

पंचव्रतानामादाता तपः प्रति समुत्सुकः ।
विनेता भोजने तोये श्रेष्ठवंशसमुद्भवः ॥१॥
संसारदेहभोगेभ्य उदासीनसदास्थितः ।
अष्टाविंशगुणेषु को मुनिर्भवति नान्यथा ॥२॥

पांच महाव्रतों का पालन करने वाले, तप के प्रति उत्सुक रहने वाले, आहार के सम्बन्ध में विनयशील, श्रेष्ठवंश में उत्पन्न हुए, संसार, देह और भोगों से विरागी तथा अट्ठाईस मूलगुण धारण करने वाले मुनि कहलाते है। इन गुणों के बिना मुनि नहीं कहला सकते।

एकादशांगकंठस्थश्चतुर्दशश्च पूर्वकः ।
पठितः पाठितः येन स उपाध्याय उच्यते ॥३॥

ग्यारह अंग और चौदह पूर्व के जो स्वयं पाठी है अर्थात् जो स्वयं पढते हो और दूसरो को पढाते हो वे उपाध्याय कहलाते हैं।

निर्विकल्पं समारूढा चामृतराभ्य गाहकः ।
विवेकमंजलिं कृत्वा ज्ञानं स्वदन्ति साधकः ॥४॥

निर्विकल्प समाधि को [illegible] वाले, स्वानुभवरूपी अमृत का अवगाहन करने वाले [illegible] ([illegible]) विवेक की अंजलि बना कर ज्ञान का आस्वाद [illegible]।

घातिकर्मक्षय कृत्वा अघाति दग्धरज्जुकम् ।
षट्चत्वारिंशद् गुणैर्युक्त अर्हन् भवति नान्यथा ॥५॥

घाति कर्मो का नाश करके अघाति कर्मो को जली हुई रस्सी के समान कर देने वाले छयालीस गुणो से युक्त अर्हन्त भगवान् होते है । इन गुणो के बिना अर्हन्त नहीं कहे जाते ।

अर्हत्पदविनाशे स अष्टसम्यक्त्वसयुत ।
गमनागमनिर्मुक्त स सिद्ध कथित पर ॥६॥

अर्हन्त पद की सज्ञा समाप्त होने पर जो सम्यक्त्वादि आठ गुणो से युक्त होते हैं तथा ससार के आवागमन से छूट जाते है वे महान् सिद्ध परमात्मा कहलाते हैं ।

अलौकिकमहावृत्तिर्ज्ञानिनां केन वर्ण्यते ।
अज्ञानी बध्यते यत्र ज्ञानी तत्रैव मुच्यते ॥७॥

सम्यक्ज्ञानी पुरुषो की अलौकिक वृत्ति का वर्णन कौन कर सकता है । क्योकि जहा अज्ञानी जीव रागान्ध होकर बन्ध को प्राप्त करता है, ज्ञानवान् उन्ही कार्यो मे स्वानुभवपरिणति द्वारा कर्मो की निर्जरा को प्राप्त करता है ।

मिथ्यात्वविषमुत्सृज्य सम्यक्त्वममृत पिबेत् ।
येन कर्मामय हत्वा भजेत् पदमव्ययम् ॥८॥

मिथ्यात्व रूपी विष को छोडकर सम्यक्त्वरूपी अमृत को पीना चाहिए, जिससे कर्मव्याधियो का नाश होकर अविनाशी मोक्षसुख की प्राप्ति हो ।

सम्यक्त्व हि धन यस्य सुख तस्य भवे भवे ।
धनमेकभवे दत्त सुखाय यच्च दु खदम् ॥९॥

जिनके पास सम्यक्त्वरूपी धन है, उसे भव-भव में सुख प्राप्त होता है। किन्तु सांसारिक धन कुछ समय के लिए सुख देता हुआ लगता है किन्तु वस्तुत वह दुःखों का दाता है।

दरिद्रोऽपि विचक्षणो नरमस्त्वार्थवान् न श्रुतिशास्त्रवर्जितः।
सुलोचनो जीर्णपटोऽपि शोभते न नेत्रहीन कनकैरलङ्कृत ॥१०

दरिद्र किन्तु तत्त्वार्थवान् और विचक्षण मनुष्य श्रेष्ठ है किन्तु जो शास्त्रज्ञान से रहित है वह श्रेष्ठ नहीं है। अच्छे नेत्रवाला भले ही फटे-पुराने वस्त्र पहने किन्तु अच्छा लगता है किन्तु नेत्रहीन व्यक्ति भले ही सुवर्ण के आभूषण पहने हुए हो, सुन्दर प्रतीत नहीं होता।

अद्याभवत् सफलता नयनद्वयस्य
देव त्वदीयचरणाम्बुजवीक्षणेन।
अद्य त्रिलोकतिलक प्रतिभासते मे
ससारवारिधिरयं चुलुकप्रमाणम् ॥११॥

आज मेरे दोनों नेत्र सफल हुए, हे देव! जो आपकी चरणाम्बुज-छवि का दर्शन किया। हे त्रिलोकतिलक! आज यह संसारसमुद्र मुझे आपकी कृपा से चुल्लूभर मालूम पड रहा है।

विनयाल्लभते विद्या तपसा च सु[illegible]।
दानतो भोगभूमिस्तु ज्ञानत पदम [illegible]॥

विनय से विद्या प्राप्त होती है, [illegible] है। दान से भोगभूमि में जाकर जन्म होता [illegible] अविनाशी मोक्ष-पद प्राप्त होता है।

इति पंचपरमेष्ठीगुणस्तवन सम्पूर्णम्।

अनुष्टुब्वृत्तबद्धमद्भुताशयसंवलितं श्रीपंचनमस्कृतिस्तवनं

प्रतिष्ठितं तमःपारे पारे वाग्वर्तिवैभवम् ।
प्रपचवेधस पंचनमस्कारमभिष्टुम ॥१॥

जो अज्ञानान्धकार के उस पार प्रतिष्ठित है अर्थात् अज्ञानान्धकार के नाशक है, जिन्हें अज्ञानान्धकार स्पर्श भी नही कर सकता तथा जो वाणी की सामर्थ्य से परे है, इस ससार के मायाजाल को छिन्न-भिन्न करने वाले है ऐसे पचनमस्कार रूप मत्र का मैं स्मरण करता हूँ ।

अहो पचनमस्कार कोऽप्युदारो जगत्सु य ।
सम्पदोऽष्टौ स्वय धत्ते दत्तेऽनन्ताः स्तुत स ता ॥२॥

तीनो लोको मे अतिशय उदार पचनमस्कारमन्त्र आश्चर्यजनक है। जो स्वय तो अष्टसिद्धियो को ही धारण करता है किन्तु स्मरण किये जाने पर वह अनन्तसिद्धियो को देता है ।

दत्तेऽनुकूल एवान्यो भुक्तिमात्रमपि प्रभु ।
एष पचनमस्कार प्रातिलोम्येऽपि मुक्तिद ॥३॥

ससार मे सामर्थ्यशील अन्य व्यक्ति (राजा, महाराजा) अनुकूल होने पर ही भुक्ति (भोग) मात्र देते है किंतु यह पच नमस्कार मत्र ही ऐसा है जिसे उल्टा पढने पर भी मुक्ति प्राप्त होती है ।

जिसके पास सम्यक्त्वरूपी धन है, उसे भव-भव मे सुख प्राप्त होना है। किन्तु सासारिक धन कुछ समय के लिए सुख देता हुआ लगता है किन्तु वस्तुत वह दु खो का दाता है।

वर दरिद्रोऽपि विचक्षणो नरस्तत्त्वार्थवान् न श्रुतिशास्त्रवर्जित।
सुलोचनो जीर्णपटोऽपि शोभते न नेत्रहीन कनकैरलङ्कृत ॥१०

दरिद्र किन्तु तत्वार्थवान् और विचक्षण मनुष्य श्रेष्ठ है किन्तु जो शास्त्रज्ञान से रहित है वह श्रेष्ठ नही है। अच्छे नेत्रवाला भले ही फटे-पुराने वस्त्र पहने किन्तु अच्छा लगता है किन्तु नेत्रहीन व्यक्ति भले ही सुवर्ण के आभूषण पहने हुए हो, सुदर प्रतीत नही होता।

अद्याभवत् सफलता नयनद्वयस्य
देव त्वदीयचरणाम्बुजवीक्षणेन।
अद्य त्रिलोकतिलक प्रतिभासते मे
ससारवारिधिरय चुलुकप्रमाणम् ॥११॥

आज मेरे दोनो नेत्र सफल हुए, हे देव! जो आपकी चरणाम्बुज-छवि का दर्शन किया। हे त्रिलोकतिलक! आज यह ससारसमुद्र मुझे आपकी कृपा से चुल्लूभर मालूम पड रहा है।

विनयाल्लभते विद्या तपसा च सु[illegible]
दानतो भोगभूमिस्तु ज्ञानत पद[illegible]

विनय से विद्या प्राप्त होती है [illegible]। दान से भोगभूमि मे जाकर जन्म होता है [illegible] [illegible]विनाशी मोक्ष-पद प्राप्त होता है।

इति पचपरमेष्ठीगुणानुवाद सम्पूर्ण।

अनुष्टुब्वृत्तबद्धमद्भुताशयसंवलितं श्रीपंचनमस्कृतिस्तवनं

प्रतिष्ठित तमःपारे पारे वाग्वर्तिवैभवम् ।
प्रपचवेधसः पंचनमस्कारमभिष्टुम ॥१॥

जो अज्ञानान्धकार के उस पार प्रतिष्ठित हैं अर्थात् अज्ञानान्धकार के नाशक है, जिन्हें अज्ञानान्धकार स्पर्श भी नही कर सकता तथा जो वाणी की सामर्थ्य से परे ह, इस ससार के मायाजाल को छिन्न-भिन्न करने वाले हैं ऐसे पचनमस्कार रूप मत्र का मैं स्मरण करता हूँ ।

अहो पचनमस्कार कोऽप्युदारो जगत्सु य ।
सम्पदोऽष्टौ स्वय धत्ते दत्तेऽनन्ता स्तुत' स ता' ॥२॥

तीनो लोको मे अतिशय उदार पचनमस्कारमन्त्र आश्चर्यजनक है। जो स्वय तो अष्टसिद्धियो को ही धारण करता है किन्तु स्मरण किये जाने पर वह अनन्तसिद्धियो को देता हे ।

दत्तेऽनुकूल एवान्यो भुक्तिमात्रमपि प्रभु ।
एप पंचनमस्कार' प्रातिलोम्येऽपि मुक्तिद ॥३॥

ससार मे सामर्थ्यशील अन्य व्यक्ति (राजा, महाराजा) अनुकूल होने पर ही भुक्ति (भोग) मात्र देते है किंतु यह पच नमस्कार मत्र ही ऐसा है जिसे उल्टा पढने पर भी मुक्ति प्राप्त होती है।

नमस्कारनरेन्द्रस्य किमपि प्राभव स्तुम ।
यदीयफूत्कृतेनापि विद्रवन्ति द्विष क्षणात् ॥४॥

यह पचनमस्कार मन्त्र नरेन्द्र (राजा) है जिसका प्रभाव अद्भुत है। हम इस अद्भुतप्रभाव को नमस्कार करते हैं। इस नमस्कार नरेन्द्र के फूत्कार (फूत्कार मात्र से) शत्रु द्रवित हो जाते हैं अथवा दूर पलायित हो जाते हैं।

सिद्धोऽप्यणिमाद्यास्ता नमस्कारमधिष्ठिता ।
अष्टाषष्ट्यक्षरात्मापि यदसो प्रणवे विशत् ॥५॥
शिरस्कन्धधिया धीरै स्वाङ्गदेशनिवेशिता ।
नमस्कृता नवपदी कथितो वज्रपजर ॥६॥

अणिमा, महिमा आदि सिद्धिया इस नमस्कार मन्त्र मे निहित है। यह छयासठ अक्षरात्मा भी प्रणव (ओंकार) मे प्रविष्ट है। अगन्यास द्वारा शिर, स्कन्ध आदि सभी अगो मे निवेशित नवपदात्मक णमोकार मन्त्र को नमस्कार किया गया है, यही वज्रपजर स्तोत्र कहा गया है।

वर्ण्यता श्रीनमस्कारान् कार्मण किमतोऽधिकम् ।
यत्सप्रयोगत पामुरपि सन्तनयेज्जगत् ॥७॥

श्रीयुक्त नमस्कारमन्त्री का इससे बढकर कामण (जादू, प्रभाव) का वर्णन क्या हो सकता है कि जिसके प्रयोग से अति-हीन भी ससार का निर्माण कर लेते है।

नमस्कार नम सिद्ध यत्पदस्पर्शपावन ।
पद्माच्छादितसर्वाङ्ग शान्तिमासादयेत् परम् ॥८॥

चत्तारि मगल – अरिहता मगल
सिद्धा मगल, साहू मगल
केवलिपन्नत्तो धम्मो मगल ॥

चत्तारि लोगुत्तमा –

अरिहता लोगुत्तमा
सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा,
केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥



चत्तारि सरण पवज्जामि –
अरिहते सरण पवज्जामि,
सिद्धे सरण पवज्जामि साहू सरण पवज्जामि
केवलिपन्नत्त धम्म सरण पवज्जामि ॥

मथुरा सग्रहालय मे रखे हुए प्राचीन आयाग पट्ट के मध्य स्थित मगल-पाठ

अर्हन्त आदि पंच परमेष्ठियों का हाथ की अंगुलियों पर ध्यान करने वाला अनेक विघ्नरूप सर्पों के लिए गरुड के समान होता है अर्थात् जिस प्रकार गरुड सर्पों का नाश करता है उसी प्रकार वह साधक भी णमोकार मन्त्र द्वारा अनेक पापों को दूर करता है।

गुरून् पंच क्रमात् ध्यायन् मुद्रया परमेष्ठिनाम्।
गूढप्ररूढमचिरात् कर्मग्रन्थिं विमोचयेत् ॥१४॥

परमेष्ठी मुद्रा से पंच गुरुओं का क्रमशः ध्यान करता हुआ अति शीघ्र ही गूढप्ररूढ (अत्यन्त दृढता से जमी हुई) कर्म निकाचित ग्रंथियों का नाश करता है।

षोडशाक्षरगान् शुद्धान् परमान् परमेष्ठिनः।
प्राणी प्रणिदधानोऽपि स्वेप्सित फलमेधते ॥१५॥

परमेष्ठियों के षोडश (सोलह) अक्षर वाले शुद्ध मन्त्रों का ध्यान करने वाला प्राणी अपने इच्छित फलों को प्राप्त करता है।

विद्युज्जलाग्निभूपालव्यालचोरारिमारिजम्।
भयं वंचयते पंचनमस्कारस्य संस्मरात् ॥१६॥

पंचनमस्कार मन्त्र का स्मरण करने वाले व्यक्ति बिजली, जल, अग्नि, राजा, सर्प, चोर, शत्रु, महामारी आदि भयों से मुक्त रहते हैं।

आराध्य विधिवत् पंचनमस्कारमुदारधी।
लक्षजापेन पापेन मुक्तिमार्हन्त्यमश्नुते ॥१७॥

उदार बुद्धिवाला विधिपूर्वक पंचनमस्कार मन्त्र की आराधना करके उसके एक लक्ष जाप से पाप से मुक्त होकर अर्हन्त पद को प्राप्त हो जाता है।

ऐहिकं फलमीप्सूनामष्टकर्मप्रसाधिनी ।
मुक्त्यर्थिना च स्यादेवैवाष्टकर्मनिषेधिनी ॥१८॥

इस लोक मे भोगने योग्य फलो की इच्छा करने वालो के लिए यह अष्टकर्मो का बन्ध करने वाली है और यही मुक्ति की इच्छा रखने वालो के लिए अष्ट कर्मो का नाश करने वाली भी है ।

विपदामभिचारस्योपादानस्याखिलश्रियाम् ।
स्मर्ता नमस्कृते स्वर्गिवर्गेण वरिवस्यते ॥१६॥

विपत्तियो का नाश करने वाले तथा सम्पूर्ण सम्पत्ति-समृद्धियो के उपादान स्वरुप नमस्कार मत्र का स्मरण करने वाला देवताओ से पूजा जाता है ।

चतुर्दशाना पूर्वाणामेवेवोपनिषत् परा ।
आद्या सकलविद्याना बीजाना प्रकृति परा ॥२०॥

यह णमोकार मत्र चौदह पूर्वो का पु ज है । यह सम्पूर्ण विद्याओ की आद्यविद्या है और बीजाक्षरो का जन्मस्थान है ।

इयं पथ्योदन पथ्य परलोकाध्वयायिनाम् ।
परमास्त्रं नृणा मोहराजयुद्धाय सज्जताम् ॥२१॥

यह णमोकार मत्र परलोक जाने वाले व्यक्तियो के लिए हितकारी पाथेय है (सर्वोत्तम पथ्य है) और मोहराज से युद्ध करने के लिए तत्पर मनुष्यो के लिए सर्वश्रेष्ठ अस्त्र है ।

प्राणी प्राणप्रयाणस्य क्षणे ध्यायन् नमस्क्रियाम् ।
लभते सुगति चैका पाप्मन. कृतपूर्व्यपि ॥२२॥

मृत्यु के समय जो प्राणी क्षण भर भी नमस्कार मत्र का ध्यान करले तो वह पूव मे अनेक पापो का कर्ता होने पर भी सुगति को प्राप्त करता है।

नमस्कृतिं कृपानित्तै श्रोत्रयो प्राभृतीकृताम् ।
स्वीकृत्य पुण्यसघ्यूचस्तिर्यंचोऽपि ययुर्दिवम् ॥२३॥

कृपालु गुन्जा के द्वारा कानों मे पहुचाये हुए नमस्कार मन्त्र को स्वीकार करके पुण्यवान् तिर्यंच भी स्वर्ग को जाते है ।

त्रिदण्डिन निगृह्यासियष्टिना श्रेष्ठिनन्दन ।
नमस्कारस्य महसासाधयत स्वर्णपूरुषम् ॥२४॥

मन, वचन, काय का निग्रह करके श्रेष्ठिनन्दन ने पच नमस्कार के प्रभाव से स्वर्णपुरुष की सिद्धि की ।

स्मृत्वा पचनमस्कार प्रविष्टायास्तमोगृहम् ।
घटन्यस्तो महासत्या पन्नग पुष्पमाल्यभृत् ॥२५॥

पच नमस्कार महामन्त्र का स्मरण करके अन्धेरे घर मे प्रवेश करने वाली महासती (सामा) को घडे मे रखा हुआ सर्प भी माला हो गया ।

नमस्कारेण सम्बोध्य मातुलिंगवनान्तरम् ।
प्राणत्राण स्वपरयोर्व्यधत्त श्राद्धपु गव ॥२६॥

मातुलिंग वन के अमर को नमस्कार से सम्बोधन करके श्राद्धपु गव ने स्व और पर के प्राणो की रक्षा की ।

यक्षता हुडिकोऽप्रापत् सुकुल चण्डपिंगल ।
इतस्तादृक् गुणस्फीर्तिं सुदर्शन सुदर्शने ॥२७॥

(नमस्कार मन्त्र के प्रभाव से) हुडिक यक्ष बन गया और चण्डपिंगल को उच्च कुल प्राप्त हुआ । सुदर्शन ने सुदर्शन वन से महा-प्रभावशाली गुणगरिमा को प्राप्त किया ।

एप माता पिता स्वामी गुरुर्नेत्र भिषक् सखा ।
प्राणत्राण गतिर्दीप शान्ति पुष्टिर्महन्महः ॥२८॥

यह पच नमस्कार मत्र माता है, पिता है, स्वामी है, गुरु है, नेत्र है, वैद्य है और मित्र है। यही प्राणरक्षक है, यही जीवो की गति है और अज्ञान अन्धकार मे विचरण करने वालो के लिए दीपक के समान है और शान्ति, पुष्टि और महान् यश को देने वाला है।

निधयः सन्निधौ कामधेनुरप्यनुगामिका ।
भूभृतो भृतकास्तस्य यस्य नैप हृदो हिरुक् ॥२६॥

णमोकार मत्र जिसके हृदय से दूर नही होता, निधिया उसके समीप रहती ह और कामधेनु उसका अनुगमन करती है तथा राजा उसके सेवक के समान काम करते ह।

नास्येयत्ता प्रभावाणां क्रमवर्तितया गिराम् ।
मितायुष्ट्वाच्च सर्वोऽपि न्यक्षेण भणितुं क्षमः ॥३०॥

वाणी के क्रमवर्ती होने से इसके प्रभावो की इयत्ता (सीमा) नही है और मनुष्यायु सीमित है इसलिए इसके सम्पूर्ण प्रभाव को इन्द्रियो के द्वारा कहा नही जा सकता।

सर्वावस्थोचितं सर्वश्रुतसार सनातनम् ।
परमेष्ठिमहामन्त्रं भक्तितन्त्रमुपास्महे ॥३१॥

सभी अवस्थाओ मे करने योग्य, सम्पूर्ण शास्त्रो के सारभूत, शाश्वत और भक्ति योग्य परमेष्ठी महामन्त्र की हम सब उपासना करते हैं।

उच्चैर्योजनलक्षमानविदितो बिभ्रत् सुवर्णात्मतां -
भव्यानन्दनभद्रशालमहिमा रोचिष्णुचूलाचितः ।

अस्तु श्रीजिनगेहभास्वररुचिस्थान लसन्निर्जर
सोऽय व परमेष्ठिपचकनमस्कार सुमेरु श्रिये ॥३२॥

जो (अभग) एक लाख योजन ऊचा है, जो सुवर्णमय है, भव्य पुरुषो को आनन्ददायक तथा भद्रशाल वन मे महिमायुक्त है, जो अपने चमकते हुए रत्नो से शोभायमान है, जो जिनचैत्यालयो से अत्यन्त सुशोभित है और देवताओ का स्थान है वह यह पच परमेष्ठी नमस्कार रूप सुमेरु आपके लिए कल्याणप्रद हो।

साम्नायावयवा जिनप्रभगुरुर्यां सूत्रयामास या -
दिव्या पचनमस्कृतिस्तुतिमिमामानन्दनन्दन्मना ।
यस्यैषाचलति कण्ठसीमनि सदा मुक्तालताविभ्रम
त मुचन्त्यचिरेण विघ्ननिचया श्लिष्यन्ति च श्रीभरा ॥३३॥

आनन्द से प्रसन्न मन श्रीजिनप्रभ गुरु ने आम्नाय (शास्त्र) के अवयवो सहित जिस दिव्य पचनमस्कार स्तोत्र को गुम्फित किया है वह (यह स्तोत्र) जिनके कण्ठप्रदेश मे मोतियो की माला के समान शोभायमान रहता है, उसे सभी विघ्न शीघ्र ही छोड देते ह और लक्ष्मी उसका आलिंगन करती है।



अथ नमस्कारक्रमणिका लिख्यते ।

वन्दे शान्तिजिनं प्रबोधतरणिं कारुण्यवारानिधिं
भव्यध्वान्तहरं पदत्रयधरं कामं जिनं चक्रिणम् ।
व्योमाकाशखपण्णवाक्तिवधूस्त्यक्त्वापवर्गव्रता -
धन्यं कौरव-वंशमण्डन-मणिं श्रीविश्वसेनोद्भवम् ॥१॥

मैं ज्ञान के सूर्य, करुणा के समुद्र, भव्यजनों के आत्मान्धकार के नाशयिता, कामदेव (प्रद्युम्न), जिन और चक्रवर्ती तीन पदों को धारण करने वाले, पण्णवति-सहस्र (छियानवे हजार) स्त्रियों को छोडकर मोक्ष अभिलाषा से प्रव्रज्या ग्रहण करने वाले, श्रीविश्वसेन के पुत्र और कुरुवंश के रत्न-स्वरूप श्रीशान्तिजिनेश्वर को नमस्कार करता हूँ ।

वन्दे कुन्थुजिनं प्रमाणसदनं स्याद्वादसच्छेखरं
आदित्यान्वयवार्धिरत्नममलं मुक्तिप्रियावल्लभम् ।
त्यक्त्वा चक्रिपदं रमाश्च सकलान्याहत्य घातीन्यपि
मुक्त्यै प्रव्रजितं प्रभुं जिनपतिं कैवल्यभानूदयम् ॥२॥

मैं प्रमाणों के सदन (स्वयं प्रमाणभूत), स्याद्वाद (अनेकान्त) के श्रेष्ठ शिखर, सूर्यवंशरूप समुद्र के निर्मल रत्न, मुक्तिप्रिया के वल्लभ (प्रिय), चक्रवर्तीपद, स्त्री-समूह को छोडकर तथा चारों घाति-कर्मों का नाशकर मुक्ति-प्राप्ति के लिए प्रव्रज्या स्वीकारने वाले, कैवल्य-ज्ञानरूप भानु के उदय-स्वरूप श्री कुन्थुजिनेश्वर को नमस्कार करता हूँ ।

वशश्रीसदन सुदर्शनतनु चक्रश्रिया राजित
गीर्वाणाधिपतिप्रपूजितपद त्रैलोक्यचूडामणिम् ।
दुर्वोधद्रुमखण्डनैकपरशु मुक्तिश्रियो वल्लभ
वन्देऽर जिनभास्कर समरसैरापूरित चिन्मयम् ॥३॥

मैं स्ववश की श्री के निकेतन (वश की प्रतिष्ठा का सवर्द्धन करने वाले) शोभन (दर्शनीय शरीर वाले) चक्रवर्ती-पद की श्री से विराजमान, देवताओ के अधिपति (इन्द्र) से चरणवन्दन किये गये, तीनों लोक के मुकुट-मणि, अज्ञानरूप वृक्ष को काट गिराने में तीक्ष्ण परशु (फरसा) के समान, मुक्ति-रानी के वल्लभ (प्रिय), समरसो से आपूर्ण, चैतन्यस्वरूप, श्रीअरनाथ जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार करता हूँ ।

वन्दे सदा साधुगण गरिष्ठ त्रिहीनकोटीनवक विशुद्धम् ।
रत्नत्रयी-भूषणभूषिताग सद्ध्यानपीयूषप्रपुष्टकायम् ॥४॥

मैं तीन कम नवकोटि-विशुद्ध, रत्नत्रय रूप भूषणो से विभूषित, श्रेष्ठ ध्यानरूप अमृतपान से पुष्टकाय श्रेष्ठ साधुगणो को सदा नमस्कार करता हूँ।

श्रीशारदा सारपदार्थदात्रीं कुबोधमिथ्यात्वविनाशिका वै ।
वन्दे जिनस्यास्यभवा त्रिकाल सिद्धान्ततर्कागम-पूर्ण-सिंधुम् ॥

मैं सार पदार्थों को प्रदान करने वाली, दुर्ज्ञान (कुबोध) और मिथ्यात्व का नाश करने वाली, श्रीजिनेन्द्र भगवान् के मुख से उत्पन्न, सिद्धान्त, तर्क और आगमो की लबालब भरी हुई सिन्धु नामक नदी अथवा समुद्र रूपी श्रीभगवती शारदा को नमस्कार करता हूँ ।

विशालकीर्तिम् प्रथम भजामि गुरूत्तम गौतमनामधेयम् ।
सत्सूक्तिपीयूषरसेन योऽत्र प्रपोषितो भव्यगणः प्रशस्तै ॥६॥

सर्वप्रथम मैं जगद्व्यापिनी कीर्ति से युक्त गुरुश्रेष्ठ गौतम (गणधर) को प्रणाम-करता हू। जिन पर श्रद्धा रखने वाले भव्यगणों ने अनेक पीयूषवर्षिणी सूक्तियों द्वारा उनका स्तवन किया है।

श्रीमूलसघसदनेषु लसत्प्रदीपो
जातो मुनीश्वरवर किल पद्मनन्दी।
सिद्धान्ततर्कविषयेषु विचक्षणो य-
श्रीजैनशासनप्रकाशनभानुरासीत् ॥७॥

जो मूलसघ के भवन को प्रकाशित करने वाले दीपक के समान हैं, ऐसे पद्मनन्दी नाम के मुनीश्वर हुए। वे सिद्धान्त-तर्क आदि विषयों मे अत्यन्त निष्णात विद्वान् थे और जैनशासन के प्रकाशन मे सूर्य के समान थे।

तत्पट्टे जिनचन्द्रनामविदित सिद्धान्ततर्काम्बुधि·
तत्पट्टे शुभचन्द्र आगमनिधिर्धर्मप्रवीणोऽभवत्।
तत्पट्टे मुनिसिंहकीर्तिरिति यो वागीश्वरो धर्मगी
तद्वंशे किल धर्मकीर्तिरभवत् ख्यात परीक्षाग्रणी ॥८॥

उनके पट्ट पर जिनचन्द्र हुए जो कि सिद्धान्त और तर्कशास्त्र के विद्वान् थे, उनके पट्ट पर धमप्रवीण श्रीशुभचन्द्र हुए, उनके पट्ट पर मुनि सिंहकीर्ति हुए जो धर्म के प्रवक्ता और वागीश्वर थे। उनके वश मे श्रीधर्मकीर्ति हुए जो परीक्षा (आप्तविषयक निर्णय) मे अग्रगामी थे।

सुशीलभूषणाभिध सुशीलभूषणाश्रित·।
तदीयपट्टके स्थित स ज्ञानभूषणाख्यक ॥९॥

यशश्रीसदन सुदर्शनतनु चक्रश्रिया राजित
गीर्वाणाधिपतिप्रपूजितपद त्रैलोक्यचूडामणिम् ।
दुर्बोधद्रुमखण्डनैकपरशु मुक्तिश्रियो वल्लभ
वन्देऽर जिनभास्कर समरसेरापूरित चिन्मयम् ॥३॥

मैं यशरूपी श्री के निकेतन (यश की प्रतिष्ठा का सवर्द्धन करने वाले) शोभन (दर्शनीय शरीर वाले) चक्रवर्ती-पद की श्री से विराजमान, देवताओं के अधिपति (इन्द्र) से चरणवन्दना किये गये, तीनों लोक के मुकुट-मणि, अज्ञानरूप वृक्ष को काटने के लिए तीक्ष्ण परशु (फरसा) के समान, मुक्ति-रानी के वल्लभ (प्रिय), समरसों से आपूर्ण, चैतन्यस्वरूप, श्रीअरनाथ जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार करता हूं ।

वन्दे सदा साधुगण गरिष्ठ त्रिहीनकोटीनवकं विशुद्धम् ।
रत्नत्रयी-भूषणभूषिताग सद्ध्यानपीयूषप्रपुष्टकायम् ॥४॥

मैं तीन कम नवकोटि-विशुद्ध, रत्नत्रय रूप भूषणों से विभूषित, श्रेष्ठ ध्यानरूप अमृतपान से पुष्टकाय श्रेष्ठ साधुगणों को सदा नमस्कार करता हूँ।

श्रीशारदा सारपदार्थदात्रीं कुबोधमिथ्यात्वविनाशिका वै ।
वन्दे जिनस्यास्यभवा त्रिकाल सिद्धान्ततर्कागम पूर्ण-सिंधुम् ॥५॥

मैं सार पदार्थों को प्रदान करने वाली, दुर्ज्ञान (कुबोध) और मिथ्यात्व का नाश करने वाली, श्रीजिनेन्द्र भगवान् के मुख से उत्पन्न, सिद्धान्त, तर्क और आगमों की लबालब भरी हुई सिंधु नामक नदी अथवा समुद्र रूपी श्रीभगवती शारदा को नमस्कार करता हूं ।

विशालकीर्तिम् प्रथम भजामि गुरूत्तम ज्ञानमनामधेयम् ।
सत्सूक्तिपीयूषरसेन योऽत्र प्रपोषितो भव्यगणं प्रशस्तैः ॥६॥

सर्वप्रथम मैं जगद्व्यापिनी कीर्ति से युक्त गुरुश्रेष्ठ गौतम (गणधर) को प्रणाम करता हू। जिन पर श्रद्धा रखने वाले भव्यगणो ने अनेक पीयूषवर्षिणी सूक्तियो द्वारा उनका स्तवन किया है।

श्रीमूलसंघसदनेषु लसत्प्रदीपो
जातो मुनीश्वरवर: किल पद्मनन्दी।
सिद्धान्ततर्कविषयेषु विचक्षणो यः
श्रीजैनशासनप्रकाशनभानुरासीत् ॥७॥

जो मूलसघ के भवन को प्रकाशित करने वाले दीपक के समान है, ऐसे पद्मनन्दी नाम के मुनीश्वर हुए। वे सिद्धान्त-तर्क आदि विषयो मे अत्यन्त निष्णात विद्वान् थे और जैनशासन के प्रकाशन मे सूर्य के समान थे।

तत्पट्टे जिनचन्द्रनामविदित सिद्धान्ततर्काम्बुधि.
तत्पट्टे शुभचन्द्र आगमनिधिर्धर्मप्रवीणोऽभवत्।
तत्पट्टे मुनिसिंहकीर्तिरिति यो वागीश्वरो धर्मगी.
तद्वंशे किल धर्मकीर्तिरभवत् ख्यात परीक्षाग्रणी ॥८॥

उनके पट्ट पर जिनचन्द्र हुए जो कि सिद्धान्त और तर्कशास्त्र के विद्वान् थे, उनके पट्ट पर धर्मप्रवीण श्रीशुभचन्द्र हुए, उनके पट्ट पर मुनि सिंहकीर्ति हुए जो धर्म के प्रवक्ता और वागीश्वर थे। उनके वश मे श्रीधर्मकीर्ति हुए जो परीक्षा (आप्तविषयक निर्णय) मे अग्रगामी थे।

सुशीलभूषणाभिध· सुशीलभूषणाश्रित।
तदीयपट्टके स्थित स ज्ञानभूषणाख्यक ॥९॥

श्रीमज्जगद्भूषणनामधेयः प्रमाणसाहित्यकलानुराग ।
वादीन्द्रपादाम्बुजसेव्यमानो जातः पृथिव्यां मुनिचक्रवर्ती ॥१०॥

उनके पट्ट पर शीलवानों मे भूषणस्वरूप सुशीलभूषण मुनि हुए और उनके पट्ट पर ज्ञानभूषण नाम के मुनि हुए। उनके पट्ट पर जगद्भूषण नाम के मुनि हुए जिनका प्रमाण साहित्य और कला पर अत्यन्त प्रेम था और जिनके चरणों की सेवा वादीन्द्र (बड़े बड़े शास्त्रार्थमहारथी) किया करते थे और जो पृथ्वी पर मुनि चक्रवर्ती रूप मे विख्यात थे ।

तत्पट्टांकितराजिता मुनिवरा श्रीविश्वभूषाभिधा
जग्मुः क्वाप्यमले पुरे जिनप्रभोर्यात्रार्थसिद्ध्यै तु ये ।
तस्मिन् सम्भवनाथदेवयजन-प्रारम्भ-भारोद्धुरा -
स्तेषां नाम गुणान् सुमन्त्रममलं नित्यं भणामो वयम् ॥११॥

उनके पट्ट पर श्रीविश्वभूषण नामा मुनिश्रेष्ठ विराजमान हुए जो तृतीय तीर्थंकर भगवान् सम्भवनाथ की पूजा-प्रतिष्ठा के लिए किसी पवित्र नगर मे गए और वहां उन्होंने भगवान् की प्रतिष्ठा करवाई। उनके नाम और गुणों को तथा पवित्र मन्त्र को हम नित्य ही स्मरण करते हैं।

इति नमस्कारक्रमणिका समाप्ता



पंचनमस्कारस्तोत्रम्।

विश्लिष्यन् घनकर्मराशिमशनिः संसारभूमिभृतः
स्वर्निर्वाणपुरप्रवेशगमने निष्प्रत्यवाय सताम्।
मोहाधावटसंकटे निपतता हस्तावलम्बोऽर्हतां
पायाद् व सचराचरस्य जगत संजीवनं मन्त्राद् [illegible]

अनादिकाल से साथ लगी हुई कर्मराशि को नष्ट [illegible] ससाररूपी पर्वतो का भेदन करने वाला, सज्जनो के लिए [illegible] मोक्ष-नगर मे प्रवेश करते समय आने वाले समस्त विघ्नों [illegible] वाला, मोहान्धकार रूप गर्त मे (गड्ढे मे) पडे हुए [illegible] हस्तावलम्बन स्वरूप और सम्पूर्ण चर-अचर जग[illegible] ऐसा यह अर्हन्त आदिक पचपरमेष्ठी स्वरूप नमस्का[illegible] आपकी रक्षा करे।

एकत्र पंचगुरुमन्त्रपदाक्षराणि
विश्वत्रय पुनरनन्तगुणं परत्र।
यो धारयेत् किल तुलानुगत तथापि
वन्दे महागुरुतर परमेष्ठिमन्त्र[illegible]

तीनो लोको से अधिक भारवाले (गुणशील) परमेष्ठीमंत्र का फ
ही गुरु रहेगा। मैं ऐसे परमेष्ठीमन्त्र को नमस्कार करता हूँ।

ये केचनापि सुपमाद्यरका अनन्ता
उत्सर्पिणीप्रभृतय प्रययुर्विवर्ता ।
तेष्वप्ययं परतर प्रथितप्रभावो
लब्ध्वामुमेव हि गता शिवमत्र लोका ॥३॥

जो कोई सुपमा आदि अनन्त आरे और उत्सर्पिणी अवसर्पिण आदि विवत (कालचक्र) व्यतीत हो गये, उन सभी समयो मे यह म राज प्रसिद्ध प्रभावनाशील है। इसी को प्राप्त करके तीनो लोक शि (कल्याण) को प्राप्त हो गये।

उत्तिष्ठन् निपतन् चलन्नपि वसन् पीठे लुठन् वा स्मरे-
ज्जाग्रद् वा प्रहसन् स्वपन्नपि वने विभ्यन्विषीदन्नपि ।
गच्छन् वर्त्मनि वेश्मनि प्रतिपद कर्म प्रकुर्वन्नमुं
य पचप्रभुमन्त्रमेकमनिश किं तस्य नो वाञ्छितम् ॥४॥

उठते हुए, गिरते हुए, चलते हुए, ठहरते हुए, आसन पर लेट हुए, जागते हुए, हसते हुए, सोते हुए, वन मे भ्रमण करते हुए, भयकातर होने पर, दु खग्रस्त होने पर, माग मे चलते हुए, घर मे प्रतिपद कर्म करते हुए जो व्यक्ति इस पचप्रभुओ (पचमेष्ठियो) के मन्त्र को निरन्तर जपता है, उसको कौन ऐसा वाञ्छित पदाथ है, जो मिल नही जाता। अर्थात् वह सभी वाञ्छिता को प्राप्त करता है।

सग्राम-सागर करीन्द्र-भुजग सिह-
दुर्व्याधि वह्नि रिपु बन्धनसम्भवानि ।

चौर-ग्रह-भ्रम-निशाचरशाकिनीना
नश्यन्ति पंचपरमेष्ठिपदैर्भयानि ॥५॥

पच परमेष्ठी पदो के स्मरण से सग्राम, सागर, हाथी, सर्प, सिंह, दुष्ट व्याधिया, अग्नि, शत्रु और बन्धन से उत्पन्न होने वाले, चोर ग्रहपीडाजन्य, भ्रमसम्भूत, निशाचर और शाकिनियो के द्वारा उत्पन्न भय नष्ट हो जाते है।

यो लक्षं जिनबद्धलक्ष्यहृदय सुव्यक्तवर्णक्रम
श्रद्धावान् विजितेन्द्रियो भवहर मन्त्र जपेच्छ्रावक ।
पुष्पै श्वेतसुगन्धिभिः सुविधिना लक्षप्रमाणैरमु
य सम्पूजयते स विश्वमहितस्तीर्थाधिनाथो भवेत् ॥६॥

जो जिनेश्वर भगवान् मे हृदयवृत्तियो को एकाग्र करके [illegible] के प्रति श्रद्धावान् होकर वर्णक्रमो का स्पष्टतया उच्चारण [illegible] जितेन्द्रिय श्रावक भव (ससार) का नाश करने वाले पंच [illegible] का जाप करता है और विधिपूवक एक लाख सुगन्धित [illegible] करता है, वह जगत्पूज्य तीर्थंकर हो जाता है।

इन्दुर्दिवाकरतया रविरिन्दुरूप
पातालमम्बरमिला सुरलोक एव ।
कि जल्पितेन बहुना भुवनत्रयेऽपि

जग्मुर्जिनास्तदपवर्गपद तदेव
विश्व वराकमिदमत्र कथ विनास्मात् ।
तत् सर्वलोकभुवनोद्धरणाय धीरै-
र्मन्त्रात्मक जिनवपुर्निहित तवात्र ॥८॥

जिनेन्द्रदेव तो सभी मोक्ष मे चले गये तो फिर यह विश्व बेचारा विना जिनेन्द्रो के किस प्रकार ठहरा हुआ है ? हा, समझ मे आया, धीर व्यक्तियो ने सम्पूर्ण लोको एव भुवनो के उद्धार के लिये यहा पर जिनेन्द्र भगवान् का मन्त्रात्मक शरीर (ही) रख दिया है ।

हिंसावाननृतप्रिय परधनाहर्ता परस्त्रीरत
किंचान्येष्वपि लोकगर्हितमति पापेषु गाढोद्यम ।
मन्त्रेश यदि रास्मरेद्धि सतत प्राणात्यये सर्वदा
दुष्कर्मार्जितदुर्गतिक्षतचय स्वर्गी भवेन्मानव ॥९॥

हिंसा करने वाला, मिथ्या भाषण मे रुचि रखने वाला, पराये धन का अपहारक, परस्त्रीगामी तथा अन्य लोकनिन्दित पापो मे विशेष साहस रखने वाला ऐसा व्यक्ति भी यदि प्राणत्याग के समय मन्त्रराज का जप करे तो समस्त दुष्कर्मजन्य दुर्गतियो का क्षय करके देवपद को प्राप्त करे ।

अय धर्म श्रेयानयमपि च देवो जिनपति
र्व्रत चेतत् श्रीमानयमपि च य सर्वफलद ।
किमन्यैर्वाग्जालैर्बहुभिरपि ससार-जलधौ
नमस्कारात्तत् कि यदिह शुभरूप न भवति ॥१०॥

यह नमस्कार मन्त्रराज ही श्रेयस्कर धर्म है, यही जिनेन्द्रदेव है, यही पवित्र व्रत है, यही श्री से युक्त है, यही सम्पूर्ण फलदाता है, अन्य

वाग्जालो से क्या ? इस ससार रूप समुद्र मे वह क्या है जो इस नमस्कार मत्र से शुभरूप नही हो जाता हो ।

स्वपन् जाग्रत्तिष्ठन्नपि पथि चलन् वेश्मनि सरन्
भ्रमन् क्लिश्यन् माद्यन् वनगिरिसमुद्रेष्ववतरन् ।
नमस्कारान् पच स्मृतिखनिनिखातानिव सदा
प्रशस्तैर्विज्ञप्तानिव वहति य सोऽत्र सुकृती ॥११॥

सोते हुये, जागते हुये, ठहरते हुये, मार्ग मे चलते हुये, घर मे चलते हुये, घूमते हुये, क्लेशदशा मे, मद-अवस्था में, वन-गिरि और समुद्रो मे अवतरण करते हुये, जो व्यक्ति (सुकृती) प्रशस्तो से विज्ञपित किये गये इन नमस्कार मन्त्रो को अपनी स्मृतिरूप खान मे खुदे रखे हुये के समान धारण करता है वह बडा भाग्यशाली (पुण्यवान्) है ।

इति उमास्वामिकृत पचनमस्कारस्तोत्रम्



श्रीमानतुंगाचार्यविरचितं नमस्कारमन्त्रस्तवनम

भत्तिब्भरअमरपणय पणमिय परमिट्ठिपचय सिरसा।
नवकारसारथवण भणामि भव्वाणभयहरणम् ॥१॥

भक्ति-पूवक देवताओ से प्रणाम किये गये पचपरमेष्ठियो व नमस्कार करके भव्य जीवो के भय को हरने वाले नमस्कारसार स्तव को मैं कहता हूँ।

ससिसुविही अरिहंता सिद्धा पउमाभ वासुपुज्जजिणा।
धम्मायरिया सोलस पासो मल्ली उवज्झाया ॥२॥
सुव्वय नेमी साहू दुट्ठारिट्ठस्स नेमिणो धणिय।
मुक्ख खेयरपयविं अरिहंता दिंतु पणयाण ॥३॥

चन्द्रप्रभ और सुविधिनाथ तीर्थंकर भगवान् का अर्हत के रूप मे, पद्मप्रभ और वासुपूज्य भगवान् का सिद्ध के रूप मे ध्याना चाहिये तथा ऋषभ-अजित–सम्भव–अभिनन्दन–सुमति-सुपार्श्व-शीतल-श्रेयास-विमल अनत धर्म-शाति-कुन्थु-अर-नमि-महावीर इन सोलह का आचार्य के रूप मे तथा मल्ली और पार्श्वनाथ का उपाध्याय के रूप म ध्यान करना चाहिय। मुनिसुव्रत और नेमिनाथ तीर्थंकरो का साधुस्थान में ध्यान करना चाहिये। साधु दुष्ट अरिष्ट (आपत्तियो) के नाश करने में चक्रधारा के समान होते है। अर्हन्त प्रणतजनो के लिए मोक्ष एव खेचर पदवी को प्रदान करे।

॥ मोह सिद्धा कुणतु भुवणस्स ।
स पयत्थ थभतु आयरिया ॥४॥
ो लोक का वशीकरण करे और ससार का
आदि (जल, ज्वलन, विषधर, चोर, शत्रु,
शाकिनी-डाकिनी-राकिनी-लाकिनी-छाकिनी,
स्तम्भन करे ।

उवज्झाया हुतु सव्वभयहरणा ।
निउणा साहू सया सरह ॥५॥
ाभ करने वाले उपाध्याय समस्त भयो को
ानो । साधु पाप के उच्चाटन, मारण आदिक
।

गयण सिद्धाय सूरिणो जलणो ।
वणो मुणिणो हरन्तु दुहम् ॥६॥
भगवान् का ध्यान करना चाहिये, आकाश-
व मे आचार्यो का और तैजसतत्व मे उपा-
मे मुनियो का ध्यान करना चाहिये । इस
ये पाचो परमेष्ठी हमारे दु खो का नाश करने

रत्ता सिद्धा य सूरिणो कणया ।
सामा साहू सुहं ।
उज्ज्वल वर्ण ध्यान
ों, उपाध्याय म
र्गवर्ण)
मेष्ठी है

तियलोयवसीयरणं मोहं सिद्धा कुणतु भुवणस्स ।
जल जलणाए सोलस पयत्थ थभतु आयरिया ॥४॥

सिद्ध भगवान् तीनो लोक का वशीकरण करें और ससार का मोहन करें। आचार्य जल आदि (जल, ज्वलन, विषधर, चोर, शत्रु, सिंह, सर्प, भय, सग्राम, शाकिनी-डाकिनी-राकिनी-लाकिनी-छाकिनी, हाकिनी) इन सोलह का स्तम्भन करें।

इहलोइयलाभकरा उवज्झाया हुतु सव्वभयहरणा ।
पावुच्चाडण-ताडणनिउणा साहू सया सरह ॥५॥

इह लोक के लिए लाभ करने वाले उपाध्याय समस्त भयो को हरने वाले हो। हे भव्यजनो ! साधु पाप के उच्चाटन, मारण आदिक कर्मों मे सदा सहायक हो।

महिमंडलमरहन्ता गयणं सिद्धाय सूरिणो जलणो ।
वरसंवरसुवज्झाया पवणो मुणिणो हरन्तु दुहम् ॥६॥

पृथ्वीतत्व मे अर्हन्त भगवान् का ध्यान करना चाहिये, आकाशतत्व मे सिद्धो का, जलतत्व मे आचार्यो का और तैजसतत्व मे उपाध्यायो का तथा पवनतत्व मे मुनियो का ध्यान करना चाहिये। इस प्रकार से ध्यान करने पर ये पाचो परमेष्ठी हमारे दुःखो का नाश करने वाले हो।

ससिधवला अरहंता रत्ता सिद्धा य सूरिणो कणया ।
मरगयभा उवज्झाया सामा साहू सुहं दिंतु ॥७॥

अर्हन्तो का चन्द्रसमान उज्ज्वल वर्ण ध्यान करना चाहिए, सिद्धो का रक्तवर्ण, आचार्य कनकवर्ण, उपाध्याय मरकतमणिसदृश नीलवर्ण और साधुओ का श्यामवर्ण (कृष्णवर्ण) ध्यान करना चाहिये। इस प्रकार से ध्यान करने पर ये पचपरमेष्ठी हमें कल्याणदायक हो।

तियलोयवसीयरण मोहं सिद्धा कुणतु भुवणस्स ।
जल-जलणए सोलस पयत्थ थभतु आयरिया ॥४॥

सिद्ध भगवान् तीनो लोक का वशीकरण करें और ससार का मोहन करे। आचार्य जल आदि (जल, ज्वलन, विषधर, चोर, शत्रु, सिंह, सर्प, भय, सग्राम, शाकिनी-डाकिनी-राकिनी-लाकिनी-छाकिनी, हाकिनी) इन सोलह का स्तम्भन करे।

इहलोइयलाभकरा उवज्झाया हुतु सव्वभयहरणा ।
पावुच्चाडण-ताडणनिउणा साहू सया सरह ॥५॥

इह लोक के लिए लाभ करने वाले उपाध्याय समस्त भयो को हरने वाले हो। हे भव्यजनो! साधु पाप के उच्चाटन, मारण आदिक कर्मों मे सदा सहायक हो।

महिमण्डलमरहन्ता गयण सिद्धाय सूरिणो जलणो ।
वरसंवरमुत्रझाया पवणो मुणिणो हरन्तु दुहम् ॥६॥

पृथ्वीतत्व मे अर्हन्त भगवान् का ध्यान करना चाहिये, आकाशतत्व मे सिद्धो का, जलतत्व मे आचार्यो का और तैजसतत्व मे उपाध्यायो का तथा पवनतत्व मे मुनियो का ध्यान करना चाहिये। इस प्रकार से ध्यान करने पर ये पाचो परमेष्ठी हमारे दुःखो का नाश करने वाले हो।

ससिधवला अरहता रत्ता सिद्धा य सूरिणो कणया ।
मरगयभा उवज्झाया सामा साहू सुहं दिंतु ॥७॥

अर्हन्तो का चन्द्रसमान उज्ज्वल वर्ण ध्यान करना चाहिए, सिद्धो का रक्तवर्ण, आचार्य कनकवर्ण, उपाध्याय मरकतमणिसदृश नीलवर्ण और साधुओ का श्यामवर्ण (कृष्णवर्ण) ध्यान करना चाहिये। इस प्रकार से ध्यान करने पर ये पचपरमेष्ठी हमें कल्याणदायक हो।

सीसत्था अरहता सिद्धा वयणम्मि सूरिणो कंठे।
हिययम्मि उवज्झाया चरणठिया साहुणो वंदे ॥८॥

अर्हन्तो को शिरस्थ ध्यान करना चाहिये, मुख में सिद्धो का, कण्ठ में सूरियो (आचार्यो) का, हृदय में उपाध्यायो का और चरण-प्रदेश में साधुओ का ध्यान करना चाहिये। इस प्रकार ध्यान किये गये इन पाचो परमेष्ठियो को हमारी वन्दना हो।

अरिहता असरीरा आयरिया उवज्झाय तहा मुणिणो।
पचक्खरनिप्पन्नो ओंकारो पंचपरमेट्ठी ॥९॥

अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि इनके पचाक्षरो से निष्पन्न ओकार ही पचपरमेष्ठी है।

वट्टकला अरिहता तिउणा सिद्धा य लोढकल सूरी।
उवज्झाया सुद्धकला दीहकला साहुणो सुहया ॥१०॥

वर्तुल (गोल) आकारयुक्त अर्हन्त, त्रिकोणाकार सिद्ध, लोष्टक-आकारधारी आचार्य, द्वितीया के चन्द्र की कला के समान आकार-धारी उपाध्याय, दीर्घकला (प्रलम्बकला) के आकारधारी साधु ध्यान करने वालो के लिये सुखकारी हो।

पुंसित्थि-नपुंसय-रायपुरिस-वहुसद्दवण्णणिज्जाणं।
जिण-सिद्ध-सूरि-वायग-साहूणकमे णमसामि ॥११॥

पुरुषाशक अर्हन्त, नारीअशक सिद्ध, नपुसकाशक आचार्य, राजपुरुषाशक उपाध्याय और श्राद्धजनाशक साधुओ को मैं नमस्कार करता हूँ।

पढम-दुसरारिहता चउस्सरा सिद्ध-सूरि-उवज्झाया।
दुग-दुगस्सरा कमेण वदन्तु मुनीसरा दुसरा ॥१२॥

प्रथम द्विस्वर (अ-आ) रूप अर्हन्त होते हैं। इ-ई-उ-ऊ इन चतु स्वर रूप सिद्ध होते है। आचार्य ए-ऐ रूप होते है। ओ-औ रूप उपाध्याय होते हैं। इस प्रकार ये दो दो स्वर वाले अर्हन्त आदिक तथा द्विस्वर अ-अ रूप मुनीश्वर जयशाली हो।

ते पुण अएकचटतपयस त्ति नववग्ग वन्न पणयाला।
परमिट्ठिमण्डलकमा पढमतिमतुरियतियवीया ॥१३॥

वे वर्ण अ-ए-क-च-ट-त-प-य-स इस प्रकार नव वर्गों मे विभक्त ४५ अक्षर होते हैं। वे परमेष्ठीमडल क्रमानुक्रम से प्रथम, अन्तिम, चतुर्थ, तृतीय और द्वितीय होते है।

ससिसुक्के अरिहते रविमगल सिद्ध गुरु-बुहा सूरी।
सरह उवज्झाय केऊ कमेण साहू सणी राहू ॥१४॥

अर्हन्त भगवान् चन्द्र और शुक्र के, सिद्ध सूर्य और मङ्गल के, आचाय गुरु (बृहस्पति) और बुध के, उपाध्याय केतु के और साधु शनि और राहु के रूप मे स्मरण करने योग्य हे।

वण्णनिवहो कणाई जेसि वीओ हकारपज्जतो।
नियनियसरसजोगा सरेमि चूडामणि तेहि ॥१५॥

जिन अर्हन्त आदिको का ककार से लेकर हकार पर्यन्त वर्णसमूह बीज है, अपने अपने स्वर के सयोग से उनकी चूडामणि को मैं स्मरण करता हूं।

सेयारुणपीयपियगुवन्न कसिणाइ विडवित्तपाई।
अथिल-महु-तिक्ख-कसाय-कडुय परमिट्ठिणो वदे ॥१६॥

अर्हन्त आदिको का क्रम से वर्णध्यान इस प्रकार करना चाहिए— अर्हन्त श्वेत, सिद्ध अरुण, आचार्य पीत, प्रियगु (नीलवर्ण वृक्ष) के

समान उपाध्याय और वृक्षपत्रों के समान साधुओं का ध्यान कर
चाहिए तथा अम्ल, मधुर, तिक्त, कषाय और कटु इस पच रस ह
परमेष्ठियों की वन्दना करनी चाहिए।

पुव्वाणुपुव्विहिट्ठा समयाभेएण कुरु जहाजिट्ठ।
उवरिमतुल्ल पुरओ निसिज्ज पुव्वक्कमो सेसो ॥१७॥
जम्मिय निक्खित्ते खलु सोचेव हविज्ज अकविन्नासो
सो होई समयभेओ वज्जेयव्वो पयत्तेण ॥१८॥
इच्छियपय अकाण नासऽभासो य भंगपरिमाण।
अतऊभागलद्ध ठवियका पुण पुणुद्धरिय ॥१६॥

मूलगपतिदुगेण अको जो ठविय दुन्नि जे अका।
तेसि दुभगे काउ निसिज्ज कमक्कमेण तु ॥२०॥[1]

नंदा तिहि अरिहंता भद्दा सिद्धा य सूरिणो य जया।
तिहि रित्ता उवझाया पुण्णा साहू सुह दिंतु ॥२१॥

अर्हन्तों का ध्यान नन्दा तिथि में, सिद्धों का भद्रातिथि में, आचार्यों का जयातिथि में, उपाध्यायों का रिक्ता तिथि में तथा साधुओं का पूर्णातिथि में ध्यान करना चाहिए। ये पच परमेष्ठी मुझे सदा सुख दें।

१—गाथा न० १७-१८-१६-२० इन चारों गाथाओं का अर्थ ठीक तरह समझ में नहीं आ सका। अत विद्वान् इनका अर्थ निकालने का प्रयत्न करें। यदि हमें भी अर्थ भेज सकें तो हम उनके आभारी रहेंगे और अगले सस्करण में इन गाथाओं का अर्थ दे देंगे—स०

ससि-मंगल अरिहंता बुहो य सिद्धा य सुरगुरू सूरी।
सुक्को उवझाय पुणो साहू मदो सुहं भाणु ॥२२॥

सोम-मगलवारो को अर्हन्तो का, बुधवार को सिद्धो का, वृहस्पतिवार को आचार्यों का, शुक्रवार को उपाध्यायो का और रविवार तथा शनिवार को साधुओ का ध्यान करने पर वे सुखप्रद होते हैं।

कत्तिय-चित्तो अरिहा वइसाहो-मग्गमास सिद्धा य।
पोसो-जिट्ठो-भद्दव-आसोआ सूरिणो सुहया ॥२३॥
माहासाढुज्झाया फग्गुणमासो य सावणो साहू।
मह मगलमरिहता अचितचितामणी दिंतु ॥२४॥

अर्हन्तो का ध्यान कार्तिक और चैत्र में, सिद्धो का ध्यान वैशाख और मार्गशीर्ष में, आचार्यों का पौष, ज्येष्ठ, भाद्रपद और आश्विन में, उपाध्यायो का माघ और आषाढ मासो मे तथा साधुओ का फाल्गुन एव श्रावण मास मे ध्यान करना चाहिए। अचिन्त्यचिन्तामणि भगवान् अर्हन्त मेरा कल्याण करे।

पु सयरा अरहंता घणिट्ठापंचगा य सिद्धा य।
दिगुरिक्खा आयरिया णमामि सिरसा य भत्तीए ॥२५॥
आद्दाई जे रिक्खा उवझाया तेसि दिंतु गुणनिवह।
चित्ता साई साहू सासयसुक्ख महं दिंतु ॥२६॥

अर्हन्त पुण्य नक्षत्र हैं, घनिष्ठापचक सिद्ध हैं, आचार्य द्विगु नक्षत्र हैं, उन्हें मैं भक्तिपूर्वक सिर झुकाकर नमस्कार करता हूँ। आर्द्रा आदि जो नक्षत्र हैं वे उपाध्याय है। वे मुझे अनेक गुणो को प्रदान करे। चित्रा और स्वाति नक्षत्र साधु स्वरूप है। ये मुझे शाश्वत सुख प्रदान करें।

कुम्भ कन्ना मिस अरिहा मेसो मयरो य अतिणो सिद्धा।
धचापाण श्रलि सूरी धणु मिहुणोज्झाअया वदे ॥२७॥
कक्कडतुला य साहू दोहद रासी य पचपरमिट्ठी।
भाविया थुणमाणो पावइ सुक्ख च मुक्ख च ॥२८॥

कुम्भ, कन्या और वृष राशि रूप अर्हन्त, मेष, मकर और मीन रूप सिद्ध भगवान्, सिंह तथा वृश्चिक रूप आचार्य, धनु और मिथुन रूप उपाध्याय हैं, उन्हें नमस्कार हो। कर्क और तुला स्वरूप साधु इस प्रकार द्वादश राशिस्वरूप पचपरमेष्ठी मेरे द्वारा स्तुति किये गए सुख और मुक्ति के दायक हो।

त नत्थि ज न इत्थ निमित्तगहगणियमततताई।
ज पत्थिय पयच्छइ कहेइ ज पुच्छिय सयल ॥२९॥

इसलिए ग्रहगणित और मन्त्रतन्त्रादि इसके निमित्त नहीं है। इस पचपरमेष्ठीस्तवन से जो मागा जाता है, सो देता है और जो पूछा जाता है सो कहता है।

तिहुयणसामिणिविज्जा महमन्तो मूलमततत्तिय।
इत्थ ठिय पि न नज्जइ गुरुवएस विणा सम्म ॥३०॥

मूल-मन्त्र और तन्त्र इस प्रकार तीन रूप महान् त्रिभुवनस्वामिनी विद्या यहा स्थित होते हुए भी गुरुउपदेश विना प्राप्त नहीं की जासकती।

सुमरियमित्ता पि इम तरा नासेइ सयलदुरियाइ।
पारम्परेण नाय रा नत्थि सुह न ज कुणइ ॥३१॥

यह पचपरमेष्ठी स्तोत्र स्मरण मात्र से सम्पूर्ण पापो का नाश कर देता है और ससार मे ऐसा कोई सुख नही है जिसे परम्परा से प्राप्त न किया जा सके।

पचनवकारतत्तं लेसेण संसिअ अणुहवेणम् ।
सिरिमाणतु गमाहिंदमुज्जवल सिवसुहं दितु ॥३२॥

पच नमस्कार मन्त्र का तत्व श्रीमानतुङ्गाचार्य ने अपने अनुभव के आधार पर सक्षेप मे कहा है। वह मन्त्र मुझे विशुद्ध मोक्ष-सुख दे।

सभरह पढह झायह णिच्चा घोम्नेह णत्रह अरहाई
भद्दपयं जइ इच्छह तस्सेव य अत्तणो णाणा ॥३३॥

जो इस नवपदी णमोकार मन्त्र का स्मरण करता है, पढता है, नित्य ध्यान करता है और उच्चारण करता है वह अपना कल्याण करता है और आत्मज्ञान प्राप्त कर लेता है।

न हि उवसग्गा पीडा कूरग्गहदंसण भओ संका ।
जइ वि न हवति एए तो वि तिसभं भणिज्जासु ॥३४॥

इस नवपदी नमस्कार मन्त्र के पाठ से न तो उपसर्ग किसी प्रकार की पीडा देते है, न क्रूर ग्रहो का दर्शन होता है और न ससार-परिभ्रमण की बहुशका रहती है। यद्यपि एक बार नमस्कारमन्त्र के जाप से ये बाधाए नही होती, तथापि इसका त्रिकाल पाठ करना चाहिए।

एसो परमरहस्सो परमो मतो इमो तिहुअणम्मि ।
ता किमिह वहुविहेहिं पढिएहिं पुत्थयसएहिं ॥३५॥

तीनो भुवनो मे यह नमस्कारमन्त्र परम रहस्य है, परम मन्त्र है, सो अधिक पढने और पुस्तकभार उठाने से क्या लाभ है। अर्थात् केवल णमोकार मन्त्र से ही सर्व सिद्धि हो जाती हैं।

ॐ ह्रा णमो अरहताण। ह्रीं णमो सिद्धाणं। ह्रू णमो आइरियाण। ह्रौं णमो उवज्झायाण। ह्र णमो सव्वसाहूणं।

इति पचबीजानि।

अथ श्रीपचपरमेष्ठिमन्त्रप्रभावफलं लिख्यते।

पण तीस सोल छप्पण चदु दुगमेक च जवह झाएह।
परमेट्ठिवाचयाण अण्ण च गुरुवदेसेण ॥१॥
णमो अरहताण। णमो सिद्धाण। णमो आइरियाण।
णमो उवज्झायाण। णमो लोए सव्वसाहूण।

अपराजितमन्त्रोऽयम्।

दर्शनज्ञानचारित्रतपासि परिचिन्तयन्।
श्रियमात्यन्तिकीं प्राप्ता योगिनो येऽत्र केचन ॥१॥
अमुमेव महामन्त्र ते समाराध्य केवलम्।
प्रभावमस्य निश्शेष योगिनामप्यगोचर ॥२॥

इस अपराजितमन्त्र के द्वारा दर्शन, ज्ञान और चारित्र का पालन करते हुए इस ससार मे जो कोई योगिजन आत्यन्तिक श्री को प्राप्त हुए है, वे सभी इसी मन्त्र के समाराधन और प्रभाव से हुए हैं। इस अपराजितमन्त्र का सम्पूर्ण रूप से प्रभाव वर्णन करना योगियों के लिए भी असम्भव ही है।

अनभिज्ञो जनो ब्रूते य स मन्येऽनिलार्दित।
अनेनैव विशुद्ध्यन्ति जन्तव पापपङ्किला ॥३॥

इस अपराजित मन्त्र के विषय मे जो अनभिज्ञ (अजान) व्यक्ति कुछ बोलने (माहात्म्यख्यापन करने) का साहस करता है, मानो वह वातरोग से पीडित है। ससार मे पाप के पक मे लिप्त मनुष्य इसी से विशुद्धि को प्राप्त करते हैं।

अनेनेव विमुच्यन्ते भवक्लेशान्मनीषिण ।
असावेव जगत्यस्मिन् भवविध्वसबान्धव ॥४॥

प्रशस्त मन वाले विद्वान् इसी मन्त्र से ससार के बन्ध से मुक्ति को प्राप्त करते हैं। यही इस ससार मे मुक्तिमार्ग का सखा है।

अमु विहाय सत्वाना नान्य कश्चित् कृपाकर ।
पतद् व्यसन पाताले भ्रमत्ससार-सागरे ॥५॥
अनेनेव जगत् सर्वमुद्धृत्य विधृत शिवे ।
शतमष्टोत्तरं चास्य त्रिशुद्ध्या चिन्तयेन्मुनि ॥६॥

इसको छोडके प्राणियो के लिये अन्य कोई कृपाकर नही है। ससार-सागर मे डूबते हुये हो या व्यसन के पाताल-विवर मे प्रवेश करते हुए हो, इसी मन्त्रराज के द्वारा सभी का उद्धार हो जाता है और वे कल्याण-मार्ग पर इसी से स्थित होते है। मुनि को इसकी १०८ जाप्य त्रिशुद्धि (मन, वचन, काय) मे करनी चाहिए।

भु जानोऽपि चतुर्थस्य प्राप्नोति विकल फलम् ।
स्मरन्मन्त्रपदोद्भूता महाविद्या जगोन्नताम् (?) ॥७॥
गुरुपचकनामोच्छ्रपोडशाक्षरराजिताम् ।
अर्हम् सिद्धोपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम ॥८॥

ससार भर मे उन्नत, मन्त्र पद से उत्पन्न इस श्रेष्ठ महाविद्या को स्मरण करने वाला भोजन करता हुआ भी इस मन्त्र के जाप्य से

आत्मिक फल को प्राप्त कर देता है। इसी में पाँचों गुरु (पञ्चपरमेष्ठी) समाये हुए हैं, यह सोलह अक्षरों से युक्त है। भगवान् अर्हन्त, सिद्ध, उपाध्याय और सभी साधुओं को नमस्कार है।

अस्याः शतद्वयं ध्यानी जपेदेकाग्रमानसः ।
अनिच्छन्नप्यवाप्नोति चैकोपोषणजं फलं ॥९॥

ध्यान करने वाले को इसका दो सौ बार जाप्य से ध्यान करना चाहिए। ऐसा विधिपूर्वक जाप्य करने वाला बिना इच्छा रखते हुए भी (मन्त्र की अमोघवीयता के कारण) एक उपवास का फल तो प्राप्त करता ही है।

विद्यां षड्वर्गसम्भूतामजेयां पुण्यशालिनीं ।
जपन् प्रागुक्तमभ्येति फलं ध्यानी शतत्रयम् ॥१०॥

षड्वर्ग से उत्पन्न हुई, अजेय और पुण्यशालिनी इस विद्या के तीन सौ जाप्य करने से ध्यान करने वाला पूर्वोक्त (एकोपवास) फल को प्राप्त करता है।

अर्हन्मंत्रं चतुर्वर्णं चतुर्वर्गफलप्रदम् ।
चतुःशतीं जपन् योगी चतुर्थस्य फलं लभेत् ॥११॥

भगवान् अर्हन्त, सिद्ध, उपाध्याय और साधु रूप चतुर्वर्ण यह मंत्र चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का फल प्रदान करने वाला है। इसका चार सौ संख्याप्रमाण जाप्य करने से योगी (भव्यजन) मोक्ष-फल को प्राप्त करता है।

अर्हन्त अवर्णस्य सहस्रार्द्धम् जपन्नानन्दसंभृतः ।
प्राप्नोत्येकोपवासस्य निर्जरां निर्जराशयः ॥१२॥

अर्हन्त भगवान् के अ—वर्ग के सहस्रवे भाग का आवा भी आनन्दयुक्त मन से जो जाप्य करता है, वह एकोपवास की निर्जरा को पाता है।

पचवर्णमयी विद्या पंचतत्वोपलक्षिता।
मुनिवीरै श्रुतस्कन्धाद् बीजबुद्ध्या समुद्धृता ॥१३॥

इस पचवर्णमयी और पचतत्वो मे उपलक्षित विद्या का वीर मुनियो ने श्रुत के स्कन्धो से बीज के समान मानकर उद्धार किया है।

असिआउसा नम ।

एतद्धि कथित शास्त्रे रुचिमात्रप्रसाधकम्।
किंचामीषा फलं सम्यक् स्वर्गमोक्षकलक्षणम् ॥१४॥

असिआउसा नम । शास्त्र मे इसे सभी इच्छाओ का पूर्ण करने वाला कहा है। और इसके फल के रूप मे स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति का बखान किया है।

सिद्धम्। एकाक्षर पचपरमेष्ठिनामपरम्। उक्तं च।

सिद्ध, यह एकाक्षर पाचो परमेष्ठियो के नाम का वाचक है। कहा भी है—

अरहंता असरीरा आयरिया तह उवज्झाया मुणिणो।
पणमक्खरनिप्पण्णो ॐकारो पचपरमेट्ठि ॥१५॥

अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनियो के प्रथमाक्षर से निष्पन्न ॐकार यह पचपरमेष्ठी है।

इहलोकपरलोकेष्टफलप्रदानार्थं ज्ञात्वा वचनोच्चारण जाप्य कुरुत। तथैव शुभोपयोग-त्रिगुप्त्यवस्थायां मौनेन, ध्यायत ॥१॥

इस पंच परमेष्ठी मन्त्र को इहलोक और परलोक में इष्टफल का प्रदाता जानकर वचन के उच्चारण से जाप्य करते रहना चाहिए। और शुभोपयोग और मन-वचन-काय-गुप्ति की अवस्था में मौनपूर्वक इसका ध्यान करना चाहिये।



अथ वज्रपंजरस्तोत्रम्

परमेष्ठिनमस्कार सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकर वज्रपजरास्यं स्मराम्यहम् ॥१॥

परमेष्ठी नमस्कार मन्त्र नवपदात्मक है और सभी मन्त्रो का सारभूत है। यह आत्मा की रक्षा करने वाला है। इस वज्रपजर स्तोत्र का मैं स्मरण करता हू।

ॐ णमो अरहंताण शिरस्कन्धरसस्थितम् ।
ॐ णमो सिद्धाणं मुखे मुखपटाम्बरम् ॥२॥
ॐ णमो आयरियाण अग रक्षति साधिनाम् ।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधे हस्तयोर्द्धयो॰ ॥३॥
ॐ णमो लोए सव्वसाहूण मोचके पादयो॰ शुभे ।
एसो पच णमोकारो शालिवज्रमयस्तले ॥४॥
सव्वपापप्पणासणो वज्रो वज्रमयो बहि॰ ।
मगलाणं च सव्वेसि खदिरागारखातिकाम् ॥५॥
स्वाहान्त च पदं ज्ञेय पढम हवइ मगलम् ।
वप्रोपरि वज्रमय पिधान देहिरक्षणम् ॥६॥
महाप्रभावरक्षेयं क्षुद्रोपद्रवनाशिनी ।
परमेष्ठिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभि॰ ॥७॥

यश्चैना कुरुते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा ।
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥८॥

ॐ णमो अरहन्ताणं यह शिर और मस्तक की रक्षा करे। ॐ णमो सिद्धाणं यह मुख और मुखपटाम्बर की रक्षा करे। ॐ णमो आयरियाणं यह साधकों की अंग-रक्षा करता है। ॐ णमो उवज्झायाणं यह दोनों हाथों की रक्षा करे, आयुधों की रक्षा करे। ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं चरणों की रक्षा करें। यह पंच नवकार दोनों पगों में शालिवज्र के समान हैं। सव्वपावप्पणासणो यह बाहर वज्रमय है और मंगलाणं च सव्वेसिं खदिर की अग्नि के लिए खाई के समान है। पढमं हवइ मंगलम् यह स्वाहान्त पद जानना चाहिए। यह वज्रपंजर देहधारियों के शरीर पर वज्रमय पिधान (आवरण) है। यह महा प्रभावमयी रक्षा है। क्षुद्र उपद्रवों का नाशक है। परमेष्ठियों के पद से उत्पन्न है और पूर्वाचार्यों द्वारा कहा गया है। जो परमेष्ठी पदों से इसकी रक्षा करता है, उसे कोई भय, व्याधि और आधि नहीं होती।

अथ भस्मपंजरस्तवराजो लिख्यते ।

परमेष्ठिनमस्कारं सारं नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्रपंजराभं स्मराम्यहम् ॥१॥
ॐ णमो अरहंताणं शिरस्कन्धरसंस्थितम् ।
ॐ णमो सिद्धाणं मुखे मुखपटाम्बरम् ॥२॥
ॐ णमो आइरियाणं अंगरक्षातिशायिनी ।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥
ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंच णमोक्कारो शिला वज्रमयी तले ॥४॥

सव्वपापप्पणासणो वप्रो वज्रमयो वहि ।
मंगलाण च सव्वेसि खदिरागारखातिका ॥५॥
स्वाहान्त च पद ज्ञेय पढम हवइ मगलम् ।
वप्रोपरि वज्रमयं पिधान देहरक्षणे ॥६॥
महाप्रभावरक्षेय क्षुद्रोपद्रवनाशिनी ।
परमेष्ठिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभि ॥७॥
यश्चैन कुरुते रक्षां परमेष्ठिपदै सदा ।
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥८॥

(यह वज्रपजर के समान ही है। इसलिए इसका अर्थ वज्रपजर-स्तोत्र के समान ही जानना चाहिए।)

इति श्रीभस्मपजरस्तोत्र सवआधिव्याधिहर समाप्तम् ।

अथ जिनपंजरस्तोत्र लिख्यते ।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नम ।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नम ।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नम ।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नम ।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीगौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो
नमो नम

एप पचनमस्कार सर्वपापक्षयकर ।
मगलाना च सर्वेषा प्रथम भवति मगलम् ॥१॥

ॐ ह्री श्री अर्हं, अर्हन्त भगवान् को नमस्कार हो ।
ॐ ह्री श्री अर्हं, सिद्ध भगवान् को नमस्कार हो ।
ॐ ह्री श्री अर्हं, आचार्यो को नमस्कार हो ।
ॐ ह्री श्री अर्हं, उपाध्यायो को नमस्कार हो ।
ॐ ह्री श्री अर्ह, श्रीगौतमस्वामी प्रमुख सभी साधुओ को नमस्कार हो ।

यह पचनमस्कार मन्त्र सभी पापा का क्षय करने वाला है । सभी मगलो मे यह प्रथम (आद्य) मगल है ,

ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मने नम ।
कमलप्रभसूरीन्द्रभाषित जिनपजरम् ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हन्त भगवान् को नमस्कार है। कमल-प्रभ सूरीन्द्र ने इस जिनपंजर स्तोत्र को कहा है।

एकभुक्तोपवासेन त्रिकालं यः पठेदिदम्।
मनोऽभिलाषितं सर्वं फलं स लभते ध्रुवम् ॥३॥

प्रतिदिन एक समय भोजन करके जो इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह निश्चय ही मन की अभिलाषाओं के अनुकूल इच्छित फल पाता है।

भूशायी ब्रह्मचर्येण क्रोधलोभविवर्जितः।
देवताग्रे पवित्रात्मा षण्मासैर्लभते फलम् ॥४॥

साधक पृथ्वी पर शयन करे, ब्रह्मचर्यव्रत धारण करे, क्रोध और लोभ का परित्याग करे। देवता के आगे पवित्र मन, वचन, काय से रहे तो छः मासों में फल को प्राप्त करता है।

अर्हन् स्थापयेन्मूर्ध्नि सिद्धं चक्षुर्ललाटके।
आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये उपाध्यायन्तु नासिके ॥५॥
साधुवृन्दं मुखस्याग्रे मनःशुद्धिं विधाय च।
सूर्यचन्द्रनिरोधेन सुधीः सर्वार्थ-सिद्धये ॥६॥

अर्हन्त भगवान् को मस्तक पर स्थापित करे, सिद्ध भगवान् को चक्षु और ललाट में, आचार्य को दोनों कानों के मध्य भाग में, उपाध्याय को नासिका में, साधुओं को मुख के अग्रभाग में भावनापूर्वक धारण करे। मन की शुद्धि रखे। सूर्य और चन्द्र का निरोध करे अर्थात् अपने श्वासोच्छ्वासों में जो दो दक्षिण और वाम स्वर हैं, उनमें एक सूर्य और दूसरा चन्द्र कहा जाता है, मन का योगीजन सदैव नियमन करते हैं और वाञ्छित सिद्धि को प्राप्त करते हैं। साधक को चाहिए कि वह भी साधना के समय इन दोनों स्वरों की साधना भी रखे।

दक्षिणे मदनद्वेषी वामपार्श्वे स्थितो जिन ।
अगसन्धिषु सर्वज्ञ परमेष्ठी शिवकर ॥७॥

दक्षिण अग मे कामदेव मे द्वेष अर्थात् वीतरागता रखने वा भगवान् के स्वरूप का ध्यान करे। वामपार्श्व मे जिनेन्द्र भगवान् ध्यान करे। सभी अगसन्धियो मे कल्याण करने वाले भगवान् परम की स्थिति का चिन्तन करे।

पूर्वस्या जिनो रक्षेद् आग्नेय्या विजितेन्द्रिय ।
दक्षिणस्या परब्रह्म नैऋत्या च त्रिकालवित् ॥८॥

पूर्वदिशा मे जिन भगवान्, आग्नेय दिक्कोण मे विजितेन्द्रिय दक्षिण मे परब्रह्म और नैऋत्य मे त्रिकालवित् भगवान् रक्षा करें।

पश्चिमाया जगन्नाथो वायव्ये परमेश्वर ।
उत्तरा तीर्थकृत् सर्व ईशाने च निरजन ॥९॥

पश्चिम मे जगन्नाथ रक्षा करें, वायव्य मे परमेश्वर रक्षा कर उत्तर दिशा मे तीर्थकृत् (तीर्थंकर) रक्षा करें। और ईशान मे निरज रक्षा करें।

पाताले भगवानर्हन्नाकाशे पुरुषोत्तम ।
रोहिणीप्रमुखा देव्यो रक्षन्तु सकल कुलम् ॥१०॥

पाताल में भगवान् अर्हत रक्षा करे। आकाश मे पुरुषोत्तम रक्षा करें। रोहिणी प्रमुख देविया सकल कुल की रक्षा करें।

ऋषभो मस्तक रक्षेद् अजितोऽपि विलोचने।
सम्भव कर्णयुगले नासिका चाभिनन्दन ॥११॥

भगवान् ऋषभ मस्तक की रक्षा कर। अजितनाथ भगवान्

ोचना की रक्षा करे। सम्भवनाथ दोनो कानो की रक्षा करे तथा अभिनन्दन नासिका की रक्षा करे।

ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेत् दन्तान् पद्मप्रभो विभु ।
जिह्वा सुपार्श्वदेवोऽयं तालु चन्द्रप्रभाभिध ॥१२॥

मेरे ओठो की श्रीसुमतिनाथ रक्षा करे, दन्तो की पद्मप्रभ विभु रक्षा करे, जिह्वा की सुपाश्वदेव रक्षा करे। तालु की चन्द्रप्रभ नामक तीर्थंकर रक्षा करे।

कंठ श्रीसुविधि रक्षेद् हृदय श्रीसुशीतल ।
श्रेयासो बाहुयुगल वासुपूज्य करद्वयम् ॥१३॥

मेरे कण्ठ की श्रीसुविधि रक्षा करे, हृदय की श्रीसुशीतल रक्षा करें, श्रेयास दोनो बाहुओ की रक्षा करे और वासुपूज्य मेरे दोनो हाथो की रक्षा करें।

अगुलि विमलो रक्षेद् अनन्तो सौनखानपि ।
श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि श्रीशान्तिर्नाभिमण्डलम् ॥१४॥

विमलनाथ भगवान् अगुलियो की रक्षा करें, अनन्तनाथ नखो की रक्षा करे, श्रीधर्मनाथ भगवान् उदर की अस्थियो की तथा शान्तिनाथजी नाभिमण्डल की रक्षा करे।

श्रीकुन्थो गुह्यकं रक्षेद् अरो रोमकटीतटे।
मल्लिरुरू पृष्ठिवशं पिडिका मुनिसुव्रत ॥१५॥

श्रीकुन्थुनाथ गुह्य की रक्षा करे, भगवान् अरनाथ रोम और कटीतट की रक्षा करे, मल्लिनाथ भगवान् उरू की तथा पीठ की रक्षा करें। मुनिसुव्रत पिण्डलियो की रक्षा करे।

पादागुलीर्नमी रक्षेद् श्रीनेमिश्चरणद्वयम् ।
श्रीपार्श्वनाथ सर्वांग वर्द्धमानश्चिदात्मकम् ॥१६॥

नमिनाथ पैरो की अगुलियो की रक्षा करें, श्रीनेमिनाथ दो
नरगो की रक्षा करें। श्रीपार्श्वनाथ सारे अग की रक्षा करें, वर्द्धमान
श्रीमहावीर भगवान् चतन्य स्वरूप आत्मा की रक्षा करें।

पृथिवीजलतेजस्कवाय्वाकाशमय जगत् ।
रक्षे दशेषपापेभ्यो वीतरागो निरजन ॥१७॥

पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश रूप जगत् की सभी प्रकार
पापो से वीतराग निरजन भगवान् रक्षा करें।

राजद्वारे श्मशाने च सग्रामे शत्रुसकटे ।
व्याघ्रचौरादिसर्पादिभूतप्रेतभयाश्रिते ॥१८॥
अकाले मरणे प्राप्ते दारिद्र्यापत्समाश्रिते ।
अपुत्रत्वे महादु खे मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥१९॥
डाकिनीशाकिनीग्रस्ते महाग्रहगणार्दिते ।
नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये व्यसने चापदि स्मरेत् ॥२०॥

राजा के द्वार पर, श्मशान मे सग्राम मे शत्रु से सकट होने पर,
शेर, चोर, सर्प, भूत, प्रेत आदि से भय होने पर अकाल मे मृत्यु को
प्राप्त करते समय, दरिद्रता मे, आपत्ति मे, पुत्र न होने पर, घोर दुख
के समय, मूर्खता और रोगबाधा के समय डाकिनी शाकिनी से ग्रस्त
होने पर, ग्रहपीडा मे, नदी मे उतरते समय, विषममार्ग मे, व्यसन और
आपत्ति मे इसका स्मरण करना चाहिए।

प्रातरेव समुत्थाय य पठेज्जिनपजरम् ।
तस्य किंचित् भयं नास्ति लभते सुखसम्पद ॥२१॥

प्रात काल उठकर जो जिनपजरस्तोत्र का पठन करता है, उसे
किसी प्रकार का भय नही होता और वह सुखसम्पत्तियो को प्राप्त
करता है।

जिनपजरनामेद य स्मरत्यनुवामरम् ।
कमलप्रभराजेन्द्रश्रिय स लभते नर ॥२२॥

जिनपजर नाम के इम स्तोत्र को जो प्रतिदिन स्मरण करता है, वह राजेन्द्रो की लक्ष्मी के समान लक्ष्मी को प्राप्त करता है ।

प्रात समुत्थाय पठेत्कृतज्ञो य स्तोत्रमेतत् जिनपजरस्य ।
आसादयेत्स कमलप्रभाख्या लक्ष्मीं मनोवाञ्छित-
पूरणाय ॥२३॥

प्रात काल उठकर जो इस जिनपजर स्तोत्र का पठन करता है, वह कमलप्रभा नाम की लक्ष्मी को इच्छा-पूर्ति के निमित्त प्राप्त करता है ।

श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे देवप्रभाचार्यपदाब्जहंस ।
वादीन्द्रचूडामणिरेव जैनो जीयादसौ श्रीकमलप्रभाख्य ॥२४॥

श्रीरुद्रपल्ली के वरेण्यगच्छ मे देवप्रभ आचार्य के चरणकमलो के हसरूप वादीन्द्रचूडामणि जिनका नाम कमलप्रभ है वह जीवित रहे

इति स्तोत्रम् ।

विधि—शुद्ध शरीर कर शरीर को तप दे, एकभुक्त उपवास करे, ब्रह्मचर्य का पालन करे, भूमि पर सोवे, क्रोध, लोभ रहित प्रात मध्यान्ह सायकाल त्रिकाल पढे, सदा निरन्तर छ मास जाप करे । पीछे घृत, अगर, गुग्गुल, खोपरा का होम करे, पीछे माला अष्टोत्तर शत जपे । चित्त मे निगुरु शूद्र और काणे को न देखे, न अन्य देव को ध्यावे ।



भट्टारक सकलकीर्ति विरचित
तत्वार्थसारदीपक-सन्दर्भः

तत्वार्थसारदीपके पदस्थ-भावनाप्रकरणम् ।

अथ पिण्डस्थमारयाय वक्ष्ये पदाक्षरोद्भवम् ।
ध्यान पदस्थमत्यन्तस्वाधीन मुक्तये सताम् ॥१॥

पिण्डस्थ ध्यान का वणन करने के पश्चात् अब मै अक्षरों और पदो से उत्पन्न पदस्थध्यान का, जो कि स्वाधीन है, सत्पुरुषो की मुक्ति के लिए वणन करता हूँ ।

पदान्यादाय साराणि योगिभिर्यद्र निधीयते ।
सिद्धान्तबीजभूतानि ध्यान पदस्थमेव तत् ॥३४॥

सिद्धात के बीजभूत सार-पदो के अवलम्बन से योगी जो ध्यान करते हैं, वह पदस्थ ध्यान कहलाता हे ।

ध्यायेदनादिसिद्धान्तविरयाता वर्णमातृकाम् ।
आदिनाथमुखोत्पन्ना विश्वागमविधायिनीम् ॥३५॥

आदिनाथ भगवान् के मुख से उत्पन्न सकल आगमो की रचना करने वाली और अनादि सिद्धान्त मे विख्यात वर्णमातृका (सिद्ध-मातृका) का ध्यान करना चाहिए ।

पत्रषोडशसंयुक्ते अमले नाभिमण्डले ।
प्रतिपत्र भ्रमन्तीं स स्मरेद् व्यष्टस्वरावलीम् ॥३६॥

नाभिमण्डल मे सोलह पत्र वाले कमल के प्रत्येक पत्र के ऊपर घूमती हुई सोलह स्वरो की श्रेणी का स्मरण करना चाहिए ।
(अ आ-इ-ई-उ-ऊ-ऋ-ॠ-लृ-ॡ-ए-ऐ-ओ-औ-अं-अः —ये सोलह स्वर हैं)

चतुर्विंशतिपत्राढ्ये कजे सत्कर्णिके हृदि ।
पचविंशान् ककारादिमान्तान् ध्यायेत् सव्यजनान् ॥३७॥

हृदय मे सुन्दर कर्णिकाओ सहित चौबीस पत्र वाले कमल में क से लेकर म पर्यन्त पच्चीस व्यजनो का ध्यान करे ।

ततो वदनराजीवे हेमे पत्राष्टभूषिते ।
चिन्तयेच्छेषवर्णाष्टौ यकारादीन् प्रदक्षिणम् ॥३८॥

इसके पश्चात् मुख मे स्वर्ण कमल के आठ पत्रो की प्रदक्षिणारूप शेष बचे हुए य आदि (य-र-ल-व-श-ष-स-ह) आठ वर्णो का चिन्तन करे ।

इमा प्रसिद्धसिद्धान्तप्रसिद्धा वर्णमातृकाम् ।
ध्यायेत् य स श्रुताम्भोधे पार गच्छेच्च तत्फलात् ॥३९॥

उपर्युक्त रीति से प्रसिद्ध सिद्धान्त मे विख्यात इन वर्णमातृकाओ का जो पुरुष ध्यान करता है वह श्रुत-सागर के पार हो जाता है ।

अथ मन्त्रा गणाधीश विश्वतत्त्वैकनायकम् ।
आदिमध्यान्तसद्भेदै· स्वरव्यजनसम्भवम् ॥४०॥
ऊर्ध्वाधोरेफसंयुक्त सकल विन्दुभूषितम् ।
एकाग्रमनसा ज्ञानिन्, मन्त्रराजमिम स्मर ॥४१॥

यह गणाधीश मन्त्र जो सभी तत्वों का मुख्य नायक है, जो आदि (अ) मध्य (र) और अन्त (ह)—इस प्रकार स्वर और व्यंजनों से जो उत्पन्न हुआ है, जो कलाओं मे युक्त है, जो बिन्दु से सुशोभित है, हे ज्ञानी ! तू इस मन्त्रराज (अर्हन्) को एकाग्रमन से स्मरण कर।

देवासुरनतं मिथ्यादुर्बोधध्वान्तभास्करम् ।
शुक्लं मूर्धस्थचन्द्रांशुकलापव्याप्तदिङ्मुखम् ॥४२॥
हेमाब्जकर्णिकासीनं निर्मलं दिक्षु खाङ्गणे।
सचरन्तं च चन्द्राभं जिनेन्द्रतुल्यमूर्जितम् ॥४३॥

देव और असुर जिसको नमस्कार करते है, मिथ्याज्ञानरूपी अंधकार को नाश करने के लिए जो सूर्य के समान है, ऊपर रहने वाला है और चन्द्रमा की उदित होती हुई किरणों के समूह से जिसने दिशाओं को विभासित कर रखा है, स्वर्ण कमल की कर्णिका मे विराजमान, निर्मल, दिशाओं और आकाशरूपी आंगन मे विचरण करते हुए चन्द्र के समान परम सामर्थ्यशाली और जिनेन्द्र भगवान् के समान यह मन्त्र है।

ब्रह्मा केश्चिद् हरिः केश्चिद् बुद्धः केश्चिन्महेश्वरः ।
शिवः सर्वेस्तथेशानो वर्णोऽयं कीर्तितो महान् ॥४४॥

इस महान् वर्ण (ह) को कोई ब्रह्मा, कोई विष्णु, कोई बुद्ध, कोई महेश्वर और कोई शिव तथा ईशान कहते है।

मत्वेतीदं महत्तत्वमर्हं नामोद्भवं बुधाः ।
विश्वकल्याणतीर्थेशं श्रीदं ध्यायन्तु मुक्तये ॥५१॥

इस प्रकार अर्हं नाम से उत्पन्न यह महातत्व है, इस प्रकार जान

सब विश्व के कल्याण करने वाले तीर्थंकरों और मुक्ति को देने वाले, श्री देने वाले इस मन्त्र का मुक्ति के लिए ध्यान करना चाहिए।

> मन्त्रमूर्तिं समादाय देवदेवो जिनः स्वयम्।
> सर्वज्ञः सर्वगः शान्तः साक्षादेष व्यवस्थितः ॥८५॥

इस मन्त्र की आकृति को धारण करके स्वयं देवाधिदेव जिनेन्द्र-भगवान् जो सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और शान्त हैं, साक्षात् रूप में इस मन्त्र में विराजमान हैं। (वह मन्त्र है—अर्हं)

> ज्ञानबीजं जगद्वन्द्यं जन्ममृत्युजरापहम्।
> अकारादिहकारान्तं रेफबिन्दुकलाङ्कितम् ॥८६॥
> भुक्तिमुक्त्यादिदातारं स्रवन्तममृताम्बुभिः।
> मन्त्रराजमिमं ध्यायेद् धीमान् विश्वसुखावहम् ॥८७॥

बुद्धिमान् पुरुष को अ वर्ण से लेकर हकारपर्यन्त वर्णमातृका-स्वरूप तथा रेफ, कला और बिन्दु से युक्त अर्हं का—जो ज्ञानबीज है, जगद्वन्द्य है, जन्म, मृत्यु और जरा का नाश करने वाला है और सांसारिक सुख और मुक्ति का देने वाला है—जिसमें से निरन्तर अमृत प्रवाहित हो रहा है और जो विश्व के सभी सुखों का प्रदाता है, ऐसे इस मन्त्रराज अर्हं का ध्यान करना चाहिए।

> नासाग्रे निश्चलं वा भ्रूलतान्ते महोज्ज्वलम्।
> तालुरन्ध्रेण वा यान्तं विशन्तं वा मुखाम्बुजे ॥८८॥

यह मन्त्रराज नासिका के अग्रभाग पर स्थित है अथवा भौंहों के मध्य में अत्यन्त प्रकाशमान है अथवा तालुरन्ध्र के द्वारा जाता है और मुखकमल में प्रवेश करता है, इस प्रकार ध्यान करना चाहिये।

सकृदुच्चारितो येन मन्त्रोऽयं वा स्थिरीकृत ।
हृदि, तेनापवर्गाय पाथेयं स्वीकृत परम् ॥४६॥

जिस मनुष्य ने एक बार इस मन्त्र का उच्चारण कर लिया अथवा हृदय मे स्थिर कर लिया, उसने मोक्ष के लिए श्रेष्ठ पाथेय सग्रह कर लिया।

यदैवैष महामन्त्रश्चित्ते धत्ते स्थितिं मुने ।
तदैव कर्मसन्तानप्ररोह प्रविशीर्यते ॥५०॥

जब मुनि के मन मे यह महामन्त्र स्थिर हो जाता है तब कर्म-परम्परा के अकुर नष्ट हो जाते है।

सर्वावस्थासु सर्वत्र जपन्तु वा निरन्तरम्।
विशुद्धे मानसे मन्त्र निश्चल स्थापयन्तु वा ॥५२॥

अथवा सब अवस्थाओ मे सर्वत्र इस महामन्त्र का जाप करना चाहिए अथवा मन मे इस महामन्त्र को निश्चलता से स्थापित करना चाहिए।

ततो हकारमात्र च रेफविन्दुकलोज्झितम्।
सूक्ष्म प्रभास्वर चन्द्ररेखाभ शान्तिकारणम् ॥५३॥
अणिमादिमहर्द्धीना जनक चिन्तयेत् सुधी ।
अनुच्चार्य हृदा नित्य भवभ्रमणहानये ॥५४॥

तत्पश्चात् बुद्धिमान् मनुष्य ससार परिभ्रमण के नाश के लिए विना उच्चारण किये हुए अपने मन मे केवल हकार को रेफ, कला और बिन्दु से रहित, सूक्ष्म, प्रकाशमान और चन्द्ररेखा के समान चिंतन करे। यह हकार शान्ति का कारण है और अणिमा आदि महाऋद्धियो का पैदा करने वाला है।

ॐकार विस्फुरच्चन्द्रकलाविन्दुमहोज्ज्वलम् ।
नामाग्राक्षरनिष्पन्नं पंचानां परमेष्ठिनाम् ॥५५॥
धर्मार्थकाममोक्षाणां दातारं विश्वपूजितम् ।
हृत्कजकर्णिकासीनं ध्यायेद् ध्यानी शिवाप्तये ॥५६॥

ध्यानी पुरुष को विस्फुरायमान चन्द्रकला और विन्दु से अत्यन्त शोभित और हृदयकमल की कर्णिका में विराजमान इस ॐकार का मोक्ष के लिए ध्यान करना चाहिए। यह ॐकार पांच परमेष्ठियों के नाम के प्रथम अक्षरों से निष्पन्न है (अ-अ-आ-उ-म्=ॐ) यह धर्म अर्थ काम और मोक्ष का प्रदाता है और विश्व में पूजित है।

अर्हन्तो ह्यशरीराश्चाचार्या विश्वनतक्रमा ।
उपाध्याया गता पारं श्रुताब्धेर्मुनय परे ॥५७॥
एषां पंचनमस्कारपदानां प्रथमाक्षरै ।
निष्पादितोऽयमोंकारो बुधै सर्वार्थसिद्धिद ॥५८॥

विश्व जिनके चरणों में नमस्कार करता है, ऐसे अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य और श्रुतसागर के पारगामी उपाध्याय और श्रेष्ठ मुनि—इन पंचनमस्कार के पदों के प्रथम अक्षरों से बुद्धिमान् पुरुषों ने समस्त प्रयोजनों के सिद्ध करने वाले इस ॐकार का निष्पादन किया है।

एष मन्त्रो जगत्ख्यात कामद कामधेनुवत् ।
ध्यानिनां कल्पशाखीव समीहितफलप्रद ॥५९॥

यह मन्त्र संसार में विख्यात, कामधेनु के समान कामनाओं की पूर्ति करने वाला, ध्यानी पुरुषों के लिए कल्पवृक्ष के समान इच्छित फल प्रदान करने वाला है।

चिन्तामणिरिवाभीष्टसिद्धिकृन्मूलमन्त्रज ।
ध्यातव्योऽनिशमत्यर्थं सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥६०॥

मूल मत्र में से उत्पन्न यह ॐकार चिन्तामणि रत्न के समान अभीष्ट सिद्धियों का देने वाला है, अत सब कार्य और प्रयोजनों की सिद्धि के लिए इसे प्रतिदिन ध्याना चाहिए ।

स्तम्भनेऽथ सुवर्णाभो विद्वेषे कज्जलप्रभ ।
वश्यादिकरणे रक्तो ध्येय शुभ्रोऽघहानये ॥६१॥

स्तम्भन में यह सुवर्ण के समान कान्ति वाला, विद्वेष में काजल के समान प्रभा वाला और वश्यादि करण में रक्तवर्ण और पापों के नाश के लिए शुभ्र इस ॐकार का ध्यान करना चाहिए ।

अथवैषोऽनिश ध्येय सर्वत्रैव शशिप्रभ ।
कर्मारिहानये कृत्ये किमसत्कल्पनैं सताम् ॥६२॥

अथवा इस चन्द्रमा के समान प्रभावाले ॐकार को कमरूपी शत्रुओं के नाश के लिए ध्याना चाहिए। सत्पुरुषों को दूसरी असत् कल्पना करने से क्या लाभ ?

महापञ्चगुरोर्नाम, नमस्कारसुसम्भवम् ।
महामन्त्र जगज्ज्येष्ठमनादिसिद्धमादिमम् ॥६३॥
ध्यायन्तु वा जपन्तूच्चैर्दक्षा सर्वार्थसाधकम् ।
युक्त्या कमलजाप्येन वशीकृत्य चल मन ॥६४॥

नमस्कार मत्र में रहने वाले पाच महागुरुओं के नाम से निष्पन्न यह महामन्त्र जगत् में श्रेष्ठ है अनादिसिद्ध है, आदिम है और सब प्रयोजनों का सिद्ध करने वाला है अत बुद्धिमान् पुरुषों को वही युक्ति से, कमलजाप्य से चचल मन को वश में करके इसका ध्यान करना चाहिए और ऊचे स्वर में जाप्य करनी चाहिए ।

मस्तकस्थे स्फुरच्चन्द्राभेऽब्जे पत्राष्टभूषिते।
स्थापयेत् कर्णिकामध्येऽर्हन्त पूर्वादिदिक्षु च ॥६५॥
चतुर्षु पद्मपत्रेषु सिद्ध सूरिमनुक्रमात्।
उपाध्याय पर साधु निदिक्पत्रेषु दर्शनम् ॥६६॥
ज्ञान वृत्त तपो ध्यानी स्थापयेद् ध्यानसिद्धये।
कर्णिकाया जपेद् ध्यायेद् वादौ मन्त्र च्युतोपमम् ॥६७॥
महापचगुरूणा पचत्रिशदक्षरप्रमम्। /
उच्छ्वासैस्त्रिभिरेकाग्रचेतसा भवहानये ॥६८॥

मस्तक में रहने वाले विस्फुरायमान चन्द्रमा के समान आठ पत्रो से भूपित कमल की कर्णिका के बीच मे अहन्त भगवान् की स्थापना करनी चाहिए और पूर्व आदि दिशाओ म कमल के चार पत्रो में अनुक्रम से सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु की स्थापना करनी चाहिए और विदिशाओ की पाखुडियो मे अनुक्रम से सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप की स्थापना ध्यान की सिद्धि के लिए ध्यानी पुरुषो को करनी चाहिए। उन्हे पहले कर्णिका मे अनुपम और पचमहागुरुओ के पैंतीस-अक्षर-प्रमाण मन्त्र को तीन श्वासोच्छ्वासो मे ससार-भ्रमण के नाश करने के लिए जपना चाहिए अथवा ध्यान करना चाहिए।

ततश्चतुर्दिक्पत्रेषु मन्त्राश्चतुर स्मरेत्।
क्रमाद् विदिक्षु पत्रेषु नमस्काराश्चतु प्रमान् ॥६९॥

इसके पश्चात् चार दिशाओ के पत्रो मे चार मन्त्रो का स्मरण करे। और उसके पश्चात् क्रम से विदिशाओ के चार पत्रों मे चार प्रकार के नमस्कारो का चिन्तन करे।

अनेन विधिना भाले मुखे कण्ठे हृदि स्फुटम् ।
नाभौ पद्मे च संस्थाप्य मन्त्र नवनवोत्तमम् ॥७०॥

इस विधि से भालपद्म, मुखपद्म, कण्ठपद्म, और हृदयकमल तथा नाभिकमल मे नवीन और उत्तम इस मन्त्र को स्थापित करे ।

नमस्काराञ्जपेद् दक्षोऽवरोहारोहणेन च ।
द्विपद्पद्मेषु सर्वेऽमी नमस्काराश्च पिण्डिता ॥७१॥

कुशल मनुष्य को आरोह-अवरोह-पूर्वक नमस्कारमन्त्र का जाप्य करना चाहिए । बारह कमलो मे नमस्कार का समावेश है ।

विश्वकल्याणदा सन्ति ह्यष्टोत्तरशतप्रमा ।
कृत्स्नकर्मारिसन्तान ध्नन्तो विश्वसुखावहा ॥७२ ।

एक सौ आठ संख्या प्रमाण नमस्कार का जाप विश्व कल्याण करने वाला तथा समस्त कर्मरूपी शत्रुओ की परम्परा का नाश करने वाला और सम्पूर्ण सुख को लाने वाला है ।

जाप्येन कमलाख्येनानेन योगी लभेत भो ।
भुञ्जानोऽप्युपवासस्य कर्मणा निर्जरा पराम् ॥७३॥

इस प्रकार कमल जाप्य से इस मन्त्र का जाप करने वाला योगी पुरुष उपवास न करने पर भी उपवास का फल प्राप्त करता है और कर्मों की उत्तम निर्जरा करता है ।

अपराजितमन्त्रोऽयं विश्वमन्त्राग्रिमो महान् ।
निरौपम्यो जगत्ख्यातो जगद्वन्द्यो जगद्धित ॥७४॥

यह अपराजित मन्त्र समस्त मन्त्रो मे मुख्य है, महान् है, अनुपम है, जगत् मे प्रसिद्ध है, जगत् द्वारा वन्दनीय है और जगत् का हित करने वाला है ।

मन्त्रजाप्याम्बुभि सिक्ता शाम्यन्ति वह्नयोऽखिला ।
जलस्थलभया सर्वे विलीयन्तेऽस्य शक्तित ॥८०॥

सब प्रकार की अग्नि इस मन्त्र के जाप्य रूप जल से सीचन से शान्त हो जाती है और इस मन्त्र की शक्ति से जल-स्थल के सम्पूर्ण भय नष्ट हो जाते है।

अनेन मन्त्रयोगेन महापापकलङ्किना ।
शुद्ध्यन्ति जन्तव क्रूरास्त्यजन्ति क्रूरता परे ॥८१॥

महापाप से कलंकित प्राणी इस मन्त्र के योग से शुद्ध और पवित्र बन जाते है और क्रूर जीव भी अपनी क्रूरता को छोड देते है।

सप्तव्यसनसंसक्ता अजनाद्याश्च तस्करा ।
प्राप्य मित्रमिम मृत्यौ तत्पुण्येन दिव गता ॥८२॥

सप्तव्यसनो मे लीन अजन आदि चार मृत्यु के समय इस मन्त्र-रूपी मित्र को पाकर उसके पुण्यप्रभाव से स्वर्ग को प्राप्त हुए।

जिनशासनमध्येऽय सारो मन्त्राधिपो महान् ।
उद्धार सर्वपूर्वाणा तत्वाना तत्वमुत्तमम् ॥८३॥

जिन शासन मे यह मन्त्र सारभूत महान् मन्त्रराज है और यह समस्त पूर्वो का उद्धार स्वरूप है तथा तत्वो में उत्तम तत्व है।

किमत्र बहुभि प्रोक्तैर्मन्त्रराजप्रसादत ।
ध्यानिना जायते मुक्ति का वार्ता परवस्तुषु ॥८४॥

बहुत अधिक कहने से क्या लाभ ? इस मन्त्रराज के प्रसाद से ध्यानियो को मुक्ति प्राप्त हो जाती है फिर दूसरी वस्तुओ के मिलने मे आश्चर्य ही क्या है ?

विज्ञायेति सुखे दुःखे पथि दुर्गे रणे स्थितो।
आसने शयने स्थाने रागक्लेशादिके सति ॥८५॥
सर्वावस्थासु सर्वत्र महामन्त्रः शिवार्थिभिः।
जपनीयोऽथवा ध्येयो न मोक्तव्यः क्वचिद्हृदः ॥८६॥

इस प्रकार जानकर सुख में, दुःख में, मार्ग में, दुर्ग में, युद्धस्थान में, बैठने में, सोने में, शयनस्थान में और रोग-कलह आदिक में सभी अवस्थाओं में और सब जगह मोक्ष चाहने वालो को इसका ध्यान करना चाहिए तथा कभी इसे अपने हृदय से दूर नही करना चाहिए।

वाचो वा विश्वकार्याणां सिद्धयेऽत्र परत्र च।
तथा संख्या विधेयास्य सहस्र-लक्ष-कोटिभिः ॥८७॥

इस लोक और परलोक में समस्त कार्य और वाणी की सिद्धि के लिए इस मन्त्र के हजार, लाख और करोड संख्य प्रमाण जाप करने चाहिए।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं—इस मन्त्र का जाप करना चाहिए।

पंचसद्गुरुनामोत्थां षोडशाक्षरभूषिताम्।
महाविद्यां जगद्विद्यां स्मर सर्वार्थसिद्धिदाम् ॥८८॥

पांच सद्गुरुओं अर्थात् पंचपरमेष्ठियों के नाम से निष्पन्न हुई सोलह अक्षरों से सुशोभित महाविद्या है, वह समस्त प्रयोजनों की सिद्धि के लिए जगद्विद्या है। तू उसका स्मरण कर।

अस्याः शतद्वयं ध्यानी जपेत् तल्लीनमानसः।
अनिच्छन्नप्यवाप्नोत्युपवासपरं फलम् ॥८९॥

इस विद्या से मनुष्यों के कर्मों के साथ जन्म मृत्यु और वृद्धावस्था शीघ्र ही नष्ट हो जाती है और वे शिवसम्पत्ति को प्राप्त करते हैं। वह विद्या इस प्रकार है—ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ-सि-आ-उ-सा नम ।

अर्हत्सिद्धत्रिधासाधु धर्मान् केवलिभाषितान् ।
विश्वमाङ्गल्यकर्तृंश्च विश्वलोकोत्तमान् परान् ॥६६॥
विश्वशरण्यभूताश्च ध्यायन्तु तत्पदार्थिन ।
चतुरोऽत्र चतुर्मङ्गलाद्ये पदे परे सदा ॥१००॥

विश्व का मंगल करने वाले जगत् में सर्वोत्तम और जगत् में शरण्यभूत ये अर्हन्त, सिद्ध, तीन प्रकार के (आचार्य, उपाध्याय और साधु) साधु और केवलीप्ररूपित धर्म ये चार (चत्तारिमङ्गल) आदि उत्तम पदों से मनुष्यों को सदा ध्यान करना चाहिए।

लोकोत्तमपदा पूज्या शरण्याश्चार्हदादिका ।
एतद्ध्यानवता ध्यानात् मंगलानि पदे पदे ॥१०१॥
सम्पद्यन्तेऽत्र वामुत्र सम्पदस्त्रिजगद्भरा ।
धर्मार्थकाममोक्षार्था प्रणश्यन्त्यापदोऽखिला ॥१०२॥

ये उपर्युक्त अर्हन्त आदि लोक में उत्तमपद हैं, पूज्य हैं, शरण्य हैं—इस प्रकार ध्यान करने वालों को उनके ध्यान के प्रभाव से पग पग पर मङ्गल का उदय होता है। तीनों जगत् में रहने वाली सम्पत्ति और धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप पुरुषार्थ इस लोक में तथा परलोक में प्राप्त होते हैं तथा सभी आपदाओं का नाश हो जाता है। वह मन्त्र इस प्रकार है—

चत्तारि मंगलं। अरिहंता मंगलं। सिद्धा मंगलं। साहू मंगलं। केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा। अरिहंता लोगुत्तमा। सिद्धा लोगुत्तमा। साहू लोगुत्तमा। केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरण पवज्जामि। अरिहंते सरण पवज्जामि। सिद्धे सरण पवज्जामि। साहू सरण पवज्जामि। केवलिपण्णत्त धम्म सरण पवज्जामि।

मुक्ते सौध द्रुतारोढुमिमां सोपानमालिकाम्।
अर्हत्सिद्धसयोगिश्रीकेवल्यक्षरसम्भवाम् ॥१०३॥
आद्योंकारमयी सारा विद्या ध्यायन्तु योगिनः।
पंचदशसुवर्णाढ्या गुणस्थानगुणाप्तये ॥१०४॥

अर्हन्त, सिद्ध, और सयोगी केवलियो के अक्षर से उत्पन्न, मुक्ति के महल मे शीघ्र चढने के लिए सीढियो के समान, पन्द्रह सुन्दर वर्णों से सुशोभित और जिसके आदि मे ॐकार है, उस सारभूत विद्या को योगीजन गुणस्थान की प्राप्ति के लिए ध्यान करे।
वह विद्या इस प्रकार है—ॐ अरहन्त-सिद्ध-सयोगिकेवली स्वाहा।

ॐकारभूषित मन्त्र ह्रींकाराकितमुत्तमम्।
अर्हन्नामोद्भवं दक्षाश्चिन्तयन्तु शिवाप्तये ॥१०५॥

ॐकार से विभूषित और ह्रीकार से अकित तथा अर्हन् इस नाम से उत्पन्न उत्तम मन्त्र को मोक्ष-प्राप्ति के लिए चिन्तन करें।

सकलज्ञानसाम्राज्यदानदक्ष च्युतोपमम्।
समस्तमन्त्ररत्नानां चूडारत्न सुखावहम् ॥१०६॥

यह मन्त्र सम्पूर्ण ज्ञान का साम्राज्य देने मे कुशल है और निरुपम है, सुखो का दाता और समस्त मन्त्रो मे चूडामणि है।
वह मन्त्र इस प्रकार है—ॐ ह्री अर्ह नम।

कृत्स्नकर्मकलङ्कौघनमोविध्वसभास्करम् ।
पर सिद्धनमस्कारजात साक्षान्छिवप्रदम् ॥१०७॥
पचवर्णमय मन्त्र विश्वविघ्नौघनाशनम् ।
दक्षा स्मरन्तु मोक्षाय, जपन्तु वा निरतरम् ॥१०८॥

सम्पूर्ण कर्म-कलङ्क समूह रूप अन्धकार के नाश करने के लिये सूर्य के समान, श्रेष्ठ, सिद्ध नमस्कार से उत्पन्न, साक्षात् मोक्ष देने वाले और सब विघ्नो के समूह का नाश करने वाले पचवर्ण वाले इस मन्त्र का बुद्धिमान् मोक्ष के लिए स्मरण करे या निरन्तर जाप करे।

मन्त्र—णमो सिद्धाण ।

निर्दोषस्यार्हतो घातिघातिन परमेष्ठिन ।
प्राप्तानन्तगुणस्य श्रीमत परमयोगिन ॥१०९॥
विदो जपन्तु मत्रेश, निश्वक्लेशाग्निवामुचम् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदातार, त्रातार भव्यदेहिना ॥११०॥

घाति कर्मों को नाश करने वाले, निर्दोष, अनन्त गुणो को प्राप्त करने वाले, लक्ष्मी से सुशोभित और परमयोगी अरहन्त परमेष्ठी के मन्त्रराज को विद्वान् पुरुष जपे। यह मन्त्रराज सम्पूर्ण क्लेश रूप अग्नि के लिए मेघ के समान है। भोग और मुक्ति प्रदान करने वाला है और भव्य प्राणियो की रक्षा करने वाला है।

अनेन मत्रपुण्येन, त्रिजगन्नाथसपद ।
निश्वशर्माणि लभ्यन्ते, क्रमाच्छ्रीजिनभूतय ॥१११॥

इस पवित्र मत्र के द्वारा त्रिलोकीनाथ तीर्थंकर भगवान् की सम्पत्तिया और समस्त सुख क्रमश प्राप्त हो जाते है।

यह मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमोऽर्हते केवलिने परमयोगिने अनन्त [illegible] विस्फुरच्छुक्लध्यानाग्निनिर्दग्धकर्मबीजाय प्राप्तानन्तचतुष्टयाय [illegible] शान्ताय मङ्गलवरदाय अष्टादशदोषरहिताय स्वाहा ।

पूर्णेन्दुमण्डलाकारं, पुण्डरीकं मुखे स्मरन् ।
क्रमात्तदष्टपत्रेषु, वर्णांश्चाष्टौ पृथक् पृथक् ॥ [illegible]
ॐकारार्हन्नमस्कारजातास्तत्कर्णिकोपरि ।
ज्योतिर्मयमिवात्यन्तदीप्तं ह्रींकारमूर्जितम् ॥ [illegible]
व्रजन्तं तालुरन्ध्रेण, तिष्ठन्तं भ्रूलतान्तरे ।
स्फुरन्तं चिन्तयत्यर्थं, स्रवन्तममृतान्[illegible] ॥ [illegible]

पूर्ण चन्द्र-मण्डल के आकार वाले कमल [illegible] फिर क्रम से उसके आठ पत्रों पर 'ॐ नमो [illegible] पृथक्-पृथक् ध्यान करे । उस कमल की [illegible] अत्यन्त देदीप्यमान और प्रभावशाली ह्रीं [illegible] । पश्चात् वह 'ह्रीं' मुखकमल से तालुरन्ध्र के द्वारा जा [illegible] के बीच मे जाकर स्थिर हो गया है और [illegible] है, इस प्रकार ध्यान करे ।

अनेन मन्त्रपोतेन, सर्वविद्यागमाम्बुधेः ।
भवव्यसनपापाब्धेः प्राप्यते पारम्[illegible] ॥१२५॥

उत्तम पुरुष इस मन्त्ररूपी जहाज से [illegible] आगमरूप समुद्र तथा संसार के व्यसन [illegible] रूपी [illegible] जाते हैं ।

इमा विद्या महादेवीं, ललाटे संस्थिता स्मृताम् ।
कल्याणकारिणीं पूता भर्नीकारजा शिवप्रदाम् ॥११६॥

इस ह्वींकार विद्यारूप महादेवी का ललाट में स्मरण करो। यह ह्वींकार से उत्पन्न विद्या कल्याणकारिणी, पवित्र और मोक्ष देने वाली है।

वह विद्या इस प्रकार है— ह्वीं'

यदि सांसारदुःखोद्विग्नो, भवद् ग्याग्नितापत ।
तदा ससाक्षर मन्त्र, अर्हन्नामोद्भव स्मर ॥११७॥

यदि तू संसार के दुःखरूपी अग्नि के ताप से उद्विग्न हो गया है तो अर्हन्त के नाम से निष्पन्न सात अक्षरों वाले मंत्र का स्मरण कर।

अनेनानादिमन्त्रेण, लभन्ते दृग्विभूषिता ।
सर्वज्ञविभव विश्व विजय तद्गुणान् शिवम् ॥११८॥

इस अनादि मंत्र के द्वारा सम्यग्दृष्टि जीव सर्वज्ञ की विभूतियों, विश्व-विजय, सर्वज्ञ के गुणों और मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

वह मंत्र इस प्रकार है—'णमो अरहंताणं '

प्रणवानाहतोद्भूत, वर्णत्रयमय परम् ।
नासाग्रे ध्यानिनो मन्त्र, ध्यायन्तु शिवशर्मणे ॥११९॥

प्रणव (ॐकार) और अनाहत से उत्पन्न तीन वर्ण वाले श्रेष्ठ मंत्र का मोक्ष-सुख के लिए ध्यानी जन नासाग्र पर (दृष्टि रख कर) ध्यान करें।

एतेनाद्भुतमन्त्रेण, ध्यानशुद्धि परा भवेत् ।
आत्यन्तिकसुख स्वात्मज च सिद्धगुणाष्टकम् ॥१२०॥

इस अद्भुत मंत्र से उत्कृष्ट ध्यान शुद्धि हो जाती है और आत्मा

मे आत्यन्तिक सुख तथा सिद्धो के आठ गुण प्राप्त हो जाते है।

वह मन्त्र इस प्रकार है—'ॐ अर्हं'

ततो ध्यायेन्महाबीज, श्रींकार स्वमुखोदरे।
विस्फुरन्त जिनेन्द्रोक्त, परं मन्त्रमय शुभम् ॥१२१॥

तत्पश्चात् अपने मुख के अन्दर भगवान् जिनेन्द्रदेव द्वारा कहे हुए विशेष प्रकार मे स्फुरायमान श्रेष्ठ मन्त्रमय और शुभ और महाबीज श्रीकार का ध्यान करे।

विद्या स्वेष्टार्थसदानकरां कल्पलतोपमाम्।
श्रीवीरवदनोद्भूतां, ध्यायन्त्वचिन्त्यविक्रमाम् ॥१२२॥
इमा विद्या जपेद् योऽत्र, ध्यानलीनो निरन्तरम्।
अणिमादि-गुणॉल्लब्ध्वा, तरेच्छास्त्रार्णव च स· ॥१२३॥
अस्या· निरन्तराभ्यासाद् ध्यानी लभेत निश्चितम्।
त्रिकालविषयं ज्ञान विश्वतत्वप्रदीपकम् ॥१२४॥

इच्छित पदार्थ के दान करने मे कल्पलता के समान, श्रीमहावीर भगवान् के मुख मे उत्पन्न और अचिन्त्य सामर्थ्य वाली इस विद्या का ध्यान करो। जो व्यक्ति ध्यान मे लीन होकर इस विद्या का निरन्तर जाप देता है, वह अणिमा आदि ऋद्धियों को प्राप्त करके शास्त्र-समुद्र को तर जाता है। इसके निरन्तर अभ्यास से ध्यानी निश्चित रूप मे विश्व के पदार्थों को प्रकाशित करने के लिए दीपक के समान तीनो कालो का विषय करने वाले ज्ञान को प्राप्त हो जाता है।

वह विद्या इस प्रकार है—'ॐ जोगे मग्गे तच्चे भूये भवे भविस्से अक्खे जिनपार्श्वे स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्ह णमो अरहंताणं ह्रीं नमः'।

दिक्पत्राष्टकसपूर्णे, कमले मध्यसस्थितम् ।
ध्यायेदात्मानमत्यन्त, स्फुरद्ग्रीष्मार्कभास्करम् ॥१२५॥

ॐकारार्हन्नमस्काराश्चाष्टौ वर्णान् विचिन्तयेत् ।
क्रमात्पूर्वादिपत्रेषु वर्णैकैक प्रदक्षिणम् ॥१२६॥

आठ [illegible] परिपूर्ण कमल के मध्यभाग म[illegible] [illegible] समान [illegible] आत्मा [illegible] का ध्यान [illegible] के पत्रो म ॐकार पूर्वक अर्ह[illegible] [illegible] आठ वर्णो मे से प्रत्येक वर्ण क[illegible] [illegible]

स्वीकृत्य पूर्वदिक्पत्र पूर्वदिक्सम्मुखस्थित ।
जपदष्टाक्षर मत्र, एकादशशतप्रमम् ॥१२७॥

पूर्व दिशा की ओर मुख करके पूर्व दिशा के पत्र मे आठ अक्ष[र] वाले मत्र का ग्यारह सौ बार जप ।

प्रत्यह प्रतिपत्रेषु, पूर्वादिदिक्ष्वनुक्रमात् ।
अष्टरात्र स्मरेद ध्यानी, त मत्र निर्मलाशयम् ॥१२८॥

ध्यानी पुरुष पूर्व आदि दिशाओ के प्रत्येक पत्र मे क्रम से प्रतिदि[न] आठ रात तक उस निर्मल आशय वाले मन्त्र का स्मरण करता रहे

अस्याचिन्त्यप्रभावेन, शाम्यन्ति क्रूरजन्तव ।
सिंहसर्पाद्य सर्वे, हरित्रस्ता गजा इव ॥१२९॥

इस मत्र के अचिन्त्य प्रभाव स सिंह से डरे हुए हाथियो की त[रह] सिंह, सर्प आदि भयकर जानवर शात हो जाते हैं ।

वह मत्र इस तरह है—'ॐ णमो अरहताण'

इत्येतद् ध्यानमासाद्य, पूर्वं विघ्नौघशान्तये ।
पश्चात् सप्ताक्षरं मन्त्र, जपेदोंकारवर्जितम् ॥१३०॥

विघ्नों के समूह की शान्ति के लिए पहले इस मन्त्र का इस तरह ध्यान करे। पश्चात् ॐकार से रहित सात अक्षर वाले मन्त्र का जाप करे।

मंत्र ॐकार पूर्वोऽयं, विश्वाभीष्टार्थसिद्धिदः ।
एको ह्यनेककार्यार्थं, मुक्त्यर्थं प्रणवोज्झितम् ॥१३१॥

ॐकार पूर्वक यह मन्त्र सम्पूर्ण इच्छित प्रयोजनों की सिद्धि कराने वाला है। यह अकेला ही मंत्र अनेक कार्यों के लिए होता है और मुक्ति के लिए ॐकार से रहित इस मंत्र का ध्यान करना चाहिए।

यह मंत्र इस भांति है— णमो अरहंताणं

चतुर्विंशति तीर्थेशनमस्कारोद्भवं परं ।
स्मर मंत्र जिनेन्द्रादिपदं जन्मघातकम् ॥१३२॥

चौबीस तीर्थंकरों के नमस्कार से उत्पन्न हुआ यह मंत्र जिनेन्द्र आदि पदों का देने वाला है जन्म-मरण का नाश करने वाला है। इसका तुम स्मरण करो।

यह मंत्र इस भांति है—'श्रीमदृषभादिवर्धमानान्तेभ्यो नमः'

मुनिःस्वस्थं मनः कृत्वा, पापारातिनिकृन्दिनीम् ।
जिनेन्द्रमुखजां विद्या, महतीं पापभञ्जिनीम् ॥१३३॥
विश्वविद्यासु सिद्धान्तदानदक्षां जगज्जनानाम् ।
ध्यायन्तु प्रत्यहं धीराः अर्हन्मुखाब्जवासिनीम् ॥१३४॥

हे धीर पुरुषो! मुनि मन को स्थिर करके पापरूपी शत्रुओं का नाश करने वाली जिनेन्द्र भगवान् के मुख से निकली

महान्, पाप का भगण रग्न वाली, विश्व की मम्पूर्ण विद्याओं तत्व बताने मे ममथ, जगद्वन्द्य और अह्त भगवान् के मुख कमल निवाम करने वाली विद्या का राज ध्यान करो।

मुनेरस्या प्रभावेन, पापपङ्क प्रनीयते।
चेत प्रशान्तिमायाति, विज्ञान जायते परम् ॥१३५॥

इस विद्या के प्रभाव से मुनिजन का पाप पक नष्ट हो जाता है चित्त मे विशेष शान्ति भी मिल जाता है और श्रेष्ठ विज्ञान मिल जाता है।

वह विद्या इस प्रकार है— ॐ गहम्मुखकमलवासिनि ! पापात्म क्षयकरि ! श्रुतज्ञानज्वालासहस्रप्रज्वलिते ! सरस्वति ! मत्पाप हन हन दह दह क्षा, क्षी, क्षू, क्षो, क्ष क्षीरवर धवले ! अमृत सभवे ! वं वं भक्षिणि ! व, न, हूँ, हूँ स्वाहा।'

सजयन्तादियोगीन्द्रे सिद्धचक्रमनेकधा।
भुक्तिमुक्तेर्निधान यद्, विद्यावादात् समुद्धतम् ॥१३६॥
तद्ध्यायन्तु बुधा मुक्त्यै, सर्वविघ्नादिनाशनम्।
तस्य प्रयोजक शास्त्र, ज्ञात्वा गुरूपदेशत ॥१३७॥

सजयन्त आदि योगीश्वरो ने विद्याप्रवाद (पूर्व अथवा विद्यानुवाद शास्त्र) से भुक्ति और मुक्ति के निधान स्वरूप सिद्धचक्र का अनेक प्रकार से उद्धार किया है। वह सब विघ्न आदि का नाश करने वाला है। उसके प्रयोजकशास्त्र को गुरु उपदेश से जानकर बुद्धिमान पुरुषों मुक्ति के लिये उसका ध्यान करो।

स्मर मन्त्रपदाधीशमर्हन्नामाक्षराभिधम्।
'अ'वर्ण नाभिपद्मे त्व, मोक्षमार्गप्रदीपकम् ॥१३८॥

मन्त्र पदो के अधीश और मोक्ष-मार्ग के लिये दीपक के समान अर्ह नाम के अक्षरो के वाचक 'अ' वर्ण को तुम नाभिकमल मे स्मरण करो।

'सि'वर्ण मस्तकाम्भोजे, 'सा'कार च मुखाम्बुजे।
'आ'कार कण्ठकंजे हि, 'चो'[1]कार हृत्सरोरुहे ॥१३६॥

इस प्रकार मस्तक कमल मे 'सि' वर्ण का, मुख कमल मे 'सा' वर्ण का, कण्ठ कमल मे 'आ' वर्ण का और हृदय कमल मे 'उ' वर्ण का तुम ध्यान करो।

एप मन्त्रमहाराजोऽर्हदाद्यक्षरोद्भव ।
पञ्चवर्णमयोऽनेकाभीष्टदोऽनिष्टशातिकृत् ॥१४०॥

अर्हन्त आदि नामो के आदि अक्षर से उत्पन्न यह मन्त्र मन्त्रो मे श्रेष्ठ है। यह पचवर्णमय है, अनेक अभीष्टो को देने वाला है और अनिष्टो की शान्ति करने वाला है।

वह मन्त्र इस भाति है—'अ-सि-आ-उ-सा।'

साक्षात् सिद्धिपद दातु, क्षम मत्र स्मरान्वहम्।
विश्वविघ्नहर ज्येष्ठ, सर्वसिद्धिनम प्रजम् ॥१४१॥

साक्षात् सिद्धिपद के देने मे समर्थ इस मन्त्र को तुम प्रतिदिन स्मरण करो। वह सब विघ्नो का हरने वाला है मुख्य है और 'मत्र सिद्ध नम' इन शब्दो से उत्पन्न है।

वह मन्त्र इस भाति है—'नम सर्वसिद्धेभ्य।'

इत्यादीन्यपराण्यत्र, सारमन्त्रपदानि च।
उद्धृतानि श्रुतस्कन्धाज्जगद्धिताय योगिभि ॥१४२॥

१–चो=च+उ।

महान्, पाप का भञ्जन करने वाला, विश्व की सम्पूर्ण विद्याओं के तत्व जानने में समर्थ जगद्वन्द्य और महन्त भगवान् के मुख कमल में निवास करने वाली विद्या का ध्यान करना करे।

मुनेरस्या प्रभावेन, पापपङ्क प्रलीयते ।
चेत प्रशान्तिमायाति, विज्ञान जायते परम् ॥१३५॥

इस विद्या के प्रभाव से मुनिजन का पाप-पंक नष्ट हो जाता है। चित्त में विशेष शान्ति भी मिल जाती है और श्रेष्ठ विज्ञान मिल जाता है।

वह विद्या इस प्रकार है— 'ॐ अर्हन्मुखकमलवासिनि ! पापात्म क्षयङ्करि ! श्रुतज्ञानज्वालासहस्रप्रज्वलिते ! सरस्वति ! मत्पाप हन हन दह दह क्षां, क्षीं, क्षूं, क्षौं, क्षः क्षीरवर धवले ! अमृत सम्भवे ! पाप भक्षिणि ! व, न, हूँ, हूँ स्वाहा।'

सजयन्तादियोगीन्द्रै सिद्धचक्रमनेकधा ।
भुक्तिमुक्तेर्निधान यद्, विद्यावादात् समुद्धृतम् ॥१३६॥
तद् ध्यायन्तु बुधा मुक्त्यै, सर्वविघ्नादिनाशनम् ।
तस्य प्रयोजक शास्त्र, ज्ञात्वा गुरूपदेशत ॥१३७॥

सजयन्त आदि योगीश्वरों ने विद्याप्रवाद (पूर्व अथवा विद्यानुवाद शास्त्र) में भुक्ति और मुक्ति के निधान स्वरूप सिद्धचक्र का अनेक प्रकार से उद्धार किया है। वह सब विघ्न आदि का नाश करने वाला है। उसके प्रयोजकशास्त्र को गुरु उपदेश से जानकर बुद्धिमान पुरुष मुक्ति के लिए उसका ध्यान करें।

स्मर मन्त्रपदाधीशमर्हन्नामाक्षराभिधम् ।
'अ'वर्णं नाभिपद्मे त्व, मोक्षमार्गप्रदीपकम् ॥१३८॥

आत्मा की सिद्धि के लिये सर्वत्र उन मन्त्रों का जप करना चाहिए, अपने मन में उनका निश्चय करना चाहिए और उनका श्रद्धान करना चाहिए। निरर्थक बहुत कहने से क्या लाभ है।

एतत् पदस्थसद्ध्यान, स्वाधीन जपनादिभि ।
सर्वत्र सुखदु खादिजातावस्थासु कोटिषु ॥१४८॥
कुर्वन्तु ध्यानिनो धीरा, स्वप्नेऽपि मा त्यजन्तु भो ।
शयनासनसद्वार्ताव्रजनादौ शिवाप्तये ॥१४९॥

हे ध्यानी धीरजनो ! सुख दुःख आदि अनेक अवस्थाओं में सर्वत्र जप आदि के द्वारा इस पदस्थ सद्ध्यान को अपने आधीन करो। इसे स्वप्न में भी मत त्यागो। मोक्ष की प्राप्ति के ध्येय से सोते, बैठते, बात करते, चलते फिरते भी इसे मत छोड़ो।

सन्मन्त्रजपनेनाहो, पापारि क्षीयतेतराम् ।
मोहाक्षस्मरचोराद्यै, कषायै सह दुर्धरै ॥१५०॥

श्रेष्ठ मन्त्र के जाप से मोह, इन्द्रिय विषय, काम, चोर और दुर्धर कषायों सहित पाप शत्रु नष्ट हो जाते हैं।

मन परीषहादीना, जय कर्मनिरोधनम् ।
निर्जरा कर्मणा मोक्ष, स्यात्सुख स्वात्मज सताम् ॥१५१॥

मन्त्र के जाप से सत्पुरुषों को मनो-जय, परीषह-जय, कर्मों का संवर, निर्जरा, मोक्ष और आत्मिक सुख होता है।

वीतरागमुनीन्द्राणा ध्यानसिद्धिश्च केवलम् ।
त्यक्तरागादिदोषाणा, जिनै प्रोक्ता न सशय ॥१५२॥

ये मन्त्र तथा जो दूसरे सारभूत मन्त्र पद हैं, उनका जगत् के हित के लिये योगियों ने श्रुतस्कन्ध में उद्धार किया है।

यानि निर्वेदबीजानि, मनःशान्तिकराणि च ।
ध्येयानि तानि सर्वाणि, बुधैः पदस्थसिद्धये ॥१४३॥

जो निर्वेदजनक हैं तथा मन की शान्ति के करने वाले बीज हैं, उन सब बीजों का पदस्थ ध्यान की सिद्धि के लिये बुद्धिमानों को ध्यान करना चाहिये।

रागद्वेषाक्षमोहाद्यरयो यान्ति क्षयं सताम् ।
साम्य संवेगबोधादिगुणाः प्रादुर्भवन्ति च ॥१४४॥

(मन्त्रों के ध्यान से) सत्पुरुषों के राग, द्वेष, इन्द्रियां और मोहादि शत्रुओं का नाश हो जाता है और समभाव, संवेग और बोध आदि गुण प्रगट हो जाते हैं।

संवरो निर्जरा मोक्षो, मनोजयश्च जायते ।
यैर्मन्त्रौघैः पदैः वर्णैः सारैर्दोषापहैः परैः ॥१४५॥
ते सर्वे मुनिभिर्ध्येयाश्चिन्तनीया मुहुर्मुहुः ।
कथनीयाः परेषां च, भावनीया निरन्तरम् ॥१४६॥

जिन श्रेष्ठ, दोषों को हरने वाले, सारभूत पदों और वर्णों के मन्त्रसमूह से संवर, निर्जरा, मोक्ष और मन पर विजय मिलती है, उन्हें मुनियों को ध्याना और बार-बार चिन्तन करना चाहिए। दूसरों के लिए कहना चाहिए और निरन्तर उनकी भावना करनी चाहिये।

जपनीयाश्च सर्वत्र, निश्चेतव्याः स्वमानसे ।
श्रद्धेया स्वात्मसिद्ध्यर्थं, किं वृथा बहुजल्पनैः ॥१४७॥

श्री सिहनन्दि भट्टारक विरचित

पंचनमस्कृतिदीपक-सन्दर्भः



नमाम्यहं तं देवेशं लक्ष्मीरात्यन्तिकी स्वयम्।
यस्य निर्धूतकर्मेन्धधूमस्यापि विराजते ॥१॥

मैं उस देवाधिदेव को नमस्कार करता हूँ, जिसने कर्मरूपी ईंधन के धुएं को भी नष्ट कर दिया है और जिसके सम्पूर्ण लक्ष्मी स्वयं सुशोभित होती है।

यस्य प्रभावो देवेशैरपि वक्तुं न शक्यते।
तत्र मानुषव्यापारः केवलं हास्यतास्पदम् ॥२॥

जिसके प्रभाव का वर्णन इन्द्र भी नही कर सकते, उसमें मनुष्य का व्यापार केवल हास्यास्पद है।

विघ्नचौरारिमार्याद्या शाकिन्यादिगणा अपि।
यस्य स्मरणमात्रेण प्रलयं यान्ति तेऽखिलाः ॥३॥

जिसके स्मरण मात्र से विघ्न, चोर, शत्रु, महामारी आदि रोग, और शाकिनी आदि सम्पूर्ण गण नष्ट हो जाते हैं।

यस्य प्रभावतो बुद्धिर्जायते जीवसंनिभा।
तं नमस्कृत्य पञ्चाङ्गमन्त्रं तत्कल्पमुच्यते ॥४॥

मत्वेति रागद्वेषाद्यरीन् हत्वा जिताशया ।
कषायाद्भटे सार्धं, क्षमा तोषादिकायुधा ॥१५३॥
नानाभेद प्रकुर्वन्तु पदस्थध्यानमूर्जितम् ।
सर्वयत्नेन सिद्ध्यर्थं, सर्वत्रालम्ब्य साम्यताम् ॥१५४॥

जिनेन्द्र देवा ने कहा है कि रागादि दोषो से रहित वीतराग मुनियो को केवल ध्यान की सिद्धि हो जाती है, इसमे कोई सशय की बात नही है। यह मानकर क्षमा-सन्तोष आदि शस्त्रधारी हे जितेंद्रिय पुरुषो ! तुम कषाय, विषयादि वीरो सहित राग-द्वेष आदि शत्रुओ को जीतकर और सर्वत्र साम्यभाव धारण करके आत्म-सिद्धि के लिए प्रयत्नपूर्वक अनेक प्रकार से श्रेष्ठ पदस्थ ध्यान करो।



सर्वरत्नाकर वृद्धमृत्युञ्जयमुनामकम् ।
लघुमृत्युञ्जयं नाम, मोक्षद वाञ्छितप्रदम् ॥११॥
फलद ज्वालिनीचक्र, शुभ चैवाम्बिका चक्रम् (?)
वर चक्रेश्वरीचक्रं, वृहच्छान्तिकचक्रकम् ॥१२॥
यागमण्डलसच्चक्र, यज्ञचक्र मनोहरम् ।
भैरव चक्रमिन्द्रारयमित्यादि सकलं वहु ॥१३॥
यन्त्रराजागमोक्त यत्, तदेतेन विना न च ।
सिद्धेन सिद्ध्यत्येव, नियमोऽस्ति जिनागमे ॥१४॥

पार्श्वचक्र, वीरचक्र, सिद्धचक्र, त्रिलोकचक्र, कमचक्र, योगचक्र, विच्छेदर ध्यानचक्र, भूतचक्र, तीर्थचक्र, जिनचक्र, वशीकरणचक्र, ध्यानचक्र, मोक्षचक्र, शान्ति करने वाला श्रेयश्चक्र, सबकी रक्षा करने वाला वृद्ध-मृत्युञ्जयचक्र, मोक्ष प्रदान करने वाला तथा कामना पूर्ति करने वाला लघुमृत्युञ्जयचक्र, फल देने वाला ज्वालिनीचक्र, शुभ अम्बिकाचक्र, श्रेष्ठ चक्रेश्वरीचक्र, वृहत् शान्तिचक्र, यागमण्डल चक्र, सुन्दर यज्ञचक्र, भैरवचक्र इत्यादि बहुत तरह के चक्र यन्त्रराज आगम मे कहे है । वे सब इस नमस्कार मन्त्र को सिद्ध किये बिना सिद्ध नही होते, उसके सिद्ध होने पर ही ये सिद्ध होते है, यह जिनागम का नियम है ।

यस्य स्मरणमात्रेण, वराङ्गस्य भय गतम् । /
द्वीपिनोऽथ तथा श्रेष्ठी, सुदर्शनोऽपि च स्वयम् ॥१५॥
भयमुक्तो वभूवास्य, प्रभावेन महाजना ।
द्वात्रिंशदभिधानास्ते, गता द्वीपान्तर मुदा ॥१६॥

इसके स्मरणमात्र से वराग के हाथी का भय दूर होगया और

जिनके प्रभाव से बुद्धि सम्यग्दृष्टि जीव के समान हो जाती है उस पचाङ्ग मन्त्र (णमोकार मन्त्र) का नमस्कार करके णमोकार मन्त्र वरप था कहता हूँ।

तत्राधिकारा पचैव साधन ध्यानकर्मणी ।
स्तवन फलमित्येतद् यदुक्त पूर्वसूरिभि ॥५॥
तदेव सक्षिप्यारभ्य प्रक्रियाद्वारत खलु ।
करोमि देय नान्यस्य दुष्टमिथ्यादृश खलु ॥६॥

इस वरप के पाच अधिकार है—१ साधन, २ ध्यान, ३ कर्म, ४ स्तवन और ५ फल। इस विषय में पूर्वाचार्यों ने जो कहा है, उस सक्षिप्त करके प्रक्रिया द्वारा मैं आरम्भ करता हूँ। इसे दुष्ट और मिथ्यादृष्टि लोगो को नही देना चाहिए।

तदेव गायत्रीमन्त्र, तदेवाष्टकमुच्यते ।
तदेव पचक प्रोक्त, षट्दर्शनिकसम्मतम् ॥७॥

यही गायत्रीमन्त्र है, यही अष्टक कहलाता है और षट् दर्शनो द्वारा मान्य पचक भी यही है।

यत्र चिन्तामणिर्नाम, कलिकुण्डाख्ययन्त्रकम् ।
पञ्चाराध्यपद यन्त्र, गणभृद्वलयाभिधम् ॥८॥

मन्त्रो मे चिन्तामणि मन्त्र, कलिकुण्ड मन्त्र, पचाराध्य पद मन्त्र और गणधर-वलय मन्त्र है।

पार्श्वचक्र वीरचक्र, सिद्धचक्र त्रिलोकयुक् ।
कर्मचक्र योगचक्र, ध्यानचक्र विच्छेदकम् ॥९॥
भूतचक्र तीर्थचक्र, जिनचक्र वशीकरम् ।
ध्यानचक्र मोक्षचक्र, श्रेयश्चक्र सुशान्तिकृत् ॥१०॥

पूर्व दिशा, श्वेत पुष्प की माला, श्रेष्ठ पद्मासन, ज्ञान-मुद्रा, मोक्ष-मुद्रा और प्रभात का समय होना चाहिए।

क्षेत्र शुद्ध तटाकादितीरं द्रव्यं मनोहरम् ।
भावो मन्त्रलयो ज्ञेयः स्वेष्टपल्लवयोजनम् ॥२२॥

शुद्ध क्षेत्र, तालाब आदि का किनारा, शुद्ध द्रव्य, मन मे निमग्नभाव और अपना मनोनुकूल पल्लव होना चाहिए।

कर्म मोक्षप्रधानं स्याद् गुणः श्वेतस्य चिन्तनम् ।
सामान्यं मूलमन्त्रं स्याद् विशेषस्तत्परो मतः ॥२३॥

कर्म मोक्ष प्रधान हो, श्वेत वर्ण का ध्यान वह गुण है, मूलमन्त्र सामान्य है और तत्परता से वह विशेष कहलाता है।

पूजाद्रव्यं कुंकुमं च सदकं चरुसंचयम् ।
रत्नदीपकं वामे च, धूपकुण्डं च दक्षिणे ॥२४॥

पूजा का द्रव्य, कुंकुम, फल, नैवेद्य और रत्नदीप यह बाये हाथ मे रक्खे और धूप के पात्र को दाये हाथ मे रक्खे।

फलं देयं जिनेशस्य पुरतो बीजपूरकम् ।
चूतं चोचाम्र-कदलीमुखं षट्कतुंषु क्रमात् ॥२५॥
कङ्कोलैला-लवङ्गादि-सर्वौषध्यभिषेचनम् ।
दधि-दुग्धेक्षु-सर्पिर्भिरभिषेको जिनस्य च ॥२६॥

जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा के आगे बिजौरा, आम, नारियल, करी, केला आदि फल और सुपाडी, इलायची, लोंग आदि छह ऋतुओ म होने वाले फल क्रमश चढावे। सर्व औषधियो से अभिषेक करे। पश्चात् दही, दूध, गन्ने के रस, घी से (पचामृत) भगवान् का अभिषेक करे।

सेठ सुदर्शन स्वयं भगमुक्त हो गया। इस मन्त्र के प्रभाव से बत्तीस श्रेष्ठ पुरुष प्रसन्नतापूर्वक दूसरे द्वीप चले गये।

किमस्य वर्ण्य माहात्म्य, जिह्वया चैकया खलु।
कोटिजिह्वादिभिर्ब्रूयाद् गणेशोऽत्र किमुच्यते ॥१७॥

एक जीभ से इसके माहात्म्य का क्या वर्णन किया जाय। यदि गणधर करोड़ों जिह्वाओं से कहें तो क्या कह सकते हैं।

अपवित्रे पवित्रेऽपि, सुस्थिते दुःस्थितेऽपि वा।
यत्सर्वेष्टकरं मन्त्र, न त्याज्य विबुधैरिह ॥१८॥

अपवित्र या पवित्र, सुस्थित हो या दुःस्थित ऐसे काम में मन इच्छापूरक जो श्रेष्ठ मन्त्र है, उसे बुद्धिमानों को कभी छोड़ना नहीं चाहिए।

इदं चित्रं महत्स्याद्य मोक्षद यद्वशीकृति–
प्रमुखानि च कर्माणि, चेप्सितानि ददाति नु ॥१६॥

यह महान् आश्चर्य की बात है कि यह मोक्ष देने वाला मन्त्र वशीकरण आदि कर्मों और इच्छित पदार्थों को पूरा करता है।

यमो मुनिर्महामूर्खो, मन्त्रपादैकजल्पनात्।
भूयो भूय पदध्यानात्, सातर्द्धी प्राप्तवान् किमु ॥२०॥

यम नामक मुनि ने, जो विशेष ज्ञानवान नहीं थे, इस मन्त्र के एक पद की जाप से और उस पद के बार-बार ध्यान करने से साता और ऋद्धि प्राप्त की।

अथ साधनमाह—

पूर्वा ककुप् पुष्पमाला शुक्ला पद्मासन वरम्।
बोधमुद्रा मोक्षमुद्रा, काल प्रभात इष्यते ॥२१॥

तद्विधाने पूर्वदिने गत्वा तु जिनमन्दिरे ।
प्रतिमा श्रुतमभ्यर्च्य कृत्वाऽनु गुरुपूजनम् ॥३२॥
गुरोराज्ञा समादाय गुरुहस्त समुद्धरेत् ।
मस्तके न्यस्य सद्भाग्य मत्वा गत्वान्तरे गृहे ॥३३॥
तत्र मन्त्र जपेद्यावत् कार्यसिद्धिर्न संभवेत् ।
तावत् तत्र नियन्ता वा याथातथ्येन योजयेत् ॥३४॥

फिर विधान के पहले दिन जिन मन्दिर मे जाकर देव, गुरु और शास्त्र की पूजन करे । फिर गुरु की आज्ञा लेकर उनका हाथ ऊपर उठाकर अपने मस्तक पर रक्खे । और अपना शुभ भाग्य समझकर घर मे एकान्त मे जाकर जब तक कार्य की सिद्धि न हो जाय, तबतक मन्त्र का जाप करे और वहा तबतक एक ऐसे नियामक की नियुक्ति करे जो मन्त्रशास्त्र के अच्छा वेत्ता हो ।

मन्त्रस्याख्या तु पञ्चाग, नमस्कारस्तु पञ्चकम् ।
अनादिसिद्धमन्त्रोऽय न हि केनापि तत् कृतम् ॥३५॥

यह पचाग मत्र है । इसमे पाच नमस्कार है । यह मत्र अनादि सिद्ध है और इसकी रचना किसी ने नही की है ।

पूर्वे येऽपि जिना यातास्ते वे यास्यन्ति यान्ति च ।
इत्यनेनेव हि मुक्त्यङ्ग मूलमन्त्रमनादित ॥३६॥

पूर्वकाल मे जितने जिनेन्द्र भगवान् मुक्ति मे गए, जो वर्तमान मे जा रहे हैं और आगे जायेंगे, वे इसी णमोकार मन्त्र के कारण हो । यही कारण है कि यह मूलमत्र अनादिकाल से मुक्ति का अङ्ग है ।

जानुदघ्ने जले वापि पर्वते वातपस्थितो ।
केनापि योगकार्येण कार्य साध्य सुधीमता ॥३७॥

पश्चादुद्धृत्य तत्पीठान्मातृकायन्त्रपूजनम् ।
कृत्वा पीठे प्रतिष्ठाप्य स्थिरा ता चिन्तयेदनु ॥२७॥

तदनन्तर उस पीठ मे उठाकर मातृका यन्त्र की पूजन करे, फिर पीठ पर प्रतिष्ठा (विराजमान) करके यह प्रतिष्ठा स्थिर है यह चिंतन करे।

चूर्णादिवासना पश्चाद् वार्यधोवासना तथा ।
धान्यादिवासना चैव, फलदीपकवासना ॥२८॥

पश्चात् चूर्ण वासक्षेप की वासना दे, फिर जल की अधोवासना दे। फिर धान्य आदि की वासना दे और फिर फल और दीपक की वासना दे।

पश्चाद् दिनत्रय वस्त्रपरिधान तथा तत ।
मुखोद्घाटनमेतस्यानन्तर स्यान्निराञ्जना ॥२९॥

इसके बाद मातृका यन्त्र का तीन दिन तक वस्त्र से ढका रक्खे। इसके पश्चात् उसको खोलदे और उसकी आरती उतारे।

पश्चादाकरशुद्धिं च कृत्वा मन्त्र जपेदनु ।
मूलमन्त्रमुपन्यस्तप्रतिज्ञो व्रतसयुत ॥३०॥

फिर कुण्ड की शुद्धि करके मन्त्र का जाप करे और व्रत करके मूलमन्त्र की जाप करने की प्रतिज्ञा करे।

स पौषधी निराहारी, नियतो विजितेन्द्रिय ।
मनोवाक्कायसशुद्ध पचमन्त्र जपेदनु ॥३१॥

फिर वह पौषधवान, उपवास सहित, सयमी, जितेन्द्रिय और मन वचन-काय की शुद्धि करने वाला साधक पचनमस्कारमन्त्र का जाप दे।

तद्विधाने पूर्वदिने गत्वा तु जिनमन्दिरे ।
प्रतिमां श्रुतमभ्यर्च्य कृत्वाऽनु गुरुपूजनम् ॥३२॥
गुरोराज्ञा समादाय गुरुहस्त समुद्धरेत् ।
मस्तके न्यस्य सद्भाग्य मत्वा गत्वान्तरे गृहे ॥३३॥
तत्र मन्त्र जपेद्यावत् कार्यसिद्धिर्न सभवेत् ।
तावत् तत्र नियन्ता वा याथातथ्येन योजयेत् ॥३४॥

फिर विधान के पहले दिन जिन मन्दिर मे जाकर देव, गुरु और शास्त्र की पूजन करे । फिर गुरु की आज्ञा लेकर उनका हाथ ऊपर उठाकर अपने मस्तक पर रक्खे । और अपना शुभ भाग्य समझकर घर मे एकान्त मे जाकर जब तक कार्य की सिद्धि न हो जाय, तबतक मन्त्र का जाप करे और वहाँ तबतक एक ऐसे नियामक की नियुक्ति करे जो मन्त्रशास्त्र के अच्छा वेत्ता हो ।

मन्त्रस्याख्या तु पञ्चाग, नमस्कारस्तु पञ्चकम् ।
अनादिसिद्धमन्त्रोऽय न हि केनापि तत् कृतम् ॥३५॥

यह पचाग मत्र है । इसमे पाच नमस्कार है । यह मत्र अनादि सिद्ध है और इसकी रचना किसी ने नही की है ।

पूर्वं येऽपि जिना यातास्ते वे यास्यन्ति यान्ति च ।
इत्यनेनैव हि मुक्त्यङ्ग मूलमन्त्रमनादित ॥३६॥

पूर्वकाल मे जितने जिनेन्द्र भगवान् मुक्ति मे गए, जो वर्तमान मे जा रहे है और आगे जायेगे, वे इसी णमोकार मन्त्र के कारण हो । यही कारण है कि यह मूलमत्र अनादिकाल से मुक्ति का अङ्ग है ।

जानुदघ्ने जले वापि पर्वते वातपस्थितो ।
केनापि योगकार्येण कार्य साध्य सुधीमता ॥३७॥

बुद्धिमानों को चाहिए कि इस मन्त्र को चाहे तालाब मे, पवत पर, गर्मी मे या किसी भी देवस्थान आदि मे सिद्ध करें।

एतन्मन्त्रस्य शोधनं नाकडमादिकचक्रत: ।
स्वयंभूत्वात् शुद्ध: शोधनेन किमु स्फुटम् ॥३८॥

इस मन्त्र का शोधन अकडम चक्र द्वारा नही करना चाहिए क्योंकि यह मन्त्र स्वयंभूत होने से शुद्ध है ही। इसलिए शोधन का क्या प्रयोजन ।

विघ्नौघा: प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगा: ।
विषं निर्विषतां याति ध्यायमाने सुपचके ॥३९॥

पंच परमेष्ठी का ध्यान करने से विघ्नो के समूह नष्ट हो जाते हैं, शाकिनी, भूत, सप आदि का उपसग नहीं रहता और विप निर्विप हो जाता है।

ॐ नम सिद्धमित्याख्या यथा कार्यस्य साधिका ।
तथा सादृश्यतो ज्ञेय मन्त्र पारमगोत्कम् ॥४०॥

'ॐ नम सिद्धम्' यह मन्त्र जिस प्रकार काय की सिद्धि करने वाला है, उसी प्रकार यह पचपरमेष्ठी मन्त्र भी काय की सिद्धि करता है।

ॐ नमोऽर्हद्भ्य इत्याख्या प्रथमा जायते पदी ।
ॐ नम सिद्धेभ्य इति जायते द्वितीया पदी ॥४१॥
ॐ नम आचार्येभ्यश्च जायते तृतीया पदी ।
ॐ नम उपाध्यायेभ्यो जायते तुर्या सत्पदी ॥४२॥
ॐ नम सर्वसाधुभ्यो जायते पचमी पदी ।
इति सस्कृतमन्त्रेण सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥४३॥

'ॐ नम अर्हद्भ्य' यह इस मन्त्र का प्रथम पद है।
'ॐ नम सिद्धेभ्य' यह इस मन्त्र का द्वितीय पद है।
'ॐ नम आचार्येभ्य' यह इस मन्त्र का तृतीय पद है।
'ॐ नम उपाध्यायेभ्य' यह इस मन्त्र का चतुर्थ पद है।
'ॐ नम सर्वसाधुभ्य' यह इस मन्त्र का पचम पद है।
इस सस्कृत मत्र से सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि अवश्य होगी।



णमोकारमन्त्र की स्तुति

श्रीनवकार जपो मनरंगे श्रीजिनशासन सार रे प्राणी । टेक ।
सवमंगल में पहलो मंगल जपतां जैजैकार रे प्राणी ।
श्रीनवकार जपो मनरंग श्रीजिनशासन सार रे प्राणी ।१।
पहले पद त्रिभुवन जिनपूजित सुमिरूँ श्रीग्ररहंत रे प्राणी ।
अष्टकर्म वर्जित बीजे पद ध्याग्रो सिद्ध अनन्त रे प्राणी ।
श्रीनवकार जपो मनरंगे श्रीजिनशासन सार रे प्राणी ।२।
श्रीग्राचारज तीजे पद सुमिरूँ गुण छतीसनिधान रे प्राणी ।
चौथे पद उपाध्याय जपाजे सूत्रसिद्धान्तन जान रे प्राणी ।
श्रीनवकार जपो मनरंगे श्रीजिनशासन सार रे प्राणी ।३।
सर्वसाधु पंचम पद प्रणमूं पंच महाव्रत धार रे प्राणी ।
नवपद ग्रउसठ इह छै सपद ग्रउसठ वरण सभार रे प्राणी ।
श्रीनवकार जपो मनरंग श्रीजिनशासन सार रे प्राणी ।४।
सात पहा गुरु अक्षर रहना एक अक्षर उच्चार रे प्राणी ।
सात सागरना पातक जाये पद पचास विचार रे प्राणी ।
श्रीनवकार जपो मनरंगे श्रीजिनशासन सार रे प्राणी ।५।
सम्पूरण पण से सागरणा पाप पलाये दूर रे प्राणी ।
ये भव खेमकुशल मनवाञ्छित परभव सुख भरपूर रे प्राणी ।
श्रीनवकार जपो मनरगे श्रीजिनशासन सार रे प्राणी ।६।
इसरत शोभनपुर सौ सिद्धो शिवकुमारन ध्यान रे प्राणी ।
सरप फिर हुई फूलमाला श्रीमतिने द्रणध्यान रे प्राणी ।
श्रीनवकार जपो मनरगे श्रीजिनशासन सार रे प्राणी ।७।

यक्ष उपद्रव करत निवारा परचो ऐसा निरधार प्राणी ।
चोर चण्ड पिंगलने हुण्डक पाव नरसुर-रिद्ध रे प्राणी ।
श्रीनवकार जपो मनरंगे श्रीजिनशासन सार रे प्राणी ।८।

ये परमेष्ठिमन्त्र जग उत्तम चौदहपूरव सार रे प्राणी ।
गुण बोले श्रीपद्मराजगुरु महिमा जास अपार रे प्राणी ।
श्रीनवकार जपो मनरंगे श्रीजिनशासन सार रे प्राणी ।६।

— इति नवकारमन्त्र सम्पूर्ण —



मुनि भी जब कहीं किसी स्थान मे जाकर ठहरते है तो उसके रक्षक का कहना है कि इतने दिन तक तेरे स्थान मे ठहरेंगे तू क्षमा रखिया। इस वास्ते गृहस्थियों को अवश्य ही उपरोक्तानुसार रक्षक से आज्ञा लेनी चाहिए।

(२) जब मन्त्र साधन करने के वास्ते जावो तब जहा तक ऐसे स्थान म मन्त्र सिद्ध करो जहा मनुष्यो का गमनागमन न हो जैसे अपने जैनतीर्थ मांगीतुङ्गीजी, सिद्धवर कूट, रेवानदी के तट या सोनागिरिजी या और जो अपने जैनतीर्थ एकान्त स्थान मे हैं। बगीचो के मकानो मे पहाडो मे तथा नदी के किनारे पर या ति स्थान म, एसे स्थानो मे मन्त्र सिद्ध करने को जाना चाहिए। जब स्थान मे प्रवेश करो, वहा ठहरो तो मन, वचन, काय से उस स्थान जो रक्षक देव या यक्ष आदि है उसका योग्य विनय करके मुख से उच्चारण करे कि हे इस स्थान के रक्षक, मैं अपने इस काय सिद्धि के वास्ते तेरे स्थान म आया हूँ। तेरी रक्षा का आश्रय लि है। इतने दिनो तक मैं तेरे स्थान मे रहने के लिए आया हूँ, रक्षा का आश्रय लिया है। इतने दिनो तक निवास के लिए आ प्रदान कीजिए। अगर मेरे ऊपर किसी तरह का सकट, उपद्रव या आवे तो उसे निवारण कीजिए।

(३) जब मन्त्र साधन करने जाओ तो एक नौकर सा जाओ। जो रसोई की वस्तु लाकर रसोई बनाकर तुमको भे धरा दिया करे। तुम्हारा धोती दुपट्टा धो दिया करे, जब तुम साधन करने बैठो तब तुम्हारे सामान की चौकसी रक्खे।

(४) जो मन्त्र साधन करना हो पहले विधिपूर्वक जितना जि हर दिन जप सके उतना उतना हर दिन जप कर सवा लाख पूर मन्त्र साधन करे, फिर जहाँ काम पडे उसका जाप जितना कर

१०८ बार या २१ बार या जैसा मन्त्र मे लिखा हो, उतनी बार जपने से कार्य सिद्ध होवे। मन्त्र शुद्ध अवस्था मे जपे। शुद्ध भोजन खाये। और मन्त्र मे जिस शब्द के आगे दो-दो का अङ्क हो उस शब्द का दो बार उच्चारण करे।

(५) जब मन्त्र जपने बैठे, पहले रक्षा-मन्त्र जपकर अपनी रक्षा कर लिया करे। ताकि कोई उपद्रव अपने जाप्य मे विघ्न न डाल सके। अगर रक्षा-मन्त्र जप कर मन्त्र जपने बैठे तो साप, बिच्छू, भेडिया, रीछ, शेर, बकरा उसके बदन को न छू सके—दूर ही रुकें। मन्त्र पूर्ण होने पर जो देव देवी सांप वगैरह बनकर उसको डराने आवे तो जो रक्षा-मन्त्र जप कर जाप करने बैठे उसके अग को वह छू नही सकें—सामने से ही डरा सके। जब मन्त्र पूर्ण होने को आवे तब देव देवी विक्रिया से साप वगैरह हा डराने आवे तो डरे नही, चाहे प्राण जाव तो डरे नही तो मन्त्र सिद्ध होय। मनोकामना पूर्ण होय। यदि बिना मन्त्र रक्षा के (रक्षा-मन्त्र के) जपने बैठे तो पागल हो जावे। इस वास्ते पहले रक्षा-मन्त्र जप कर पश्चात् दूसरा मन्त्र जपना चाहिए।

(६) मन्त्र जहा तक हो सके ग्रीष्म ऋतु मे सिद्ध करना चाहिए, ताकि धोती-दुपट्टा मे सर्दी न लगे। मन्त्र सिद्ध करने मे धोती-दुपट्टा ही कपडे रखे। वे कपडे शुद्ध हो, उनको पहने हुए पाखाने नही जावे, खाना नही खावे, पेशाब नही जावे, सोवे नही। जब जाप कर चुके तो उन्हे अलग उतार कर रख देवे, दूसरे वस्त्र पहन लिया करे, यह वस्त्र नित्य हर दिन स्नान कर बदन पोछ कर पहना करे—यह वस्त्र सूत के पवित्र वस्तु के हो। ऊन, रेशम वगैरह अपवित्र वस्तु के न हो, इतने स्त्री सेवन न करे। गृहकार्य छोडकर एकान्त मे मन्त्र-जाप सिद्ध करे।

(७) मन्त्र में जिस रङ्ग की माला लिखी हो उसी रङ्ग का आसन यानी बिस्तरा आदि। धोती-दुपट्टा भी उसी रंग का हो तो और भी श्रेष्ठ है, यदि माला उस रङ्ग की न होव तो सूत की माला या जियापोते की माला उस रङ्ग की रँग लेवे। जब मन्त्र जपने बैठे तो इतनी बातों का ध्यान रखे।

(८) पहले सब काम ठीक करके मन्त्र जपे।

(९) आसन सबसे अच्छा डाभ का लिखा है, या सफेद या पीला या लाल—जैसा जिस मन्त्र में चाहिए वैसा बिछावे।

(१०) ओढ़ने की धोती दुपट्टा सफेद उम्दा हो या जिस रङ्ग का जिस मन्त्र में चाहिए वैसा हो।

(११) शरीर की शुद्धि करके परिणाम ठीक करके धीरे धीरे तसल्ली के साथ जाप्य करे, अक्षर शुद्ध पढ़े।

(१२) मन्त्र पद्मासन से बैठकर जपे। जिस प्रकार हमारी बैठी हुई प्रतिमाओं का आसन होता है, बाया हाथ गोद मे रख कर दाहिने हाथ से जपे। जो मन्त्र बायें हाथ से जपना लिखा हो तो वहाँ दाहिना हाथ गोद में रखकर बायें हाथ में जपे।

(१३) जहा स्वाहा लिखा हो, वहाँ धूप के साथ जपे यानी धूप आगे रखे।

(१४) जहा दीपक लिखा हो, वहा घी का दीपक आगे बालना चाहिए।

(१५) जिस जिस अगुली से जाप्य लिखा हो उसी अगुली और अगूठे से जपे। अगुलियो के नाम आगे लिखे हैं।

अगुलिया के नाम—

अगूठे को अगुष्ठ कहते हैं।

अगूठे के साथ की अगुली को तर्जनी कहते है।

तीसरी बीच की अगुली को मध्यमा कहते है।

चौथी यानी मध्यमा के पास की अगुली को (अगुष्ठ से चौथी को) अनामिका कहते हैं।

पाचवी सबसे छोटी अगुली को कनिष्ठा कहते है।

अगुष्ठेन तु मोक्षार्थं धर्मार्थं तर्जनी भवेत्।
मध्यमा शान्तिकं ज्ञेया सिद्धिलाभाय नामिका ॥१॥

जाप्यविधि मे मोक्ष के वास्ते अगूठे से तथा धर्म के वास्ते अगुष्ठ के साथ तर्जनी से, शान्ति के लिए मध्यमा तथा सिद्धि के लिए अनामिका अगुली से जाप्य करे।

कनिष्ठा सर्वसिद्धार्थं एतत् स्याज्जाप्यलक्षणम्।
असंख्यात च यज्जप्त तत् सर्वं निष्फलं भवेत् ॥२॥

कनिष्ठा सर्वसिद्धि के वास्ते श्रेष्ठ है। ये जाप के लक्षण जानने। बिना मर्यादा किया हुआ सब जाप्य निष्फल होता है। अर्थात् किसी मन्त्र का २१ बार जाप्य लिया है तो वहा २१ से कम या अधिक जाप्य नही करना, ऐसा करने से वह निष्फल होता है। मन्त्रसिद्धि नही होती।

अगुल्यग्रेण यज्जप्त यज्जप्त मेरुलंघने।
व्यग्रचित्तेन यज्जप्त तत् सर्वं निष्फलं भवेत् ॥३॥

अगुली के अग्रभाग से जो जपा जाए तथा माला के ऊपर जो तीन दाने मेरु के है उनको उल्लघन करके जो जाप्य किया जाए तथा

व्याकुल चित्त से जो जाप्य किया जाए वह मंत्र निष्फल होता है।

माला सुपद्धरणीना सुमाना सर्वकार्यदा।
स्तम्भने दुष्टसन्त्रासे जपेत् प्रस्तरकर्कशान् ॥४॥

सब कार्यों में सुगन्धित पुष्पों की माला श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्टों को त्रास देने में, स्तम्भन में कठोर (सख्त) वस्तु के मणियों की माला से जाप्य करे।

धर्मार्थी काममोक्षार्थी जपेद्वै पुत्रजीविकाम्। (स्रजम्)
शान्तये पुत्रलाभाय जपेदुत्तममालिकाम् ॥५॥

मंत्र साधन करने वाला धर्म के लिए तथा काम और मोक्ष के लिए पुत्रजीवा की माला से जाप्य करे। शांति के लिए और पुत्र प्राप्ति के वास्ते मोती आदि की उत्तम माला से जाप्य करे। शांति से यह तात्पर्य है कि जैसे रोगी आदि के लिए रोग की शान्ति करना या दैवी वगैरह किसी का उपद्रव हो उसकी शान्ति करना।

शान्ति अर्द्धरात्रि वारुणी दिक् ज्ञानमुद्रा पंकजासन।
मौक्तिकमालिका स्वधे स्वते पू० च० का० ॥६॥

शान्ति के प्रयोग में मंत्र जाप्य करने वाला आधी रात के समय पश्चिम दिशा की ओर मुख करके ज्ञान मुद्रा सहित कमलासन युक्त मोतियों की माला से स्वधे स्वते पू० च० का० का उच्चारण करता हुआ जाप्य करे।

स्तम्भन पूर्वाह्ने वज्रासने पूर्वदिक् शङ्खमुद्रा।
स्वर्णमणिमालिका पीताम्बर वर्ण ठ ठ ॥७॥

स्तम्भन (रोकना तथा कीलना) के प्रयोग में पूर्वाह्न अर्थात् दुपहर से पहले काल में, वज्रासनयुक्त पूर्व दिशा की तरफ मुख करके

ण के मणियो की माला मे पीले रङ्ग के वस्त्र पहने हुए ठ ठ
उच्चारण करता हुआ जाप्य करे ।

शत्रूच्चाटने च रुद्राक्षा विद्वेषारिष्टज जजा ।
स्फाटिकी सूत्रजा माला मोक्षार्थीना (र्थिनां) तु निर्मला ॥८॥

दुश्मन का उच्चाटन करने के लिए रुद्राक्ष की माला, वैर मे जियापोत की माला, मोक्षाभिलाषियो को स्फटिकमणि की तथा सूत्र की माला श्रेष्ठ है ।

उच्चाटन वायव्यदिक् अपराह्णकाल कुक्कुटासन ।
प्रवालमालिकाधूम्र च फटित् तर्जन्यगुष्ठयोगेन ॥९॥

उच्चाटन इसके प्रयोग मे वायव्य कोण (पश्चिम और उत्तर के बीच मे) की तरफ मुख करके अपराह्ण (दुपहर के बाद) मे कुक्कुटासनयुक्त मू गे की माला से आगे धूप रखकर व फडिति पल्लव लगा कर अगूठा और तजनी से जाप करे ।

वशीकरणे पूर्वाह्ण स्वस्तिकासन उत्तरदिक् कमलमुद्रा ।
विद्रुम मालिका जपाकुसुमवर्ण वषट् ॥१०॥

वशीकरण अर्थात् वश मे करना (अपने अधीन करना) इसके प्रयोग मे पूर्वाह्ण, दोपहर के पहले काल म स्वस्तिकासन युक्त उत्तर दिशा की तरफ मुख करके कमलमुद्रा सहित मू गे की माला स जपे । कुसुमवर्ण वषट् उच्चारण करता हुआ जाप्य करे ।

आसन डाभ रक्तवर्ण यन्त्रोद्धार । रक्तपुष्प वामहस्तेन

डाभ के आसन पर बैठ कर लाल कपडे सहित यन्त्रोद्धार लाल फूल रखता हुआ बाये हाथ मे जाप्य करे ।

आकृष्टिपूर्वाह्णदण्डासन अंकुश मुद्रा दक्षिणदिक् ।
प्रवालमाला उदयार्कवर्ण वौषट स्फट अगुष्ठमध्यमाभ्य तु ।

१ उपवास, क्वार सुदी सप्तमी का १ उपवास, कार्तिक वदी पचमी का १ उपवास, कार्तिक सुदी पचमी का १ उपवास, मगसिर वदी पचमी का १ उपवास, मगसिर सुदी पचमी का १ उपवास, पोष वदी पचमी का १ उपवास, पोष सुदी चतुदशी का १ उपवास, माघ वदी चतुदशी का १ उपवास, माघ सुदी चतुदशी का १ उपवास, फाल्गुन वदी चतुदशी का १ उपवास, फाल्गुन सुदी चतुदशी का १ उपवास, चैत्र वदी चतुदशी का १ उपवास चैत्र सुदी चतुदशी का १ उपवास तत्पश्चात् बैशाख वदी चतुदशी का १ उपवास, बैशाख सुदी चतुदशी का १ उपवास, ज्येष्ठ वदी चतुदशी का १ उपवास, ज्येष्ठ सुदी चतुदशी का १ उपवास, आषाढ वदी चतुदशी का १ उपवास, आषाढ सुदी चतुदशी का १ उपवास, श्रावण वदी चतुदशी का १ उपवास, श्रावण सुदी नौमी का १ उपवास, भादो वदी नौमी का १ उपवास, भादो सुदी नौमी का १ उपवास, क्वार वदी नौमी का १ उपवास, क्वार सुदी नौमी का १ उपवास, कार्तिक वदी नौमी का १ उपवास, कार्तिक सुदी नौमी का १ उपवास, मगसिर वदी नौमी का १ उपवास, मगसिर सुदी नौमी का १ उपवास । ये व्रत १८ महीने मे होते है ।

जाप्य करने की विधि

सप्तमी का जाप्य—णमो अरिहताण

पचमी का जाप्य—णमो सिद्धाण

चतुदशी का जाप्य—णमो आइरियाण

चतुदशी का जाप्य—णमो उवज्झायाण

नौमी का जाप्य—णमो लोए सव्वसाहूण

इन मत्रो की जाप्य भगवान की वेदी के सामने करनी चाहिए । अथवा देव स्थान मे जाप्य करनी चाहिए अथवा घर मे एकात स्थान

म जाप्य करे। किन्तु घर मे होम और पूण्याहवाचन करके णमोकार मन्त्र का चित्र और जिनेन्द्र भगवान् का चित्र, दीप और धूपदानी समक्ष रख कर, आसन पर बैठकर और शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करे। उस स्थान पर बच्चो आदि का उपद्रव या शोर नहीं होना चाहिए। मन्त्र की जाप्य अत्यन्त शुद्ध, भक्ति के साथ करनी चाहिए। मन्त्र में किसी प्रकार की आकुलता, चिन्ता, दुःख, शोक आदि भावनाये नही रहनी चाहिए। जाप्य करते समय मन का स्थिर रखना चाहिए। पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके जाप्य देनी चाहिए। जाप्य मे बैठने से पहले समय की मर्यादा कर लेनी चाहिए, पद्मासन से बैठना चाहिए। मौन रखना चाहिए। जितने दिन जाप्य करे, उतने दिन एकाशन, किसी रस का त्याग, वस्त्र आदि का परिमाण करे। जमीन, चटाई या तख्त पर सोवे, जाप्य समाप्त होने तक ब्रह्मचर्य व्रत रक्खे। मन्त्र की जाप्य पुष्य या रोहिणी आदि शुभ नक्षत्रो मे प्रारम्भ करनी चाहिए। सुबह, दोपहर और शाम को जाप्य करे। सुबह ५ बजे उठकर स्नानादि मे निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य दे। श्वेत वस्त्र पहने। यदि घर मे जाप्य करनी हो तो भगवान् का दर्शन पूजन करने के पश्चात् करनी चाहिए। दोपहर को शुद्ध वस्त्र पहनकर तथा सन्ध्या को मन्दिर मे दर्शन करने के पश्चात् शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करें।

जाप्य तीन प्रकार का होता है—मानसिक, वाचनिक (उपांशुक) और कायिक।

मानसिक जप—मन मे मन्त्र का जप करना। यह कार्य सिद्धि के लिए होता है।

वाचनिक जप—उच्च स्वर से मन्त्र का पढना, यह पुत्र-प्राप्ति के लिए होता हैं।

कायिक जप—विना बोले मन्त्र पढना, जिसमे होठ हिलते रहे।

१ उपवास, क्वार सुदी सप्तमी का १ उपवास, कार्तिक वदी पचमी का १ उपवास, कार्तिक सुदी पचमी का १ उपवास, मगसिर वदी पचमी का १ उपवास, मगसिर सुदी पचमी का १ उपवास, पोष वदी पचमी का १ उपवास, पोष सुदी चतुर्दशी का १ उपवास, माघ वदी चतुर्दशी का १ उपवास, माघ सुदी चतुर्दशी का १ उपवास फाल्गुन वदी चतुर्दशी का १ उपवास, फाल्गुन सुदी चतुर्दशी का १ उपवास, चैत्र वदी चतुर्दशी का १ उपवास, चैत्र सुदी चतुर्दशी का १ उपवास, तत्पश्चात् वैशाख वदी चतुर्दशी का १ उपवास, वैशाख सुदी चतुर्दशी का १ उपवास, ज्येष्ठ वदी चतुर्दशी का १ उपवास, ज्येष्ठ सुदी चतुर्दशी का १ उपवास, आषाढ वदी चतुर्दशी का १ उपवास, आषाढ सुदी चतुर्दशी का १ उपवास, श्रावण वदी चतुर्दशी का १ उपवास, श्रावण सुदी नौमी का १ उपवास, भादो वदी नौमी का १ उपवास, भादो सुदी नौमी का १ उपवास, क्वार वदी नौमी का १ उपवास, क्वार सुदी नौमी का १ उपवास, कार्तिक वदी नौमी का १ उपवास, कार्तिक सुदी नौमी का १ उपवास, मगसिर वदी नौमी का १ उपवास, मगसिर सुदी नौमी का १ उपवास। ये व्रत १८ महीने में होते हैं।

जाप्य करने की विधि

सप्तमी का जाप्य—णमो अरिहंताणं

पचमी का जाप्य—णमो सिद्धाणं

चतुर्दशी का जाप्य—णमो आइरियाणं

चतुर्दशी का जाप्य—णमो उवज्झायाणं

नौमी का जाप्य—णमो लोए सव्वसाहूणं

इन मंत्रो की जाप्य भगवान की वेदी के सामने करनी चाहिए। अथवा देव स्थान में जाप्य करनी चाहिए अथवा घर में एकान्त स्थान

पहनकर जप करने से बहुत दुःख हो जाता है। हरे रङ्ग के वस्त्र पहनकर जाप करने से मान भग होता है। श्वेत वस्त्र पहनकर जाप करने से यश की वृद्धि होती है। पीले रङ्ग के वस्त्र पहनकर जाप करने से हर्ष बढता है। ध्यान मे लाल रग के वस्त्र श्रेष्ठ है। सब धर्म कार्य सिद्ध करने के लिए दर्भासन (डाभ का आसन) उत्तम है।

गृहे जपफल प्रोक्त वने शतगुण भवेत्।
पुण्यारामे तथारण्ये सहस्रगुणित मतम् ॥
पर्वते दशसहस्र च नद्या लक्षमुदाहृतम्।
कोटि देवालये प्राहुरनन्त जिनसन्निधौ ॥

अर्थात् घर मे जो जाप का फल होता है, उससे सौगुना फल वन मे जाप करने से होता है। पुण्य क्षेत्र तथा जगल मे जाप करने से हजार गुना फल होता है। पर्वत पर जाप करने से दस हजार गुना, नदी के किनारे जाप करने से एक लाख गुना, देवालय (मन्दिर) मे जाप करने से करोड गुना और भगवान के समीप जाप करने से अनन्त गुना फल मिलता है।

अगुली-विधान

अगुष्ठजापो मोक्षाय, उपचारे तु तर्जनी,
मध्यमा धन-सौख्याय, शान्त्यर्थ तु अनामिका।
कनिष्ठा सर्वसिद्धिदा,
तर्जनी शत्रुनाशाय इत्यपि पाठान्तरोऽस्ति हि ॥

मोक्ष के लिए अगूठे से जाप करे, उपचार (व्यवहार) के लिए तर्जनी से, धन और सुख के लिए मध्यमा अगुली से, शान्ति के लिए अनामिका से और सब कार्यो की सिद्धि के लिए कनिष्ठा से जाप करे। कहीं-कहीं यह भी पाठान्तर है कि शत्रु-नाश के लिए तर्जनी अगुली से जाप करे।

यह धन-प्राप्ति के लिए किया जाता है।

इन तीनों जाप्यों में मानसिक जाप्य श्रेष्ठ है।

जप उंगलियों पर या माला द्वारा करना चाहिए, माला चाहे सूत की हो या स्फटिक, माला, चान्दी या मोती आदि की हो सकती है।

विघ्न-शान्ति के लिए आठ करोड़ आठ लाख आठ हजार आठ सौ आठ जप करे। कम से कम सात लाख जप करे। यह जाप नियमबद्ध होकर निरन्तर करे सूतक-पातक में भी छोड़े नहीं। विघ्न शान्ति जप के लिए दिनों का प्रमाण कर लेना चाहिए।

पुत्र-प्राप्ति, नवग्रह-शान्ति रोग निवारण आदि कार्यों के लिए एक लाख जप करे आत्मिक शान्ति के लिए सदा जप दे, दिनों का कोई नियम नहीं है। स्त्रियों का रजस्वला होने पर भी जप करते रहना चाहिए, स्नान करने के पश्चात् मन्त्र का जाप्य मन में करे, जोर से नहीं बोले और माला भी काम में न ले।

जप पूर्ण होने पर भगवान् का अभिषेक करके यथाशक्ति दान-पुण्य करे।

आसन विधान

बांस की चटाई पर बैठकर जाप करने से दरिद्र हो जाता है, पाषाण पर बैठकर जाप करने से व्याधि पीडित हो जाता है। भूमि पर जाप करने से दुःख प्राप्त होता है पट्टे पर बैठकर जाप करने से दुर्भाग्य प्राप्त होता है, घास की चटाई पर बैठकर जाप करने से अयश प्राप्त होता है, पत्तों के आसन पर बैठकर जाप करने से भ्रम हो जाता है, कथरी पर बैठकर जाप करने से मन चंचल होता है। चमड़े पर बैठकर जाप करने से ज्ञान नष्ट हो जाता है, कंबल पर बैठकर जाप करने से मान भङ्ग हो जाता है। नील रङ्ग के वस्त्र

पहनकर जप करने से बहुत दुःख हो जाता है। हरे रङ्ग के वस्त्र पहनकर जाप करने से मान भंग होता है। श्वेत वस्त्र पहनकर जाप करने से यश की वृद्धि होती है। पीले रङ्ग के वस्त्र पहनकर जाप करने से हर्ष बढ़ता है। ध्यान में लाल रंग के वस्त्र श्रेष्ठ हैं। सर्व धर्म कार्य सिद्ध करने के लिए दर्भासन (डाभ का आसन) उत्तम है।

गृहे जपफलं प्रोक्तं वने शतगुणं भवेत्।
पुण्यारामे तथारण्ये सहस्रगुणितं मतम् ॥
पर्वते दशसहस्रं च नद्यां लक्षमुदाहृतम्।
कोटि देवालये प्राहुरनन्तं जिनसन्निधौ ॥

अर्थात् घर में जो जाप का फल होता है, उससे सौगुना फल वन में जाप करने से होता है। पुण्यक्षेत्र तथा जंगल में जाप करने से हजार गुना फल होता है। पर्वत पर जाप करने से दस हजार गुना, नदी के किनारे जाप करने से एक लाख गुना, देवालय (मन्दिर) में जाप करने से करोड़ गुना और भगवान के समीप जाप करने से अनन्त गुना फल मिलता है।

अंगुली-विधान

अंगुष्ठजापो मोक्षाय, उपचारे तु तर्जनी,
मध्यमा धन-सौख्याय, शान्त्यर्थं तु अनामिका।
कनिष्ठा सर्वसिद्धिदा,
तर्जनी शत्रुनाशाय इत्यपि पाठान्तरोऽस्ति हि ॥

मोक्ष के लिए अंगूठे से जाप करे, उपचार (व्यवहार) के लिए तर्जनी से, धन और सुख के लिए मध्यमा अंगुली से, शान्ति के लिए अनामिका से और सब कार्यों की सिद्धि के लिए कनिष्ठा से जाप करे। कहीं-कहीं यह भी पाठान्तर है कि शत्रु-नाश के लिए तर्जनी अंगुली से जाप करे।

माला विधान

दुष्ट या व्यन्तर देवों के उपद्रव दूर करने, स्तम्भन विधि के लिए, रोग-शान्ति या पुत्र प्राप्ति के लिए मोती की माला या कमल बीज माला से जाप देनी चाहिए। शत्रु उच्चाटन के लिए रुद्राक्ष की माला, सर्व कार्य सिद्धि के लिए पचवर्ण के पुष्पों पर जाप देनी चाहिए। हाथ की अगुलियों पर जाप करने से दस गुना फल मिलता है। आवले की माला पर जप करने से सहस्र गुना फल मिलता है।

लाख की माला पर पाच हजार गुना, स्फटिक की माला पर दस हजार गुना, मोतियो की माला पर लाख गुना, कमल बीज पर दस लाख गुना, सोने की माला पर जाप करने से करोड गुना फल मिलता है। माला के साथ भावो की शुद्धता चाहिए।



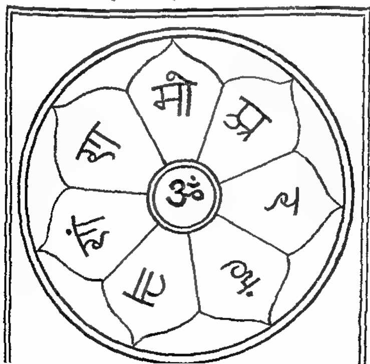
यन्त्र-मन्त्र-भाग

ॐ ह्रीं अ-सि-आ-उ-सा नम ।

पचपरमेष्ठिना कतिपयमम्प्रदायास्तत्र मवेदनाच्चाम्नाया लिग्यन्ते–पचानामादिपदाना पचपरमेष्ठिमद्भूताना जाप्ये कृते समस्तक्षुद्रोपद्रवनाग कर्मक्षयश्च । तत्र कर्णिकायामाद्यपद शेपाणि चत्वारि गुल्या गधावतविधिना मकलस्य अष्टोत्तरशतस्मरणे शाकिन्यादयो न प्रभवन्ति ।

नवकारे पर्चन यन्त्र—इस पद की जाप की विधि ।

पखडियो पर चित्त राखे डिग नही । इसके समान और जप नही है। एकाग्रचित्त से करे । सर्वकल्याण का कर्ता है, स्वर्ग मुक्ति प्राप्त कराव। वांछित फल देने वाला यह मन्त्र है। त्रिकाल जाप—सन्ध्या प्रात मध्यान्ह मे अष्टोत्तरशत करना । सुख साभाग्य प्राप्त करे । सन्तान तर, चित्त को डिगावे नही । मन वचन तन का निश्चल रक्खे, पवित्र हो कर । त्रिलोक मे यह श्रेष्ठ है । सर्वकार्यसिद्धिभवतु ।



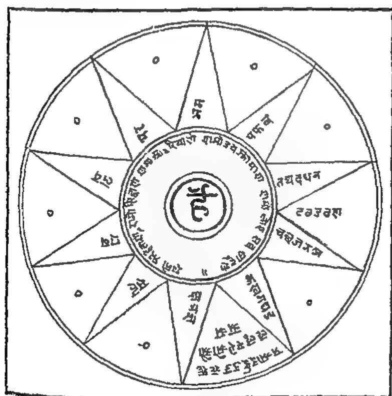
माला विधान

दुष्ट या व्य तर देवा के उपद्रव दूर करने, स्तम्भन विधि के लिए, रोग शान्ति या पुत्र-प्राप्ति क लिए मोती की माला या कमल बीज माला स जाप दनी चाहिए। शत्रु-उच्चाटन के लिए रुद्राक्ष की माला, सव काय-सिद्धि के लिए पचवर्ण के पुष्पा पर जाप देनी चाहिए। हाथ की अगुलिया पर जाप करने स दस गुना फल मिलता है। आवल की माला पर जप करने म सहस्र गुना फल मिलता है।

लाग की माला पर पाच हजार गुना, स्फटिक की माला पर दस हजार गुना, मोतिया की माला पर लाख गुना, कमल बीज पर दस लाख गुना, सोने की माला पर जाप करने से करोड गुना फल मिलता है। माला के साथ भावो की शुद्धता चाहिए।

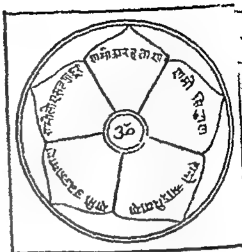


अष्टपत्र के कमल के मध्य की कर्णिका मे हकार अक्षर को ध्याना। फिर केवल हकार हीन ध्याना। उसको अर्द्धार्द्ध रेफ बिन्दु युक्त ध्याना। उसका उद्धार ऐसा है, हं इसे ध्याना। बहुरि ताके वलय देयकरि ताकी रेखा विषै पचणमोकार जा णमो अरहंताणं आदि स्थाप करि अष्टपत्र विषै क्रम सू अष्टवर्ग करि मण्डित चिन्तवन करना। यहा त्रिकोण शब्द को वलयार्थ लेना।

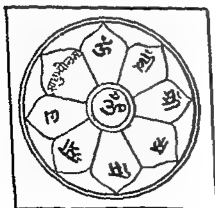


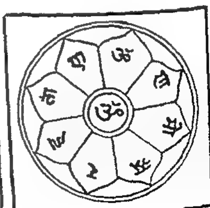
चार पाखडी के कमल के मध्य कर्णिका विषै तो अकार। बहुरि ता के बाह्य पूर्वपत्र विषै सिकार। बहुरि दक्षिण पत्र विषै आकार। बहुरि पश्चिम की पाखडी मे उकार। उत्तर की पाखडी मे साकार क्रम स स्थापित करे, फिर उसका ध्यान करे। फिर उन पूर्वोक्त

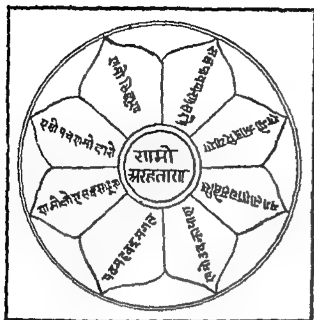
अथ ननकारमन्त्र जाप—कमल की पंखुड़ियों पर चित्त रखिए। सब काय सिद्ध हो, अनुक्रम से स्वग मुक्ति का दाता है। एकाग्र चित्त करना प्रभात, मध्याह्न संध्या समय।

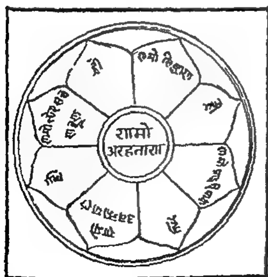


अथ दूसरी विधि जाप्य की—कमल में चित्त रखिए। ॐ ह्रीं श्री अ-सि आ-उ-सा साधुभ्यो नम। यह मन्त्र सबकाय मनवाछित कारज सौख्यदाता है। प्रात मध्याह्न संध्या करे। एकाग्र चित्त से जपना मन वचन काय से। सब काय पुत्र पौत्रादि स्वग मुक्ति प्राप्त करे।

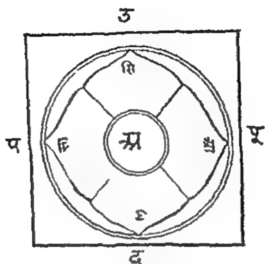





णमो
अरहताणं


णमो
अरहताणं

परमेष्ठियों के अक्षरों को अष्टदल के कमल में कर्णिका सहित पत्र में स्थापित करे।



पूर्वोक्त पंच णमोकार सहित सम्यग्दर्शनादि के चार प्रथम अक्षरों को अष्टदल-कमल के मध्य स्थापित कर ध्यान करना, उसका उदाहरण यन्त्र द्वारा लिखा जाता है। इस अष्टदल के कमल को ध्याना। सो सिर, मुख, कण्ठ, हृदय, नाभि के प्रदेश में पंचकमल स्थापित कर ध्याना। अथवा प्रथम कमल अपने भाल प्रदेश में स्थापित कर और बाकी के चार कमलों को दक्षिण में निम्न प्रदेश में स्थापित कर ध्याना।



प्रथम रक्षामन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं शिरसायाम ।

यह पढ़कर माथे चोटी के ऊपर दाहिना हाथ फेरे—

ॐ णमो सिद्धाणं—मुखावरणं ।

यह पढ़कर सारे मुंह पर हाथ फेरे ।

ॐ णमो आयरियाणं—अङ्गरक्षा ।

यह पढ़कर सारे अङ्ग पर हाथ फेरे ।

ॐ णमो उवज्झायाणं—आयुधं ।

यह पढ़कर सामने हाथ में जैसे कोई किसी को तलवार दिखावे ऐसे दिखावे ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं—मौर्वी ।

यह पढ़कर जैसे कोई किसी को धनुष चढ़ाकर यानी तीर कमान तानकर दिखावे ऐसे दोनों हाथों से दिखावे ।

एसो पंच णमोयारो—पत्तन वज्रशिला ।

यह पढ़कर अपने नीचे जमीन पर हाथ लगाकर और जगह हिलाकर जो आसन बिछा हुआ है उसके ऊपर उधर यह खयाल करे कि मैं वज्रशिला पर बैठा हूँ, नीचे से बाधा नहीं हो सकती ।

सव्वपावप्पणासणो—वज्रमयप्राकारश्चतुर्दिक्षु ।

यह पढ़कर अपने चारों तरफ अंगुली से कुण्डल-सा खींचे यह खयाल करके कि यह मेरे चारों तरफ वज्रमय कोट है ।

मंगलाणं च सव्वेसिं—खादि सवत प्रसातिका ।

यह पढ़कर यह खयाल करे कि कोट के पर खाई है ।

पढम हवइ मगलं—प्राकारोपरि वज्रमयटंकणिकम् ।
इति महारक्षा—सर्वापद्रवविद्राविणी ।

यह पढकर वह जो चारों तरफ कुण्डली खींचकर वज्रमय कोट रचा है उसके ऊपर चारों तरफ चुटकी बजावे । इसका मतलब है कि जो उपद्रव करने वाले हैं वे सब चले जावें । मैं वज्रमयी कोट के अन्दर व वज्रशिला पर बैठा हूँ । इस रक्षामन्त्र के जपने से जाप करते हुए के ध्यान में साँप, शेर, बिच्छू, व्यन्तर, देव, देवी आदि कोई भी विघ्न नहीं कर सकते ।

मन्त्र सिद्ध करने के समय जो देव-देवी डरावना रूप धारण कर आवेगा तो भी उस वज्रमयी कोट के अन्दर नहीं आ सकेगा । अगर शेर वगैरह पास से गुजरेगा तो भी आप तो उसे देख सकेंगे किन्तु वह जप करने वाले को मायामय वज्रकोट की आट होने से नहीं देख सकेगा । जपने वाले को अगर कोई तीर-तलवार वगैरह से घात करेगा तो उस स्थान का रक्षक देव उसको वहीं कील देगा । वह इस रक्षामन्त्र को जपने वाले का घात नहीं कर सकेगा । अनेक मुनि-श्रावकों के घातक इस रक्षामन्त्र के स्मरण से कीले गये हैं, और उनकी रक्षा हुई है ।

नोट—जो बगैर रक्षामन्त्र के मन्त्र सिद्ध करने बैठते हैं वे या तो व्यन्तरा आदि की विक्रिया से डर कर मन्त्र जपना छोड़ देते हैं या पागल हो जाते हैं । इसलिए मन्त्र साधन करने से पहले रक्षा का मन्त्र जप लेना चाहिए । इस मन्त्र में हाथ फेरने की क्रिया सिर्फ गृहस्थ के वास्ते है । मुनि के तो मन से ही संकल्प होता है ।

द्वितीय रक्षामन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं ह्रां हृदयं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं शिरो रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

प्रथम रक्षामन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं शिखायाम् ।

यह पढकर सारी चोटी के ऊपर अपना हाथ फेरे—

ॐ णमो सिद्धाणं—मुखावरणं ।

यह पढकर सारे मुख पर हाथ फेरे ।

ॐ णमो आयरियाणं—अङ्गरक्षा ।

यह पढकर सारे अङ्ग पर हाथ फेरे ।

ॐ णमो उवज्झायाणं—आयुधं ।

यह पढकर सामने हाथ से जैसे कोई किसी को तलवार दिखावे ऐसे दिखावे ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं—मौर्वी ।

यह पढकर जैसे कोई किसी को धनुष साधकर यानी तीरकमान तानकर दिखावे ऐसे दोनों हाथों से दिखावे ।

एसो पंच णमोयारो—वज्रशिला ।

यह पढकर अपने नीचे जमीन पर हाथ लगाकर और जरा हिल कर जो आसन बिछा हुआ है उसके इधर उधर यह ख्याल करे कि मैं वज्रशिला पर बैठा हूँ, नीचे से बाधा नहीं हो सकती ।

सव्वपावप्पणासणो—वज्रमयप्राकाराश्चतुर्दिक्षु ।

यह पढकर अपने चारों तरफ अंगुली से कुण्डल-सा खींचे यह खयाल करके कि यह मेरे चारों तरफ वज्रमय कोट है ।

मंगलाणं च सव्वेसिं—शिखादि सर्वत प्रखातिका ।

यह पढकर यह खयाल करे कि कोट के परे खाई है ।

पटम ह्वइं मगल—प्राकारोपरि वज्रमयटकरिणकम ।
इति महारक्षा—मर्वापद्रवविद्राविग्गी ।

यह पटकर वह जो चारा नरफ कुण्डली खींचकर वज्रमय कोट ग्चा ह उमके ऊपर चारों तरफ चुटकी बजाव । इमका मतलब ह कि जो उपद्रव करन वाले हैं वे मब चन जाव । मैं वज्रमयी कोट के अन्दर व वज्रशिला पर बैठा हूँ । इस र ग्रामन्त्र के जपने से जाप करते हुए क ध्यान मे माप, शेर, बिच्छू व्यन्तर, दव, देवी आदि कोई भी विघ्न नहीं कर सकते ।

मन्त्र मिद्ध कग्ने के ममय जो दव-दवी डगवना रूप धारण कर आवेगा तो भी उस वज्रमयी कोट के अन्दर नही आ मकेगा । अगर गर वगैरह पाम से गुजरेगा तो भी आप तो उम देख मकेंगे किन्तु वह जप करने वाले को मायामय वज्रकोट की ओट होने से नहीं देख सकेगा । जपने वाले का अगर कोई तीर-तलवार वगैरह से घात करेगा तो उस स्थान का रक्षक दव उमको वही कील देगा । वह इस रक्षामन्त्र को जपने वाले का घात नही कर सकेगा । अनेक मुनि-नायका के घातक इम रक्षामन्त्र के स्मरण से कीले गये ह, और उनकी रक्षा हुई है ।

नोट—जो बगैर रक्षामन्त्र के मन्त्र मिद्ध करने बैठते हैं वे या तो व्यन्तरो आदि की विक्रिया मे डर कर मन्त्र जपना छोड देते हैं या पागल हो जाते ह । इसलिए मन्त्र माधन करने मे पहले रक्षा का मन्त्र जप लेना चाहिए । इस मन्त्र मे हाथ फेरने की क्रिया सिर्फ गृहस्थ के वास्ते है । मुनि के तो मन मे ही सकल्प होता ह ।

द्वितीय रक्षामन्त्र

ॐ णमो अरहताण ह्रां हृदय रक्ष रक्ष हु फट् स्वाहा
ॐ णमो सिद्धाण ह्रीं शिरो रक्ष रक्ष हु फट् स्वाहा

ॐ णमो आयरियाण ह्रूं शिखा रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

ॐ णमो उवज्झायाण ह्रौं एहि एहि भगवति वज्रकवच वज्रिणि रक्ष रक्ष हुं फट स्वाहा।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूण ह्रः क्षिप्र साधय साधय वज्रहस्त शूलिनि, दुष्टान् रक्ष रक्ष हु फट स्वाहा।

जब कभी अचानक कोई अपने ऊपर उपद्रव आ जाए, यात्रा, सफर म जाते, सोते वठते या काम करते समय मन ही मन स्मरण कर, यह मन्त्र बार बार पढना शुरू कर दें। सब उपद्रव नष्ट हो जाते, उपसर्ग दूर हो, खतरे से जान माल बचे।

तृतीय रक्षामन्त्र

ॐ णमो अरहताण णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण। एसो पच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो। मगलाण च सव्वेसि पढम हवइ मगलम्।

ॐ ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा।

चतुर्थ रक्षामन्त्र

ॐ णमो अरहताण नाभौ—यह पद नाभि म धारिए

ॐ णमो सिद्धाण हृदि—यह पद हृदय म धारिए

ॐ णमो आयरियाण कण्ठे—यह पद कण्ठ म धारिए

ॐ णमो उवज्झायाण मुखे—यह पद मुख म धारिए

ॐ णमो लोए सव्वसाहूण मस्तके—यह पद मस्तक मे धारिए

सर्वांगे मा रक्ष रक्ष हिल हिल मातगिनि स्वाहा

यह भी रक्षामन्त्र ह। जो अङ्ग जिसके सम्मुख लिखा है, वह मन्त्र का चरण पढकर उस अङ्ग का मन मे चिन्तन करे जैसे वह

न नहां म रखा हो ऐसा समझे। यह मन्त्र इस प्रकार १०८ बार पढ़, रक्षा होगी।

रोगनिवारण मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ णमो भगवदो सुहदे वयाणवारसंग एव यणं। जगणीये सरम्सह ए मव्ववाइणि मवरगवग्गे।

ॐ अवतर अवतर देवी मम शरीर प्रविश पुद्ध तस्स पविस सत्व जगमय हरीयं।

अरहंत सिरि सिरिए स्वाहा।

यह मन्त्र १०८ वार लिखकर रोगी के हाथ मे रखे, सर्व रोग जाए।

मस्तक का दर्द दूर करने का मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ णमो णाणाय ॐ णमो दसणाय ॐ णमो चरित्ताय ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यकरी ह्रीं स्वाहा।

विधि—एक कटोरी मे जल लेकर यह मन्त्र उस जल पर पढ़कर उस जल को जिसके मस्तक मे पीडा हो, आधाशीशी हो उसे पिलावे तो उसके मस्तक के सबरोग जाये।

ताप निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।

ॐ ह्री णमो आयरियाण—

ॐ ह्री णमो सिद्धाण ।

ॐ ह्री णमो अरहताण ।

जब यह मन्त्र पढे पाचवे चरण के अन्त मे "ऐं ह्री" पढता जाव एक सफेद शुद्ध चद्दर लेकर उसके एक कोन पर यह मन्त्र पढता जाव और गाठ दन की तरह कोण का माडता जावे, १०८ बार उस काण पर मन्त्र पढकर उसम गाठ देव वह चद्दर रोगी को उढा दव। गाठ शिर की तरफ रहे रोगी का बुखार उतर जिसका दूसर या चाथे दिन बुखार आता है। इनसे हर प्रका का बुखार जाता है। जब तक बुखार न हटे, रोगी इस चद्दर का ओढ़ े।

बन्दीखाना निवारण मन्त्र

ॐ णमो अरहताण ह्म्ल्व्यू नम ।

ॐ णमो सिद्धाण ह्म्ल्व्यू नम ।

ॐ णमो आयरियाण ह्म्ल्व्यू नम ।

ॐ णमो उवज्झायाण ह्म्ल्व्यू नम ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूण ह्म्ल्व्यू नम ।

(यहा नाम लकर) अमुकस्य बदिमाक्ष कुरु कुरु स्वाहा ।

यह प्रयोग है—जिस किसी का कोई कुटुम्बी या रिश्तदार या मित्र हवालात म हो जाव उसके वास्त उसका कुटुम्बी यह प्रयाग करे, एक पाठा कागज पर श्री पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा माडकर (लिखकर) पाच सा फूल लकर यह मन्त्र पढता जाव। और एक फूल उसके ऊपर चढाता जाव। और उस पर जहा फूल चढाया उस पाद पर ही अगुली ठोकता जाव, ऐसे ५०० बार मन्त्र पढ। अमुक की जगह मन्त्र मे उसका नाम लिया जाय जिसे बन्दीखान मे रखा हुआ

है। इधर तो यह कार्यवाही करे, उधर उनकी अपील वगैरह जैसी कार्यवाही कानून की हो सो करे। बन्दीखान मे से कैद से फौरन छूटे। यह मन्त्र उस पाठे पर जिनराम की प्रतिमा के सम्मुख खड़े होकर पढे और खड़ा होकर ही फूल चढावे, सब काम खड़ा होकर ही करे, इससे बन्दी मुक्त होय, स्वप्न मे शुभाशुभ कहे।

नोट—यह क्रिया गृहस्थ के वास्ते है मुनि के वास्ते इसके स्मरण मात्र से ही बन्दीखाना दूर हो, अपने आप ही बन्दीखाने के किवाड़ खुलें और जजीर टूटे।

बन्दीखाना निवारण द्वितीय मन्त्र

णहसाव्वसएलो मोणं।

णयाज्भावउ मोणं।

णयारिइग्रा मोणं।

णद्धासि मोणं।

णताहरग्र मोणं।

विधि—चौथ, चौदश या शनिश्चर को तूल की चुटकी लेकर मन्त्र पढता हुआ तीन बार फूक कर जिस पर डाले सो वश मे होय। यह मन्त्र नवकारमन्त्र के ३५ अक्षर उल्टे लिखने से बनता है, जब समय मिले और जितनी देर कर सके, इस मन्त्र का जाप करे। नित्य सात दिन तथा ग्यारह दिन तथा २१ दिन तक जपे, अगर हो सके तो इसका सवालक्ष जप करे। इससे अधिक जितने हो सके करे, तो तुरन्त ही बन्दी छूट जावे, कैद मे हो वह तो यह मन्त्र जपे और उसके हितकारी अदालत मे मुकदमा की अपील वगैरह करे तो तुरन्त छूटे।

ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं—

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ।

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं ।

जब यह मन्त्र पढ़े पांचवे चरण के अंत में ... एक सफेद शुद्ध चद्दर रखकर उसके ... यह ... और गाठ देने का नम्र कारण का ... जाव, १०८ ... पर मन्त्र पढ़कर उसमें गाठ दवे वह चद्दर रोगी को उढ़ा ... शिर की तरफ रहे ... जिसको दूसरे या ... बुखार आता है। इससे हर प्रकार का बुखार जाता है। जब ... न हटे, रोगी इस चद्दर को ओढ़े ... ।

बन्दीग्रह निवारण मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं ... नमः ।

ॐ णमो सिद्धाणं ... नमः ।

ॐ णमो आयरियाणं ... नमः ।

ॐ णमो उवज्झायाणं ... नमः ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ... नमः ।

(यहां नाम लेकर) अमुकस्य बन्दिमोक्ष कुरु कुरु स्वाहा ।

यह प्रयोग है—जिस किसी का कोई कुटुम्बी या रिश्तेदार या मित्र हवालात में हो जावे उसके वास्ते उसका कुटुम्बी यह प्रयोग करे, एक पाटा कागज पर श्री पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा मांडकर (लिखकर) पांच सौ फूल लेकर यह मन्त्र पढ़ता जावे। और एक फूल उसके ऊपर चढाता जाव। और उस पर जहां फूल चढ़ाया उस पाटे पर ही अंगुली ठोकता जाय, ऐसे ५०० बार मन्त्र पढ़े। अमुक की जगह मन्त्र में उसका नाम लिया करे जिसे बन्दीखाने में रखा हुआ

है। इधर तो यह कार्यवाही करे, उधर उसकी अपील वगैरह जैसी कायवाही कानून की हो सो करे। वन्दीखाने मे से कैद से फौरन छूटे। यह मन्त्र उस पाठे पर विनाम की प्रतिमा के सम्मुख खडे होकर पढे खडा होकर ही फूल चढावे, सब काम खडा होकर ही करे, इससे सदा मुक्त होय, स्वप्न मे शुभाशुभ कहे।

नोट—यह क्रिया ग्रहस्थ के वास्ते है, मुनि के वास्ते इसके स्मरण मात्र से ही वन्दीखाना दूर हो, अपने आप ही वन्दीखाने के किवाड खुलें और जजीर टूटे।

वन्दीखाना निवारण द्वितीय मन्त्र

ण्हूसाव्वमएला मोणं।

एणाज्झावउ मोणं।

णंयारिआ मोणं।

णद्धसि मोणं।

णंताहरअ मोणं।

विधि—चौथ, चौदस या शनिश्चर को धूल की चुटकी लेकर मन्त्र पढ़ता हुआ तीन वार फूक कर जिस पर डाले सो वश मे होय। यह नवकारमन्त्र के ३५ अक्षर उल्टे लिखने से बनता है, जब समय मिले तब जितनी देर कर सके, इस मन्त्र का जाप करे। नित्य सात दिन या ग्यारह दिन तथा २१ दिन तक जपे, अगर हो सके तो इससे अधिक जप करे। इससे अधिक जितने हो सके करे, तो तुरन्त ही ... अब, कैद म हो वह तो यह मन्त्र जपे और उसके हित-... अदालत में मुकदमा की अपील वगैरह करे तो तुरन्त

सताव तो यह मन्त्र १०८ वार मुट्ठी बाध पढकर उस भाडे। सुवह शाम दोनो समय भाडा करे तो भूतादिक जाय, मानक ती अच्छे हो जावें।

नोट—इस मन्त्र के नीचे के चरण म ह्ली दुष्टान् ठ ठ ठ में दुष्टान् के स्थान पर दुश्मन का नाम जानता हो तो ले या भूतादिक कहे।

वादजीतन मन्त्र

ॐ ह स ॐ मह ग आ अ सि आ-उ सा नम ।

पहले यह मन्त्र पढकर एक लक्ष या सवा लक्ष जप सिद्ध कर लेवे, फिर जहा वादविवाद म जाना हो वहा यह मन्त्र २१ वार पढकर जाव तो वादविवाद म याप जीत जय पावे।

विद्याप्राप्ति वादजीतन मन्त्र

ॐ ह्री अ सि-आ उ-सा नमो अर्ह वादिनि सत्यवादिनि वाग्वादिनि वद वद मम वक्त्रे व्यक्तवाचया सत्य-ब्रूहि सत्य ब्रूहि सत्य वद सत्य वद अस्खलितप्रचार सदैव मनुजा सुरसदसि ह्री अस ह अ सि आ-उ सा नम ।

विधि—यह मन्त्र एक लक्ष वार जपिए तो सब विद्या आवे और जहा वादविवाद करना पड जाए तो वहा वाद के झगडे में बोल ऊपर होय, जीत पावे।

परदेश लाभ मन्त्र

ॐ णमो अरहताण ॐ णमो भगवइए चदायई एस तद्ठाए गिर मोर मोर हुलु हुलु चुलु चुलु मयूरवाहिनिए स्वाहा।

जब किसी परदेश में रोजगार के वास्ते धन प्राप्ति के लिए जावे तो पहले श्रीपार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा के सामने यह मन्त्र दस

हजार जप । फिर श्रेष्ठ मुहूर्त मे गमन करे । जिस दिन जिस समय गमन करने लगे इस मन्त्र को १०८ वार जपे । जब उस नगर मे पहुँचे तो यह मन्त्र १०८ वार जपे । जिस नगर मे जावे रोजगार करे, लाभ हो । महान् धन मिले ।

नोट—जिस नगर मे जावे रोजगार के लिए, वहा मगलवार के दिन प्रवेश न करे । मगल के दिन प्रवेश करे तो हानि हो । घर की पूजी खोकर कर्जदार हो दिवाला निकाले, काम वन्द हो ।

शुभाशुभ कहन मन्त्र, वाग्बल मन्त्र

ॐ ह्री अर्हं ह्री क्ष्वी नम स्वाहा ।

किसी मुकदमे मे या फिर किसी फिकर मे या अन्देशे मे या वीमारी मे, रात मे सारे मस्तक पर चन्दन लगाकर चन्दन के सूख जाने के बाद १०८ वार यह मन्त्र पढकर सो जावे । जैसा कुछ होनहार होगा स्वप्न द्वारा मालूम होगा । बृहस्पति से ११००० जाप करे ।

मन-चिन्ता-कार्य-सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ-सि-आ-उ-सा नम स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र से मन-चिन्ता कार्य सिद्ध होय । अर्थात् जब यह मन्त्र जपे आगे धूप जलाकर रख ले । जिस कार्य की सिद्धि के वास्ते जपे, मन मे उसे रखे कि फलाने कार्य की सिद्धि के वास्ते यह जपता हूँ । यदि कोई इस मन्त्र का सवा लाख जप करे तो मनचिन्ते कार्य होय, सब कार्य की सिद्धि होवे ।

द्रव्यप्राप्ति मन्त्र

अरहन्त सिद्ध आइरिय उवज्झाय सव्व साहूण ।

विधि—इस मन्त्र का सवा लाख जप विधिपूवक करे तो द्रव्य-प्राप्ति हो।

लक्ष्मी प्राप्ति यशकरण, रोग निवारण मन्त्र

ॐ णमो अरहन्ताण, ॐ णमो सिद्धाण, ॐ णमो आयरियाण, ॐ णमो उवज्झायाण, ॐ णमो लोए सव्वसाहूण। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नम स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का जप करने से लक्ष्मी बढ़े (वृद्धि को प्राप्त हो) लोक में यश हो, सब प्रकार के रोग जाएं।

नोट—सवालक्ष जप विधिपूवक जपने से कार्य पूर्ण सिद्ध होता है। फिर जिस मर्यादा से जपेगा उतनी मदद देगा।

सर्व सिद्धि मन्त्र

ॐ अ सि आ उ सा नम।

विधि—इस महामन्त्र का सवालक्ष जप करने से सवकाय सिद्धि होती है।

द्रव्य लाभ, सर्वसिद्धिदायक मन्त्र

ॐ अरहताण सिद्धाण आयरियाण उवज्झायाण साहूण मम रिद्धि वृद्धि समीहित कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—स्नान करने के पश्चात् पवित्र होकर प्रभात मध्यान्ह अपराह्न तीनो समय इस मन्त्र का जाप करे। द्रव्यलाभ हो, सब सिद्धि हो।

नोट—२१ दिन तक तीनो समय के सामायिक के वक्त निर्भय होकर दो-दो घडी जाप्य करे।

पुत्र-सम्पदा प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्री श्री ह्री (ह्) क्ली अ-सि-आ-उ-सा चुलु चुलु हुलु हुलु मुलु मुलु (घुलु घुलु कुलु कुलु सुलु मुलु) इच्छिय (अक्षत) मे कुरु कुरु स्वाहा।

त्रिभुवनस्वामिनी विद्या।

विधि—जब यह मन्त्र जपने बैठे तो आगे धूप जलाकर रख लेवें, और ये मन्त्र २८ हजार फूलो पर एक फूल पर एक मन्त्र जपता जावे। इस प्रकार पूरा जपे। घर मे पुत्र की प्राप्ति हो और वंश चले।

नोट—धन, दौलत, स्त्री, पुत्र, मकान, सर्वसम्पदा की प्राप्ति इस मन्त्र के जाप मे होवे।

राजा तथा हाकिम वशीकरण मन्त्र

ॐ ह्री णमो अरहन्ताण। ॐ ह्री णमो सिद्धाण। ॐ ह्री णमो आयरियाण। ॐ ह्री णमो उवज्झायाण। ॐ ह्री णमो लोए सव्व-साहूण। अमुक मम वश्य कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—जब किसी राजा या हाकिम या बडे आदमी को अपने वश में करना हो तो याने अमुक मेरे पर किसी तरह मेहरबान हो तो शिर पर पगडी वा दुपट्टा जो बाधता हो यह मन्त्र २१ वार पढकर उसके पल्ले मे गाठ देवे। जब मन्त्र पढना शुरू करे, तब पल्ला हाथ मे लेवे २१ वार यह मन्त्र पढकर गाठ दे। सिर पर उस वस्त्र को बाध कर उसके पास जावे तो वह मेहरबानी करे, मित्र हो। जब मन्त्र पढे अमुक की जगह उसका नाम लेवे। राजा प्रजा सर्ववश्यम्।

वशीकरण मन्त्र

ॐ ह्री णमो अरहताण। अर (आरि) अर (अरि) सिलोसिलि

अमुक मोह्य मोह्य स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र से चावल तथा फूल पर मन्त्र पढकर जिसके शिर पर रखे वह वश मे हो । १०८ वार स्मरण करने से लाभ होता है ।

सर्पभय निवारण मन्त्र

ॐ अर्ह अ सि-आ-उ सा अनाहतजयि अर्ह नम ।

विधि—यह मन्त्र नित्य प्रति एक ३ गुणीजे । वार १०८ दिवाली दिन गुणीजे । जीवनपर्यन्त सर्पभय न हो ।

दुष्ट निवारण मन्त्र

ॐ अर्ह अमुक दुष्ट साधय साधय अ सि-आ-उ-सा नम ।

विधि—इस मन्त्र को २१ दिन तक जप १०८ वार शत्रु ऊपर पढे, क्षय होय ।

लक्ष्मी लाभकरावन मन्त्र

ॐ ह्री ह्रू णमो अरहताण ह्रू नम ।

विधि—१०८ वार पढे लक्ष्मी लाभ हो ।

रोगापहार मन्त्र

ॐ णमो सव्वो सहि पत्ताण ।

ॐ णमो खेलो सहि पत्ताण ।

ॐ णमो सल्लो सहि पत्ताण ।

ॐ णमो सव्वो सहि पत्ताण स्वाहा ।

ॐ ऐ ह्री श्री क्ली क्लो अर्ह नम ।

विधि—१०८ वार पढ, सवरोग जाय ।

व्रणादिकनाशन मन्त्र

ॐ णमो जिणाण जावियाण। यूसोणि अ (अ) णस (ए) ण (ण) वण (मक्ववाराणवण) मा पच्चत मा फुट्ट (यउधउमाफुट्ट) ॐ ठ ठ ठ स्वाहा।

विधि—रास पढकर व्रणादिक पर लगाव, नमाप्ति हो।

आकाशगमन मन्त्र

ॐ णमो आगासगमणिज्जो स्वाहा।

विधि—२५० दिन अलूणा भोजन काजी सता करीने। २८६ वार मन्त्र पढ वक्त के ऊपर याद करे। आकाशगमन होय।

आकाशगमन द्वितीय मन्त्र

ॐ णमो अरहताण ॐ णमो सिद्धाण ॐ णमो आयरियाण ॐ णमो उवज्झायाण ॐ णमो लोए सव्वसाहूण।

ॐ णमो भगवीय मु प्रदेवयानन्तमस्य स जननीयन जननी यस्य स्सइ येसववाईनेसवनेप्रवत्तर प्रवत्तर नेत्र प सगेर पवित्तरन जनम पहरये अर्हन्तशरीर स्वाहा।

विधि—ये मन्त्र वार १०८ घडी मनाइत में राखिजे। ये को देखिजे।

व्यापारे लाभ व जयादि मन्त्र

ॐ ह्री श्री अर्ह अ-सि-आ-उ-सा अप्रतिचक्रे ह्रीं अर्ह नमः।

विधि—यह मन्त्र दिन में ३ वार ... १०८ वार ... व्यापार मे लाभ हो, सवत्र जय पावे।

चोर दिखाई न देने अर्थात् चोरभयनाशने का मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं आभिणी मोहणी मोहय मोहय स्वाहा।

विधि—२१ बार स्मरण कर गांव में प्रवेश करते हुए। अभिमन्त्र क्षारवृक्षा ह्यन लाभा रास्ते में जाते हुए। इस मन्त्र का स्मरण करने से चोर का दर्शन भी नहीं होता।

वाञ्छितार्थ फल सिद्धिकारक मन्त्र

ॐ ह्रीं अ सि-आ-उ-सा नमः। (महामन्त्र)

अ-सि आ उ-सा नमः। (मूलमन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हत उत्पत उत्पत स्वाहा। (त्रिभुवनस्वामिनि)

विधि—स्मरण करने से वाञ्छितार्थ सिद्ध होता है।

ह्रूं ह्रूं ह्रूं
ह्रूं
ह्रूं ह्रौं ह्रौं ह्रूं
दे व द त्त
ह्रौं ह्रौं
ह्रूं ह्रूं
ह्रूं
ह्रूं ह्रूं ह्रूं

(वन्दीमोक्षार्थ वश्यार्थ च यन्त्रम्)

नवग्रह अरिष्ट निवारक जाप

सूर्य मगल—ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण ।

चन्द्रमा-शुक्र—ॐ ह्रीं णमो अरहताण ।

बुध-बृहस्पति—ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाण ।

शनि-राहु-केतु—ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूण ।

प्रत्येक ग्रह की शान्ति के लिए उपरोक्त मन्त्र के दस हजार जप करना चाहिए । और सबग्रहो की शान्ति के लिए ॐ ह्रीं बीजाक्षर पहले लगाकर पच नमस्कार मन्त्र के दस हजार जप करना चाहिए ।

एते पचपरमेष्ठिमहामन्त्रप्रयोगा ॐ नमो अरिहंत भगवन्त बाहु-बलिस्स पण्हसवणस्स मलेणिम्मल नाणपयासेणि ॐ णमो सव्व भासइ अरिहा सव्व भासइ केवली एण्ण सव्ववयणेण सव्व सव्व हाइ मे स्वाहा । आत्मान शुचि कृत्य बाहुयुग्म सम्पूज्य कायोत्सर्गेन शुभाशुभ वक्ति । इति

ॐ णमो अरहताण ह्रां स्वाहा ।

ॐ णमो सिद्धाण ह्रीं स्वाहा ।

ॐ णमो आइरियाण ह्रू स्वाहा ।

ॐ णमो उवज्झायाण ह्रौं स्वाहा ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूण ह्र स्वाहा ।

विधि—सुगन्धित फूलो से १०८ वार जप कर, उस कपडे मे फोडा-फुन्सी पर घेरा देने से तथा गले मे पहनने से फोडा न पक कर बैठ जाता है ।

ॐ वार सुवरे अ-सि-आ-उ-सा नम ।

विधि—त्रिकाल १०८ वार जपने से विभव करता है ।

जाप्य मन्त्र

आवश्यक नोट—माला [illegible] या अन्न दाने होने

मन्तिम जो इन तीना म स है उससे जप आरम्भ करो। जपते हुए अन्दर चल आओ। जब सारे १०८ जप चुको तब उन आखिर के तीन दाना को माला के अन्त में भी जपते हुए उसी आखिर के दाने पर आओ। जिससे माला जपनी शुरू की थी। यह एक माला हुई। इन तीना दाना के बारे में किसी आचार्य का मत ऐसा भी है कि ये तीन दाने रत्नत्रय के सूचक हैं। इसलिए इन तीना दाना पर सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राय नम ऐसा मन्त्र पढकर माला समाप्त (पूर्ण) करनी चाहिए।

प्रथम मन्त्र--ॐ णमो अरहन्ताण, णमो सिद्धाण, णमो आइरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण।

दूसरा मन्त्र—अरहन्त सिद्ध आइरिया उवज्झाया साहू।

तीसरा मन्त्र—अरहन्त सिद्ध।

चौथा मन्त्र—ॐ ह्रीं अ सि आ-उ-सा।

पाचवा मन्त्र—ॐ नम सिद्धेभ्य।

छठा मन्त्र—ॐ ह्रीं।

सातवा मन्त्र—ॐ।

अनादिनिधन मन्त्र—ॐ णमो अरहन्ताण, णमो सिद्धाण, णमो आइरियाण, णमो उवज्झायाण,, णमो लोए सव्वसाहूण।

चत्तारि मगल—अरहन्ता मगल, सिद्धा मगल, साहू मगल, केवलिपण्णत्तो धम्मो मगल।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरण पव्वज्जामि—अरहन्त सरण पव्वज्जामि, सिद्धे सरण पव्वज्जामि, साहू सरण पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्त धम्म सरण पव्वज्जामि। ह्रीं सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

१०८ जाप्यम्

ॐ भू ॐ सत्य ॐ स्व ॐ मह ॐ जन ॐ तप ॐ सत्य।

ॐ भूर्भुव स्व अ-सि-आ-उ सा नम मम ऋद्धि वृद्धि कुरु-कुरु स्वाहा।
ॐ नमो अर्हद्भ्य स्वाहा, ॐ सिद्धेभ्य स्वाहा, ॐ सूर्येभ्य स्वाहा।
ॐ पाठकेभ्य स्वाहा। ॐ सवसाधुभ्य स्वाहा। ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ-सि-आ-उ-सा नम स्वाहा। मम भवशान्ति कुरु कुरु स्वाहा। अरहंत प्रमाण सम करोमि स्वाहा।

ॐ णमो अरहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आइरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण ह्रौं शांति कुरु कुरु स्वाहा (नम)

ॐ ह्री श्री अ-सि-आ-उ-सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताण ह्रीं नम।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र स्वाहा।

ॐ ह्री अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधुभ्य नम।

ॐ ह्रा ह्रीस्वाहा।

विधि—१०८ वार पढकर छाती को छीट दवे।

ॐ ह्री अर्हं नम। या ॐ ह्री श्री अर्हं नम।

सूर्य मन्त्र का खुलासा

किसी काम के लिए ८००० जाप करने से फारन काम होता है। खास कर कैद वगैरा के मामले मे आजमाया हुआ है।

ॐ ह्री अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताण।

ॐ ह्री अर्हं णमो खिप्पोसहिपत्ताण।

विधि—दोनो मे से कोई एक ऋद्धि रोज जपे। सवकार्य सिद्ध हो।

ॐ ह्री क्ली श्री ऐं क्रो ह्री णमो अरहंताण नम

ॐ ह्री अर्हं णमो अरहंताण णमो जिणाण ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रा ह्र अ-सि-आ-उ-सा अप्रतिचक्रे फट् विपट विचक्राय झ्रा झ्रौ स्वाहा।

ॐ ह्री अर्हं णमो चरणाण। ॐ श्रा श्री श्रू श्र ठ ठ स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र की नित्य १ माला जपे तो दलाली घनी होव। धन घना होवे। राजद्वार जो ... वो दुश्मन झूठा पडे, पुत्र की प्राप्ति होवे। वदन मे ताकत आवे, ... परिवार बढे, वुद्धि वढे, स

बदे, जहा जाव तहा ग्रादर सम्मान पाव। मुठ कर तो भी नजीक न ग्राव, जाप करे जितने वार धूप खेवे, पद्मासन होकर करना। नामाग्र दृष्टि लगाकर जाप करना चाहिए।

शान्ति मन्त्र

ॐ णमो ग्ररहताण केवलिपण्णत्तो धम्मो मरण पव्वज्जामि ह्रीं शान्ति कुरु कुरु स्वाहा। श्री ग्रर्हं नम ।

(१) बिजौरा ग्रथवा नारियल १०८ वार इस मन्त्र स म ग्रकर बहत्तर दिना तक वन्ध्या का खिलाव तो पुत्र हो।

(२) नय कपडे मन्त्र से मन्त्र कर रोगी को उढाव ता दापज्वर जाय।

ॐ सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यो सिद्धिदायकेभ्यो नम ।

विधि—जाप १०८ ग्रष्टमी चतुदशी को पढकर धूप देना।

बाबा दुलीचन्दजी कृत मन्त्र

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण, णमो ग्रहन्ताण, णमो ग्राचार्याण। णमो उवज्झायाण। णमो साहूण, णमो धर्मभ्यो नम । ॐ ह्रीं णमो ग्रहन्ताण ग्रारे ग्रभिनि मोहिनी मोहय मोहय स्वाहा।

विधि—नित्य १०८ जपे। ग्रामप्रवशे ककर ७ मन्त्र २१ क्षीरवृक्ष हन्यते लाभा भवति। प्रथम मन्त्र जप दीप धूप म सिद्ध करना। पीछे ग्रपने काम म लावना।

सवशान्ति मन्त्र

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रा ह्र ग्र सि-ग्रा-उ-सा सवशा ति तुष्टि पुष्टि कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं ग्रर्ह नम । क्ली सर्वारोग्य कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—१०८ वार जाप गुरुवार से ग्रारम्भ कर। पूर्वदिशा को मुख करके बैठे। वप से प्रारम्भ कर ११००० जाप कर।

— समाप्त —

sts industrialists exper members of the Government will submit its report within riod of three months Later the Minister and the industries de will scrutinise it before its to the Planning Commis-

member of the Planning Com

Mr Hussain said that keeping in view the vast size of the State it has been observed that a homogenous plan for the State did not suffice Hence three sub sectoral plans would be formulated for the east west and hill areas of the State keeping in view the requirements and the raw material available

Sharad Pawar is now ...

...Opposition members in ... atening the Speaker in his chamber yesterday was passed by the Assembly overlooking the Opposition protest

Today was the last day of the monsoon session and as the question hour commenced the Opposition leader K Karunakaran and others from the Opposition front stood up wanting to raise an issue of utmost importance

But the Speaker took the firm stand that nothing could be permitted to be raised during the question hour The Opposition attempt was to refer to a reported statement of the Speaker that some Opposition members threatened him in his chamber yesterday after he referred to the Privilege Committee an issue of privileges against Mr K M Mani leader of the Kerala Congress-M group in the Assembly

As the Speaker stuck to his stand the Opposition members began thumping their desks and raised slogans demanding that the Speaker do justice

Before the Speaker announced the adjournment of the House sine die Chief Minister E K Nayanar on being called moved a censure motion condemning the "threatening" of the Speaker by Opposition members led by Mr K M Mani and Mr P Seethi Hajee (Muslim League) The House adopted the motion amidst the din

The scheduled discussions on the recent increase in electricity tariff and on the Sarkaria Commission report did not come off because of the abrupt adjournment

Mr K Karunakaran Mr Mani and

go on for ever

Basus said that Mr Buta Singh telephoned him yesterday and informed him of the areas the GNLF had ...nded in its talks with the Centre ...uld let him know the details la the discussions with GNLF Pres

tion to the inclusion of areas in ...guri to the Hill Council The ... had postponed the bandh call in Siliguri on the request of ... Minister Mr Basu would explain ... them the details of the Hill Council

ent HP docs flay 'Hospital Bill'